देवली के नज़रबन्द

लेखक :—

श्रीमोहनलाल 'रंक'

(भूतपूर्व नज़रबन्द देवली कैंप)

प्रकाशक :—
सुदर्शन ग्रन्थमाला,
मेरठ

मूल्य एक रुपया

मुख्य विक्रेता :—
नवशक्ति साहित्य सदन
१२ 'तीरगरान'
मेरठ

मुद्रक :—
सुदर्शन प्रेस
मेरठ

समर्पण

जिन्होंने अपनी अद्भुत कर्मठता, कार्यकुशलता एवं अथक

परिश्रम द्वारा आज़ादी के पौधे को सींचकर

भारत को

दासता की श्रृङ्खला से मुक्त करने के

लिये

अगस्त क्रांति का भैरव शंख

फूंका

उन्हीं क्रांति-सृष्टा भारत के लेनिन

श्री जयप्रकाश नारायण

के

कर कमलों में

सादर

उपहार—

मेरी ओर से

मैं २० जून सन् १९४१ ई० को भारत रक्षा विधान में गिरफ्तार किया गया। मेरे वारंट में मुझको सीधा देवली भेजने का आदेश था। इसलिए मैं मेरठ जेल में केवल ३ दिन ही रहा और उसके बाद आगरा सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। इन दिनों देवली संघर्ष का अखाड़ा बना हुआ था इसलिये आगरा सेन्ट्रल जेल से देवली के लिये जत्थे जाने बन्द थे। चुनांचे मुझको आगरा सेन्ट्रल जेल में ९३ दिन रहना पड़ा। उसके बाद देवली को जाने वाले दूसरे जत्थे में मेरा नाम आया और मैं देवली पहुँचा। हमारे जत्थे के बाद कोई दूसरा जत्था नहीं गया इसलिए देवली जानेवाला हमारा जत्था अंतिम था।

जिस समय हम देवली पहुँचे उस समय तक वहां का वातावरण बहुत कुछ ठीक हो चुका था क्योंकि सुरक्षा बन्दियों और अधिकारियों में तीन संघर्ष हो चुके थे। कैंप अधिकारी काफी ढीले पड़ गये थे। मुझको इन संघर्षों के बारे में जानने की काफी उत्सुकता थी। डाक्टर जी० के० जैतली (जो आरम्भमें ही वहां पहुँच चुके थे और जिन्होंने तटस्थ रह कर ही युद्ध का तमाशा नहीं देखा था बल्कि उन युद्धों की सफलता का बहुत कुछ श्रेय उन्हीं को था) इस जानकारी के लिए अधिक उपयुक्त व्यक्ति थे। मैंने उनसे पूरी जानकारी हासिल की और इस पुस्तक को लिखा। इसलिये इस पुस्तक की बहुत कुछ सामग्री उनके द्वारा ही प्राप्त की गई है जिसके लिए मैं हृदय से उनका आभारी हूं।

अन्त में यह पुस्तक इस रूप में आपके सामने आई। इस पुस्तक

को लिखते समय मैंने किसी अनैतिक पक्षपात का सहारा नहीं लिया है। वस्तु स्थिति पर प्रकाश डालने का ही भरसक प्रयत्न किया है। इतने पर भी मनुष्य से भूल हो सकती है इसलिए यदि कोई बात भूल से ग़लत लिखी गई हो या जो सत्यता से सर्वथा दूर हो तो मैं उसका संशोधन करने के लिये तैयार हूँ। आगामी संस्करण में वह ठीक कर दी जायगी।

आशा है पाठक बिना किसी पार्टीबाजी के मुझको निष्पक्ष रूप से सूचना देकर इस का सुधार कराने का प्रयत्न करेंगे मैं हृदय से उनका कृतज्ञ हूंगा।

एक बात और — प्रूफ की असावधानीके कारण कुछ अशुद्धियां रह गयीं हैं जो न होने के बराबर हैं क्योंकि उनसे किसी विशेष भाव का अपहरण नहीं हुआ है। इसलिए उनको उसी प्रकार रहने दिया गया है। आगामी संस्करण में उनका सुधार ही न होगा बल्कि कुछ और भी सामग्री बढ़ा दी जायगी जो शीघ्रता में रह गई है। यदि पाठकों ने इस पुस्तक को अपना कर मेरा उत्साह बढ़ाया तो उनको शीघ्र ही इसका एक अच्छा संस्करण देखने को मिलेगा।

—लेखक

❀ विषय सूची ❀

देवली कैम्प के—

अन्तिम भूख हड़तालियों के नाम

१. श्री मास्टर मोतासिंह जालन्धर
२. श्री रामचन्द्र बिहार
३. ,, जयप्रकाश नारायण पटना
४. ,, योगेशचन्द्र चटर्जी
५. ,, सेठ दामोदर स्वरूप बरेली
६. ,, मोहनलाल गौतम लखनऊ
७. ,, डा. जी. के. जैतली फ़ैजाबाद
८. ,, ब्रजनन्दन ब्रह्मचारी बस्ती
९. ,, मनमोहन गुप्ता लखनऊ
१०. ,, वीरेन्द्र पांडेय कानपुर
११. ,, झाड़खण्डे राय आजमगढ़
१२. ,, वीरेन्द्र वर्मा आजमगढ़
१३. ,, सूरजनारायणसिंह बिहार
१४. ,, योगेन्द्र शुक्ल बिहार
१५. ,, मलयकृष्ण ब्रह्मचारी ,,
१६. ,, श्यामाचरण अर्थवार गया
१७. ,, केदारनाथआर्य फैजाबाद
१८. ,, मोहनलाल रङ्क मेरठ
१९. ,, सत्येन्द्र बनर्जी बङ्गाल
२०. ,, महेन्द्र भारतीय बिहार
२१. ,, शत्रुघ्न कुमार देहरादून
२२. ,, विश्वनाथराय गोरखपुर
२३. ,, किशनलाल आजाद सोनीपत
२४. ,, दयाराम बेरी कलकत्ता
२५. ,. कामता प्रसाद उर्फ बच्चा बाबू आगरा
२६. ,, सर्दार हरजानसिंह पंजाब
२७. ,, सर्दार बलवन्त सिंह होशियारपुर
२८. ,, सर्दार काबुलसिंह जालंधर
२९. ,, ,, कुलतारसिंह लाहौर
३०. ,, ,, इन्दरसिंह अमृतसर
३१. ,, ,, हजारा सिंह हमदम पञ्जाब
३२. ,, ,, हरीसिंह सूंड पंजाब
३३. ,, सर्दार सिद्दासिंह पंजाब
३४. कामरेड रामचन्द्र लाहौर
३५. ,, पं० ज्ञानचन्द लाहौर
३६. मु० अहमददीन अमृतसर
३७. ,, ख्वाजा जहूर उद्दीन अमृतसर
३८. श्री अब्दुल अजीज रावलपिंडी
३९. ,, तिलकराज चड्ढा ,,
४०. ,, दलीपसिंह गिल
४१. ,, ज्वाला प्रसाद पेशावर
४२. ,, अमर सिंह पंजाब
४३. ,, वेनीमाधवराम गाज़ीपुर
४४. ,. बख्शीराम लाहौर
४५. ,, ज्ञानी करतारसिंह पंजाब
४६. ....

विषय प्रवेश

युद्ध आरम्भ होने से बहुत पहले श्री सुभाषचन्द्र बोस ने देश को चेतावनी दी थी कि योरपमें प्रलयके बादल छाये हुए हैं, जो बहुत ही जल्दी बरस पड़ेंगे । इस परिस्थितिसे हमको भी लाभ उठाना चाहिए । मगर देशने उनकी इस बातकी कोई कीमत नहीं आँकी । नतीजा उसका यह हुआ कि ६ मासके बाद ही योरपमें युद्धकी आग भड़क उठी । और योरपकी दूसरी बड़ी लड़ाईका श्रीगणेश हो गया । दोषी ठहराये गये हिटलर और मुसोलिनी । अगर उस समयकी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिका सिंहावलोकन किया जाय तो वास्तविक दोषीको समझने में आसानी होगी । जर्मनी और इटलीके पास उपनिवेश नहीं थे इसलिए उनकी आन्तरिक इच्छा थी कि वह भी दूसरे साम्राज्यवादी देशों की तरह अपने साम्राज्यका विस्तार करें । चुनांचे उन्होंने इसके लिए पूरी पूरी तैयारियां आरम्भ कीं । समय समय पर उनको ब्रिटेनसे शैं मिलती रही ।

क्योंकि योरपकी साम्राज्यवादी शक्तियां अपनी स्वार्थपरताके लिए पारस्परिक शतरञ्जकी चालें चल रही थीं । एक दूसरेको मित्र समझते हुए भी उसपर पीछेसे वार करनेमें ही राजनीतिकी इतिश्री थी । इस गन्दी राजनीतिकी विशद आलोचना करनेसे पुस्तकका कलेवर बढ़ जाने का डर है । पर थोड़ासा प्रकाश डालना अनुचित न होगा । बूढ़ा साम्राज्यवादी बृटिश घड़ियाल सब राष्ट्रोंके शक्ति संतुलनके दांव पेंच में लगा हुआ था । वह सुदूर पूर्वमें जापानकी कमर इसलिए थपेड़ता रहा था कि अमेरिका चीनमें सुगमता पूर्वक अपने पैर न फैला सके । अपनेको आड़में रखते हुए जापानको अमेरिकासे भिड़ा देनेकी उसकी

नीति थी। मगर हुआ उसका उल्टा ही- जापान ने बृटेन और अमेरिका दोनोंके एक साथ ही चूना लगाया।

इसके पूर्व योरपमें स्पेनका गृह युद्ध राजनीतिका अखाड़ा बन चुका था। प्रजातन्त्रवादी फ्रांस और ब्रिटेन, एक तन्त्रवादी जनरल फ्रैंको को गुप्तरूपसे सहायता करते रहे थे। तानाशाह मुसोलिनी को अबीसीनियाके हड़पनेमें चुपके चुपके बृटेनका समर्थन प्राप्त हो गया था क्योंकि साम्राज्यवादी फ्रांसकी शक्तिको कमजोर बनाये रखनेके लिए इटलीको शक्तिशाली होना चाहिए था। हिटलरको महाशक्तिके रूपमें रखकर सोवियट रूसके बढ़ते हुए प्रभावको रोकनेकी चेष्टा भी ब्रिटेन कर रहा था। इसीलिए योरपके छोटे छोटे राष्ट्रोंको जर्मन द्वारा हड़पने पर उसने चूं तक नहीं की बल्कि अन्दर ही अन्दर उसकी नीतिका समर्थन करता रहा।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रङ्ग बदलता है। अपनेको साम्राज्य विरोधी कहने वाला सोवियट रूस भी यह सब रङ्ग ढङ्ग देखकर अपने पंजे फैलाने लगा था। उसने फेसिस्ट जर्मनसे अनाक्रमण सन्धि कर डाली थी। इसलिए जब जर्मनीने पौलेन्डपर बर्बरता पूर्ण आक्रमण किया तो उधरसे रूसने भी अपनी लाल सेना भेज दी पौलेन्ड का अस्तित्व मिट गया उसको जर्मन और रूसने बन्दर बाँट कर लिया। अपना औचित्य सिद्ध करनेके लिये रूसने घोषणा पत्र भी निकाला। इसके बाद फिनलैंडपर आक्रमण किया गया लेकिन इस छोटेसे प्रदेश को विजय करना इनके लिए लोहेके चने चबाना हो गया। फासिस्ट हिटलरसे सहायता मांगी गयी। उसकी वायुयान फौजोंने रूसके लिए फिनलैंड को विजय कर दिया। अगर सच्चाईसे देखा जाय तो फिनलैंड के मोर्चेने हिटलरको रूसकी शक्ति जांचनेका अवसर दे दिया जो आगे चलकर रूसके लिए अभिशाप सिद्ध हुआ।

इसके पश्चात् अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति को देखते हुये बृटिश साम्राज्यवाद दिन प्रतिदिन कमजोर होता जाता दिखाई दे रहा था। उसका सूर्य अस्ताचल की ओर तेजी से बढ़ रहा था। जर्मनी का योरपियन राज्यों को हरा देना, मैजनो लाइन को आनन फाननमें भेदकर सारे फ्रांस पर कब्जा कर लेना, और डेन्कर्क की लड़ाई पर अङ्गरेजों को जबर्दस्त शिकिस्त देना, दुनिया के विचारवानों के लिए एक समस्या हो गयी थी। दुनिया सोच रही थी कि क्या फैसिस्टवाद का रौल मानव समाज के इतिहास में एक लम्बा अध्याय बनावेगा। क्योंकि बृटिश की हार का मतलब था—फैसिस्ट ताकत का सारे योरुप पर छा जाना।

इधर भारतवर्ष में व्यक्तिगत सत्याग्रह की लड़ाई चल रही थी, जिससे यह प्रतीत होता था कि हमारी संग्रहीत शक्ति, जो बृटिश हकूमत को एक मजबूत धक्का देकर हटा देने में लगायी जानी चाहिए थी बेकार में खर्च हो रही है। इसकी अपेक्षा यह कहीं अच्छा होता अगर देश इन्कलाब के नारे से अङ्गरेजों को हिन्दुस्तान से निकालने की लड़ाई छेड़ देता। मगर ऐसा नहीं हुआ जिसका नतीजा यह हुआ कि सरकार ने ऐसे व्यक्तियों को जो भारत में सशस्त्र क्रांति करा सकते थे, पकड़ पकड़कर जेलोंमें ठूंस दिया और एक संतोषकी सांस ली।

उधर देवली में देशका क्रांतिकारी नेता श्री जयप्रकाश नारायण जो बृटिश साम्राज्यवाद पर सीधा आक्रमण करनेके तरीके में विश्वास करता है वह देवली के घेरे में बेचैन जीवन व्यतीत कर रहा था। ~~बेचैनी व विवशता के कारण अपनी चारपाई में करवटें बदल रहा था~~)। वह चाहता था कि देश इस परिस्थिति का पूरा फ़ायदा उठाये और सरकार से अपने देश को मुक्त कराले। देवली का अभेद्य घेरा बाहर से कोई सम्बन्ध नहीं कायम होने दे रहा था जिसके द्वारा

बाहर बची खुची क्रांतिकारी शक्तियों को उचित नेतृत्व देकर प्रयोग किया जा सकता। इसलिये इस पत्रके लिखनेका आवश्यकता पड़ी।

इस पत्रमें जो देवलीका एतिहासिक पत्र कहलाता है। देवली के भीतर की राजनैतिक परिस्थिति का सिंहावलोकन, बाहर किस प्रकार काम करना चाहिए, इसका निर्देश, और हमारी अन्तराष्ट्रीय नीति क्या होनी चाहिए-इसका स्पष्टीकारण मौजूद है।

श्री जयप्रकाश नारायण ने इस पत्र को स्वयं लिखा था और मास्टर मोतासिंह से भी एक पत्र लिखा गया था जिसमें उन्होंने कवीश्वर शार्दूलसिंह को सन्देश दिया था कि फार्वर्डब्लाक के कार्य-कर्त्ता, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के साथ कार्य करेंगे, क्योंकि उनकी कार्य शैली राष्ट्रीयहितके लिए सबसे अनुकूल है। एक पत्र मुन्शी अहमददीन से भी पञ्जाब साथियों के लिये लिखाया गया था जिसमें उन्होंने आदेश दिया था कि पार्टीकी नवीन आज्ञा और आदेश आप को शीघ्र ही मिलेंगे। आप लोग इसी लाइन पर काम करें।

प्रिंस विस्मारक ने एक स्थान पर लिखा है "समस्त धार्मिक चेष्टाएं होती हैं" यह सूक्ति संसार के इतिहास में ठीक ही सिद्ध होती आ रही है। मुसलमानों, इसाईयों के राज्य प्रसार इसके नमूने हैं, फिर रूस ही इस शक्ति से क्यों न फायदा उठाये ? धर्म को ढकोसला समझने वाले रूस ने इसका रूप इस प्रकार बदल दिया। उसने संसार के कम्यूनिस्टों के लिए तृतीय अन्तराष्ट्रीय संघ को स्थापित किया (जो इस समय समाप्त हो चुका है) और उसके द्वारा अपने विचारों को प्रसारित किया। वहीं से संसार के कम्यूनिस्ट विशेषकर भारत के कम्यूनिस्ट क्रेमलिन की ओर उसी प्रकार दृष्टि लगाये रहते थे जिस प्रकार भारत के कट्टर मुल्ला मौलवी मक्का अरब और फिलिस्तीन की ओर देखा करते हैं। रूस की आज्ञा उनके लिये भी आयतें हदीस है। उनकी आज्ञानुसार ही उनका कार्यक्रम बनता

है। युद्ध छिड़ने के बाद उन्होंने कई बार गिरगिट की प्रकार रंग बदले हैं। युद्धारम्भ के पहले रूस और जर्मनी में मित्रता हुई तो उस समय जर्मनी के कम्यूनिस्टों को आदेश दिया गया कि वह नाजी जर्मनी की सहायता करें मगर ब्रिटेन और फ्रांसके कम्यूनिस्टोंको कहागया कि तुम अपनीसरकारोंके खिलाफ़ कामकरो वहीतुम्हारे शत्रु हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि इङ्गलैंडकी कम्यूनिस्ट पार्टीके कुछ समझदार व्यक्तियोंने कम्यूनिस्ट पार्टीसे त्यागपत्र दे दिये और इस पार्टीसे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। यह तो इनकी कारगुजारीका एक नमूना है इसके अतिरिक्त स्पेन, यूनान, आस्ट्रिया इत्यादि अनेक स्थानोंके कम्यूनिस्ट अपने देशकी परिस्थितिके अनुसार काम न करके केवल मास्कोके आदेश पालनमें अपने देशको बड़ी भारी हानि पहुँचा चुके हैं। उन्हीं के पदचिह्नोंपर हमारे भारतीय कम्यूनिस्ट भी चल रहे हैं।

सारे संसार का समाजवादी जगत इस युद्ध को साम्राज्यवादी मानता है। मगर भारत के कम्यूनिस्ट इसको लोकयुद्ध कहकर आत्म-प्रवंचना करते रहे हैं। युद्ध आरम्भ होते ही उनकी दृष्टि में यह युद्ध साम्राज्यवादी था मगर जैसे ही रूस को युद्ध में शामिल होना पड़ा उनका नारा लोक युद्ध का हो गया। इस सम्बन्ध में विशद व्याख्या के लिए कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी द्वारा प्रकाशित "यह युद्ध साम्राज्य-वादी है या लोक युद्ध" नामक पुस्तिका को पढ़ें। यहाँ तो केवल यही बता देना काफ़ी होगा कि रूस के युद्ध में शामिल हो जाने से युद्ध की परिभाषा में कोई अन्तर नहीं पड़ा—रहा साम्राज्यवादी ही। अल-बत्ता रूस को अपनी जनता को एक सूत्र में बांधने के लिए लोकयुद्ध का नारा देना पड़ा, जैसा कि उसको देना भी चाहिये था। उसके लिए यह युद्ध जनताका ही था। रूसकी और हमारी स्थितिमें जमीन

आकाशका अन्तर है। एक स्वतंत्र राष्ट्र है तो दूसरा गुलाम। हमको हमारी रज़ामन्दी के बिना युद्ध में जबर्दस्ती घसीट लिया गया था। जबकि हमारे साथ कोई युद्ध न था। वह हमारी विवशता थी फिर हम स्वेच्छा से किस प्रकार इसे लोक युद्ध कह सकते थे हमारे ऊपर अत्याचारी शासन चल रहा था। यहाँ की स्थिति वही थी जरा भी न बदली थी। यहां तो वही आधे दर्जन से अधिक प्रांतों में स्वेच्छाचारी गवर्नरी शासन चल रहा था। नौकरशाही निरंकुशता का तांडव नृत्य कर रही थी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और नागरिक स्वत्व का क्रूर दमन किया जा रहा था। फिर वहां के लोगोंसे यह कहना कि यह लोक युद्ध है! उपहास करना है। शब्द जंजालों और वाक्य जालों से अपनी बात को तोड़ मरोड़ कर लोगों के हृदय में कम्यूनिस्टों ने यह बात बैठाने की भरसक कोशिश की मगर यह बात लोगों के हलक के नीचे नहीं उतरी।

जिस समय कैंप में कम्यूनिस्ट पार्टी को बाहर से आदेश मिला कि जर्मनी और रूसका युद्ध आरम्भ होने से इस युद्धका रूपही बदल गया है। अब तक यह युद्ध साम्राज्यवादी था अब लोकयुद्ध हो गया है तो सिख कम्यूनिस्टों के हलक के नीचे यह बात उतरती न थी उनको समझाने के लिए बड़ी बड़ी मीटिंगें की गयीं बड़ेबड़े लच्छेदार धाराप्रवाह व्याख्यान झाड़कर उनके मस्तिष्कमें लोकयुद्धकी फिलास्फी की ठूंस ठाँस की गयी मगर दिल से वह इसको न मान सके। अलबत्ता अपने अनुशासन के नाते उन्होंने इसको माना और इस सम्बन्ध में कम्यूनिस्ट पार्टीने जो थीसिस लिखी थी उसकी सबको नकल करनी

पड़ी मगर जब सब बंदी अपने अपने सूबों को वापिस जाने लगे तो उन्होंने रातोंरात अपनी इस नई थीसिस की सब कापियाँ जला डालीं इसी से आप उनके लोकयुद्ध के विश्वास का अनुमान कर सकते हैं।

इस प्रकार भारत की समाजवादी पार्टियाँ अपने अपने रास्ते से चल रही हैं। जहां उनमें पारस्परिक प्रेम भाव होना चाहिये था वहां एक दूसरे की जानी दुश्मन बनी हुई हैं। बार बार संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयत्न किया गया मगर सब व्यर्थ रहा। सन १९४२ के आन्दोलन ने तो उन सब पार्टियों के भाग्य का निपटारा स्वयं ही कर दिया है प्रत्येक पार्टी अपने अपने स्थान पर खड़ी है। अपने अपने कारनामों और बलिदान का सेहरा उसके माथे पर बंधा हुआ है।
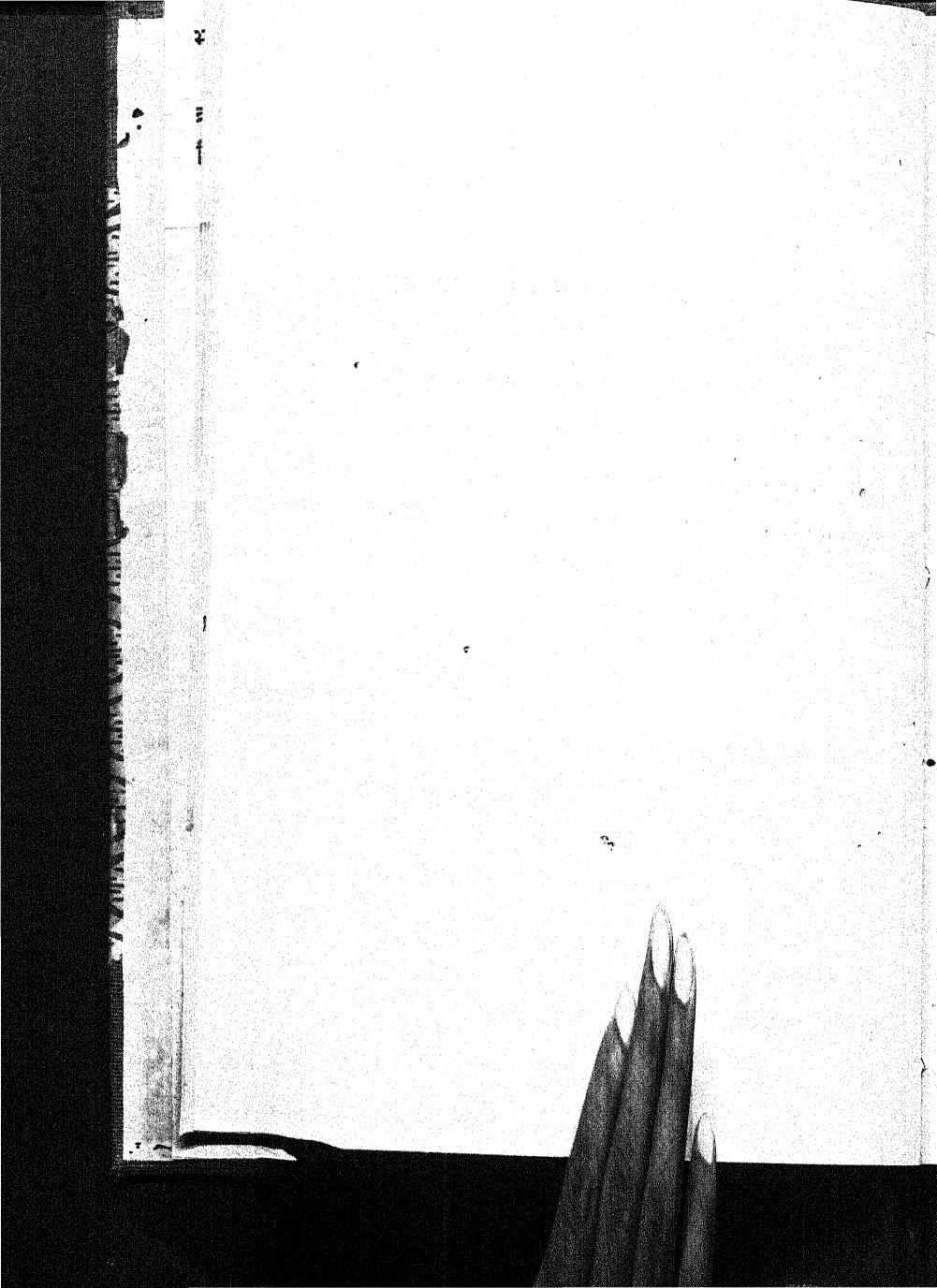
मेरी देवली यात्रा—

२९ अगस्त सन् १९४१ ई० के प्रातःकाल यह खबर बिजली की तरह फैल गई कि आज फिर १४ सुरक्षा बन्दी देवली नज़रबन्द कैम्प जायेंगे। बारह ताला (जेल की सर्किल) में लगभग ६ बजे सबके नाम जेलअधिकारी ने घोषित कर दिये और कहा — कि सब लोग बिल्कुल तैयार रहें। फिर क्या था — सारे बन्दियों में सनसनी फैल गई ! इधर उधर चेमेगोइयां होने लगीं और फिर कुछ सुरक्षा बन्दी अपने उन भाइयों की बिदाई का आयोजन करने में व्यस्त हो गये जो रेगिस्तानी काले पानी को भेजे जाने वाले थे। कुछ देवली नज़रबन्द कैम्प में गये हुये साथियों को सन्देश भेजने की तैयारी में लग गये क्योंकि इन दिनों देवली के दारुण कष्टों की कहानियां सारे भारत में फैली हुई थीं वहां का सेन्सर विभाग इतनी सख्ती से काम ले रहा था कि कोई भी समाचार बाहर से भीतर और भीतर से बाहर नहीं आ जा सकता था; इसलिये जानेवालों के द्वारा देवली से बाहर के राजनैतिक, सामाजिक और पार्टी के सन्देश सुगमता पूर्वक दिये जा सकते थे। इस अवसर को उन्होंने ग़नीमत समझा और पूरा लाभ उठाना चाहा। मगर फिर भी दिल में हड़कम्प मचा हुआ था क्योंकि

उनका अनुमान था कि देवली का सेन्सर विभाग बहुत ही दक्ष है जिसमें भारत के चुने हुए सी० आई० डी० काम करते हैं तलाशी बड़ी शख़्तीसे होती है इसलिये क्रांतिकारी साथियोंने सन्देश-वाहकों को सन्देश देते समय बहुत ही सतर्क रहने की राय दी। मुझको भी पुराना सतर्क क्रांतिकारी समझकर कुछ गम्भीर सन्देशों का उत्तरदा-यित्व दिया गया था जिनको समयानुसार मैंने पूरा किया।

इनके अतिरिक्त जेल में का वायुमण्डल इस आबोहवा से व्याप्त हो रहा था कि देवली नज़रबन्द कैम्प में जिन सुरक्षा बन्दियों को सरकार भेज रही है, उन्हें वह अपना सच्चा दुश्मन समझती है। उस की धारणा है कि अगर इन लोगों को अलग नहीं रखा गया तो समय आने पर ये अंग्रेजों के ख़िलाफ़ सशस्त्र क्रांति कर सकते हैं। इसलिए साथी समझते थे कि इन बन्दियों से बहुत सम्भव है फिर कभी मुला-कात ही न हो क्योंकि बृटिश हकूमत यदि लड़ाई में (जिसके हारने की सम्भावना अधिकाधिक बढ़ती जा रही थी) हार गई तो ये राज-बन्दी बृटिश साम्राज्यवाद के पतन के साथ गोली के घाट उतार दिए जायेंगे और यदि बृटिश राज्य के पतन के साथ ये बन्दी निकल भागे या इन्कलाब किया तो देवली में पड़ी हुई बृटिश सेना का मुकाबला करना पड़ेगा कि जिसका परिणाम भयङ्कर ही हो सकता है। यह कल्पना राजनैतिक बन्दियों तक ही सीमित न थी बल्कि जेल के इख़-लाक़ी कैदी जिनमें देश के प्रति श्रद्धा बढ़ती जा रही थी और वे सम-झने लगे थे कि बृटिश हकूमत की जेलों का ताला तोड़कर उनको मुक्त कराने वाले यही देश के वीर (बन्दी होंगे) भी जाने वालों के

प्रति हमदर्दी और सहानुभूति प्रगट करने के लिए खड़े हुए थे। उनमें से कितनेक ही नौजवान जो जोशीले थे कह रहे थे कि आप हमें सफैये और रसोइयों में नाम लिखाकर देवली ले चलें ताकि बृटिश साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ हमको भी सीधी लड़ाई में शरीक होने का अवसर मिले।

आगरा सेन्ट्रल जेल की प्रत्येक बैरक के साथ ही बन्दियों की भोजनशाला बनी हुई थी, अलग नहीं। इसलिये प्रत्येक भोजनशाला में टी पार्टी का आयोजन किया जाने लगा। यह खबर धीरे धीरे छन कर हमारे वार्ड में भी पहुंची जो वहां से बिलकुल अलग और एकांत में था। मगर देवली जाने वाले व्यक्तियों के नाम वहां नहीं पहुंच सके। सब बन्धुओं में उन व्यक्तियों को देखने और समारोह में सम्मिलित होने की व्यग्रता बढ़ने लगी। फौरन ही जेल अधिकारियों से वहां जाने की इजाजत ली गई और हम सब बन्दी उन व्यक्तियों की बिदाई के समारोह में सम्मिलित होने गये।

अलग अलग सब बैरकों में देवली जाने वाले व्यक्तियों की दावत की गई; खूब मिठाई और नमकीनसे उनको तृप्त किया। बैरक नं० २२ में समारोहका आयोजन था। श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल ने उन सब व्यक्तियों का परिचय उनके अतीत कारनामों सहित सब को कराया। जब तेरह व्यक्तियों का पूर्ण परिचय वे करा चुके तब चौदहवें व्यक्ति की खोज हुई। नाम बोलने पर पता चला कि वह चौदहवां व्यक्ति और कोई नहीं — मैं ही हूँ; फिर क्या था — उच्च अट्टहास से सारी बैरक गूञ्ज उठी और मुझको भी खड़ा करके मेरा परिचय दिया

गया। परिचय के बाद चाय पार्टी हुई।

देवली जाने की तैयारी में — मैं और अधिक इस समारोह में न ठहर सका। मुझको अब उस समारोह से अधिक दिलचस्पी रह भी नहीं गई थी, क्योंकि मेरी दिलचस्पी का क्षेत्र मेरे अन्दर उथल पुथल होने वाली अनेक कल्पनाओं में बंट चुका था। मेरे साथी भी आने वाली अवस्था को गम्भीरता से सोच रहे थे। उनको भी यहां का सब रङ्ग फीका ही नज़र आने लगा था इसलिये वे मुझको अपने साथ ले कर अपने वार्ड को वापिस चलने की जल्दी २ यात्रा की सब तैयारी करने लगे। हम लोगों की यात्रामें आधा घण्टा अब शेष था—इसलिये बड़ी शीघ्रता पूर्वक बिस्तर बांधा गया और दूसरे जेलके सामानको भी यथास्थान ठिकाने लगाया।

अपने बुलंदशहर और मेरठ के साथियों को छोड़ते हुये हार्दिक कष्ट का अनुभव हुआ। हम सब लोग एक साथ जिस प्रेम के साथ रहते थे; वह रह रह कर याद आने लगा। बार २ दिलमें यह ख्याल आता था कि न मालूम कब इन मूर्तियों के दर्शन होंगे—बहुत संभव है न भी हों; भविष्य को कौन जानता है।

राजबन्दियों का अपने साथियों से बिदा होते समय दिलभर आया जब उनके साथी बड़े स्नेह के साथ छाती से छाती लगा करके बिदाई का मिलाप कर रहे थे और इस बात का इसरार कर रहे थे कि देवली पहुँच कर अपना और साथियों का समाचार अवश्य देना यह बन्दियों की पारस्परिक बिदाई का दृश्य ऐसे ही लग रहा था जैसे संग्राम में अगले मोर्चे पर जाने वाले सिपाही की अन्तिम बिदाई होती है। ऐसा दृश्य जेल जीवनसे बाहर देखनेको नहीं मिल सकता।

उसके बाद सब बंदी एकत्रित हुए इन्कलाब जिन्दाबाद के नारों से जेल को गुञ्जा दिया। बृटिश साम्राज्यवाद का नाश हो के नारों से जेल की दीवारें हिल उठीं। समस्त राजबंदियों और इख़लाक़ी कैदियों की सम्मिलित आवाज़ ने तूफान बरपा कर दिया। देवली जाने वाले बन्दियों के चेहरों पर एक अजीब उत्साह और वीरता झलक रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि वे बृटिश हकूमत को युद्ध के लिये सच्ची चुनौती दे रहे हैं। उनकी वीरता और उत्साह के सामने आस पास खड़े जेल अधिकारी श्रीहीन और निस्तेज से दिखाई दे रहे थे। उनके चेहरों पर हवाइएँ उड़ रही थीं।

ये बहादुर राजबन्दी राष्ट्रीय गान गाते हुए जेल के फाटक की ओर बढ़े। साथ में सामान उठाये हुए इख़लाक़ी कैदियों की बेड़ी की झनकार गाने के सुर में ताल मिला रही थीं एक अजीबसा समा था। फाटक पर — भीतरी भाग में, आर्मस पुलिस से सुरक्षित — जाली लगी हुई, एक पुलिस की लारी बन्दियों की प्रतीक्षा कर रही थी। वहां पहुंचने पर बन्दियों की गिनती हुई और वे लारी में चढ़ाकर बंद कर दिये गये और लारी वेग से स्टेशन की ओर बढ़ी।

अधिकारी लारी को इस प्रकार स्टेशन पहुंचाना चाहते थे कि जिसमें नगर के लोगों को देवली जाने वाले राजबन्दियों की यात्रा का कोई पता न लगे; लेकिन राजबन्दियों का बृटिश साम्राज्यवाद का नाश हो का नारा लारी के चलने वाली सड़क पर गूञ्जने लगा और जनता को पता लग गया कि बृटिश हकूमत देश भक्तों को आगरे से बाहर कहीं ले जा रही है। उत्सुक जनता अपनी श्रद्धांजली इन वीरों

को अर्पित करने के लिए स्टेशन की ओर बढ़ी।

लगभग ९ बजे हम स्टेशन पर पहुंचे लारी रुकी और उसको चारों ओर से जनता ने घेर लिया। उनमें कुछ जान पहिचान के राष्ट्रीय कार्यकर्ता भी थे जिनके द्वारा अपनी यात्रा का समाचार भेजा जा सकता था। इधर आर्मस पुलिस के घेरे का बंधन भी ढीला पड़ गया था इसलिये इस अवसर पर उनके द्वारा प्रेस को समाचार दिया गया और जाने वाले बन्दियों के नाम बताये।

लारी से उतर कर हम लोग स्टेशन में दाखिल हुये। गाड़ी के दो डिब्बे हमारे लिए अलग काट कर स्टेशन के बाहर रखे गये थे कि जहां पर जनता न जा सके। हम लोग देश के सम्बन्ध में अधिक से अधिक सही समाचार प्राप्त करने के लिये उत्सुक थे। इसलिए रास्ते के लिए काफी समाचार पत्र भी लिए और परिचित लोगों से पुलिस की रोक थाम होने पर भी बातचीत की, पुलिस जो थोड़े ही दिन पहले काँग्रेस मिनिस्ट्री के नीचे काम कर चुकी थी वह काफी ढीली और कम सतर्क थी इस कारण से हम लोगों को जनता में मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। गाड़ी के छूटने का समय जल्दी से निकट आ गया। साथ जाने वाले पुलिस अफसर ने कहा — कि अब आप लोग डिब्बे में चलकर बैठिये क्योंकि डिब्बे जाने वाली गाड़ी में जोड़ दिए जायेंगे। बन्दी गाड़ी की तरफ बढ़े, प्लेटफार्म की जनता बंदियों को जाते हुए देखकर उदास हो गई और उनकी यात्रा की शुभकामना करने लगी। बंदी इन्कलाम जिन्दाबाद, ब्रिटश हकूमत का नाश हो इत्यादि नारों से प्लेटफार्म को गुञ्जाते हुए गाड़ी की ओर बढ़े और

अपने डिब्बों में बैठ गये ।

गाड़ी ने सीटी दी — सब लोग सम्भल कर बैठ गये । इन्कलाब जिन्दाबाद इत्यादि अनेक राष्ट्रीय नारों से वायुमण्डल गूञ्ज उठा । स्टेशन की जनता ने भी हमारा साथ दिया । फिर क्या था-—उत्साह से दिल बल्लियों उछलने लगा । नारों की रफ्तार और भी तेज़ होती गई । इधर धीरे २ गाड़ी चली उधर नारोंकी भी तेजी कुछ कम हुई । हाथ माथे पर गये जनता से अभिवादन हुआ, उधर से भी वही उत्तर दिया गया । एक टक एक दूसरे को देखते रहे— उधर गाड़ीकी रफ्तार भी बढ़नी आरम्भ हो गई । स्टेशन पीछे छूट गया, कैबिन पीछे रह गया; आगरे के मकानात पीछे रह गये । रह गई—केवल रेल की पटरी जिस पर हमारी गाड़ी तेज़ी के साथ सर्राटे भर रही थी ।

रात्रि का समय हो गया था, हमारी गाड़ी दनदनाती, हवा को चीर फाड़ करती तेज़ी के साथ चल रही थी । दूर तक दिखाई देने वाले बन के वृक्ष और खेत अंधेरे की काली चादर ओढ़े खड़े थे । कुछ भी दिखाई न देता था । हर तरफ सन्नाटा था, केवल गाड़ी की किट-किट की आवाज़ आ रही थी । जब कभी कोई स्टेशन आता तो खिड़की से बाहर मुंह निकाल कर बेतहाशा दौड़ती हुई उस भीड़ पर दृष्टि पहुँच जाती जो अपने तन बदन की सुधि खोकर गाड़ी में बैठने के लिए झपटती थी और कभी कभी बैठने में हाथा पाई तक की नौबत आ जाती थी । हमारे डिब्बों पर ताले लगे हुए थे इसलिए हम स्वयं किसी स्टेशन पर उतर नहीं सकते थे । अलबत्ता जिस वस्तु को खरीदने की आवश्यकता होती थी—वही खोमचे वाला देता था या

पुलिस कानिस्टबिल लाकर देते थे।

पुलिस सब इन्सपेक्टर बड़ी नम्रता के साथ हमसे बात करता था और कानिस्टबिल तो इस समय पूरे देश भक्त बने हुए गांधी जी का गुणगान कर रहे थे और बातों ही बातों में अपनी नौकरी की मजबूरी भी जाहिर करते जाते थे। कभी कभी यह भी कहते थे कि यदि हमको आप लोग नौकरी दें तो हम कांग्रेस में कम वेतन पर भी काम करने के लिये तैयार हैं। ऐसा सब क्यों था ? इस प्रकार की इन पुलिस वालों को ट्रेनिङ्ग ही दी जाती है। इनका जीवन बड़ी चाल बाजियों में होकर गुज़रता है; यही इनकी राजनीति है, बाहर कुछ अन्दर कुछ।

हां—तो ये सब लोग इस प्रकार की चापलूसी क्यों कर रहे थे ? और यह सब-इन्सपेक्टर जो कभी भूखे भेड़िये की तरह गुर्राता था क्यों पालतू बिल्ली सा बना हुआ था ? इसका कारण था—हम लोगों को मीठी २ बातों के भुलावे में रखकर सुरक्षित देहली पहुँचा देना। क्योंकि हम सब आतङ्कवादी कहे जाते थे इसलिये इनको भय था कभी रास्ते में ही ये लोग कोई उपद्रव खड़ा कर दें या किसी तरह यहां से भागकर उड़नछू हो जायँ और फिर उनके एमालनामे में यह घटना एक काला धब्बा साबित हो।

ये हमारे लिए कुछ सहृदयता न रखते थे और न इनके अन्दर देश का कुछ प्रेम ही था। इनके अन्दर केवल अपने अफसरों का भय था जिससे प्रेरित होकर वे हमको — अपनी आत्मा को धोखा दे रहे थे। उनकी दशा तो मैथिलीशरण जी के इस पद में अन्तर्हित थी:—

सिर झुका सुनते रहें, जो अफसरों की गालियां।

तो दे सकेंगी रात को, दो रोटियां घरवालियां ॥—खैर

लगभग ग्यारह बजे बियाना जंकशन पर पहुंचे। सबको खूब भूख लगी हुई थी। भोजन की खोज हुई वहीं प्लेट फार्म पर कम्बल बिछा दिये गये। पुलिस सतर्कता के साथ अपनी संगीनें कन्धे पर रखकर पहरा देने लगी। भोजन किया जो जरा भी स्वादिष्ट नहीं था मगर भूख में गूलर पकवान होता है। सब चट कर गये मैं जल्दी ही सो जाता हूँ; इसीलिये मुझको तो सोने की चिन्ता हुई। अपने डिब्बे में आया, कम्बल बिछाया, और उसपर लम्बी तान दी। कुछ देर के पश्चात् गाड़ी आई और हमारे डिब्बे उसमें जोड़ दिये गये। हम सब लोग रात भर आराम से पैर फैलाकर सोये और पुलिस वालों को हमारी निगरानी करते हुए सारी रात बैठे ही बैठे बितानी पड़ी। जब सुबह को हमारी आँखें खुली तो हमारी गाड़ीएं जयपुर स्टेशन पर पहुँच चुकी थी। हम उठकर बैठ गये। प्रातःकाल जिस ओर दृष्टि जाती थी सुन्दर पहाड़ियां दृष्टिगोचर होती थीं जिनपर कुछ हरियाली तो थी मगर हिमालय श्रृङ्खला जैसी बर्फ नहीं थी। मगर फिर भी उनके मनोरम दृश्य से चित्त प्रसन्न हो गया। इस अरावली पर्वत की छटा, नदी नालों का प्रवाह, और बड़े बड़े वन जो सुन्दर और ऊँचे वृक्षों से पटे पड़े थे—हमारे आकर्षण के केन्द्र हो रहे थे। यहांकी मुक्त वायु ने हमारे हृदय के संताप और आलस्य को दूर करके हमें प्रफुल्लित बना दिया। फिर हम शौचादि से निवृत्त हुए और राजस्थानी लोगों की भीड़ और स्टेशन देखते हुए कोटा स्टेशन पर पहुंच

गए । जहाँ गाड़ी से हमारे डिब्बे अलग काट दिये गए और हम सब लोग उतर पड़े ।

यहाँ पर मैकरेडी डिपुटी सुपरिन्टेन्डेंट देवली नजरबंद कैम्प पलटन की एक टुकड़ी के साथ फौजी लारी लिए हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे । उन्होंने हम से कहा—आप लोग हाथ मुँह धोकर नाश्ते के लिए तैयार हो जाइये । यहां से हम लोग आठ बजे रवाना होंगे । देवली पचास मील की दूरी पर है वहीं पहुँच कर दोपहर का खाना होगा । धूप तेज न हो जाय—इसलिये ज़रा जल्दी कीजिये ताकि ठंडक २ में ही देवली पहुंच सकें ।

हम लोग बड़ी शीघ्रता से तैयार हो गए, जलपान किया और लारी की तरफ बढ़े । ये फौजी लारी बनावट में पुलिस लारी से भिन्न थी । इसके भीतर गद्दीदार बैठने की जगह थी जहां पर बंदियों को स्थान दिया गया था साथ ही इसके लारी के अन्दर ही फौजी सिपाहियों के लिए भी बैठने का प्रबँध था जो कि घेरा छोड़ कर बैठ गये । फौजी सिपाही गढ़वाली पलटन के आदमी थे । यह गवर्नमेंट से कुछ नाराज जान पड़ते थे, क्योंकि यह कहते थे कि सरकार ने हमें इटालियन कैदियों पर पहरा देने को बुलाया था, लेकिन इस कैम्प में हमारे देश के बाबू लोगोंको लाकर बंद कर दिया है । एक हवलदार जिसकी आंखों में अश्रु झलक रहे थे; बड़े जोश और उत्साह से बोला——हम तो पन्त जी के मुल्क के आदमी हैं । अगर सरकार हमको हमारे बराबर सोना भी तोल देगी तो भी हम आप लोगों पर गोली नहीं चला सकेंगे । अँग्रेज गोरा अफसर जो उनके ऊपर था, उसको वे बड़ी घृणा

की दृष्टि से देख रहे थे और बँदियों को अपने घर का आदमी समझते थे। अब हम लारी में बैठकर कोटा शहर की ओर चले। कोटा शहर की नई आबादी आधुनिक ढङ्ग पर बसाई गई है। मकानात और सरकारी इमारतें पाश्चात्य शहरों की नकल मालूम देते हैं। बाजार की चौड़ी सड़क बहुत ही सुन्दर मालूम होती है। सफाई का प्रबन्ध बहुत अच्छा है, राजप्रासाद अपनी भव्य कांति से जगमगा रहे थे उनपर सूर्य की किरणें स्वर्ण का पानी चढ़ा रही थीं। राजवाटिका में पुष्प अपनी सुगँध लुटा रहे थे। एक मनोरम दृश्य था, हर ओर सौंदर्य बिखरा पड़ा था। सामन्तशाही का स्मरण करके हृदय में यह विचार आया कि इन राजाओं और नवाबों को अपने ऐश्वर्य बनाये रखने के लिये कितने निरीह और भोले भाले व्यक्तियों का बलिदान करना पड़ा होगा। कौन जानता है--इन सुन्दर राजप्रासादों की एक एक ईंट कितने बेगुनाहों के रक्त से रञ्जित है। इस शोषण और उत्पीड़न की कब समाप्ति होगी और यहां की प्रजा कब मुक्त वायु में साँस ले सकेगी ?

हमारी लारी कोटा शहर को चीरती सड़क पर तेजी के साथ चल रही थी, शहर पीछे रह गया। कुछ दूर चलने के बाद एक नदी का सुन्दर पुल आया जिसके ऊपर ग्रामीण जनता अपने मैले कुचैले वेष में इधर से उधर आ जा रही थी। शरीर पर फटे पुराने कपड़े थे मगर सिर पर दस गज लंबा साफ़ा अवश्य था जो प्राचीन परम्परा को अभी तक कायम किये हुए था। कुछ गाते बजाते स्त्री पुरुष भी देखे जो शायद किसी उत्सवमें जा रहे थे। सम्भव है किसी की शादी

हो । स्त्रियों का वही पुराना लहँगा; दुपट्टा और अँगिया कुर्ती थी जो आमतौर पर मारवाड़ी समाज में स्त्रियां पहनती हैं । सारे राजस्थानमें सम्भवतः वही एक पहनावा प्रचलित है जो भारतीय समाज की प्राचीन संस्कृति का द्योतक है । और जिस पहनावे को आज भी मारवाड़ियों ने भारतवर्ष के बड़े बड़े शहरों में—आधुनिक ढङ्ग को अपनाने पर भी सर्वथा त्याग नहीं दिया है ।

इस पुल के दूसरी ओर से बूंदी राज्य की सीमा आरम्भ होती है । एक प्रकार कोटा और बूंदी राज्यों की सीमा को सम्भवतः यह नदी ही कायम करती है । हमारी मोटर तेजी के साथ चल रही थी अन्धा-धुन्ध, एक कुत्ता उसकी झपेट में आया और चीं बोलकर एक ओर भाग गया, उस गरीब की जान जाते जाते बची । इस यंत्रयुग में पता नहीं कितनी मासूम जानें इन यंत्रों की भेंट चढ़ जाती हैं; और जिनका हिसाब करने वाला भी कोई नहीं होता । इस प्रकार की मशीनों ने यमराज के दूतों का बहुत काम हल्का कर दिया है जिससे शायद मुन्शी चित्रगुप्त के लेखे जोखे की अधिक पड़ताल करने की यमराज को आवश्यकता न पड़ती होगी ।

दूर से चमकते पहाड़ अपनी सौंदर्य-छटा बखेर रहे थे । देखते ही देखते पहाड़ के ऊपर एक भव्य शहर चमकता दिखाई दिया जो दूर से सुन्दर चित्रकारी का दिग्दर्शन करा रहा था; यह था बूंदी शहर । कितनी सुन्दर कारीगरी थी, पहाड़ को काट काट कर किस निपुणता से उसका निर्माण किया गया था । राजप्रासाद चमचमा रहे थे उनकी ओर निर्निमेष दृष्टि से हम देख रहे थे और उसके मुग्धकारी सौंदर्य को आंखों द्वारा पीकर अपने हृदय की तृप्ति कर रहे थे । पहाड़ को छूती

हुई बड़ी ही सुन्दर झील थी; जिसके पुल पर होकर हमारी मोटर चल रही थी। इस झील का स्वच्छ और निर्मल जल नीलम के फर्श की तरह दिखाई दे रहा था, उसमें कई डौंगियाँ तैर रही थीं और अनेक प्रकार के जल-जँतु, मुर्गाबी, बत्तखें इत्यादि किलोलें कर रहे थे। पपीहे ने पी पी की आवाज लगा रक्खी थी जो बार बार अपनी पिपासा शाँत करने के लिए पानीपर लपकता था मगर उसकी पिपासा शाँत न हो पाती थी उसको तो स्वाती नक्षत्र के पानी की आवश्यकता थी जिसके बिना वह इसी प्रकार तड़प रहा था जैसे गुलाम भारतवासी पूर्ण-स्वतंत्रता के लिए व्यथित रहते हैं। थोड़े से सुधार से क्या काम चल सकता है एक सारस का जोड़ा जिस प्रेम भाव से एक स्थान पर विचर रहा था उसका आकर्षण हुए बिना न रहा। तभी विचार आया कि क्या ऐसा शुभ दिन भी कभी आ सकेगा जब हिंदू और मुसलमान भी इसी प्रकार प्रेम भाव से रहते हुए अपनी एकता का परिचय देकर संसार को चकित करेंगे।

नीले कमल अपने स्थान पर ही अपने अदम्य उत्साह और साबित क़दमी का परिचय दे रहे थे। जो बड़े बड़े तूफानों और ऊंची उठती हुई तरङ्गों में भी शाँत चित्त थे, अडिग थे। जो अपनी मातृ-भूमि को त्याग कर किसी प्रकार भी जीवित नहीं रह सकते थे। पर्याप्त लंबे इस झील के पुल को हमने पार किया। कुछ कैदी जो बेड़ियों को झनझना कर चल रहे थे शायद किसी काम के लिए जा रहे थे—बूंदी राज्य के थे। कुछ दूर बढ़े तो एक गेट आया हमारी लारी उस के अन्दर घुसी सड़कके दोनों ओर बड़े २ सुन्दर वृक्ष खड़े थे; जिनकी शीतल छाया ने शाँत वातावरण कर रखा था। सूर्य का प्रचण्ड तेज़

भी उसको अच्छी प्रकार भेद नहीं सकता था; हाँ—कहीं २ उसका तेज वृक्षों की पत्तियों को भेद कर स्वर्ण मुद्रायें बखेर रहा था। इधर से उधर मोर आ जा रहे थे और अपनी मीठी कूक से हृदय में प्रेम-पीयूष उंडेल रहे थे। कहीं कहीं कोई मयूर अपनी मस्ती में मस्त होकर नाच रहा था और उसकी प्रिया उसके नाच पर मुग्ध होकर चित्र-लिखित सी खड़ी थी। चकोर तथा और भी अनेक प्रकार के पक्षी इधर से उधर भाग रहे थे, शायद हमारी मोटर के शब्द से।

बूंदी का किला एक पहाड़ी पर बना था, प्राचीन भारत की कारीगरी का अनुपम नमूना था। चढ़ने के लिए पहाड़ को काटकर सीढ़ियों का निर्माण किया गया था और उसके ऊपर वह विशाल दुर्ग था जिसका कर्नल टाड ने राजस्थान के इतिहासमें विशद वर्णन किया है। राजस्थान के चल चित्र आंखों के सामने आने जाने लगे; यह वही राजस्थान था जिसकी रक्षा के लिए अनेक वीरों ने यहां की चप्पा २ भूमिके लिए अनेक बलिदान किये थे। और यह भूमि अनेक वीरों के रक्त से रञ्जित हो उठी थी। अतीत भारत का स्वप्न आंखों में झूल गया और अपने भारतीय आदर्श के स्मरण मात्र से ही रोमाँच हो आया। फिर तो अनेक प्रकार के विचारों का तारतम्य बँध गया। महाराणा प्रताप सिंह की दृढ़ प्रतिज्ञा, गोरा बादल के बलि-दान और राजपूत वीराङ्गनाओं के जौहर, दुर्गादास राठौड़ की महा-नता आंखों में खेलने लगी। और भी अनेक योद्धाओं के आत्मबलि-दान दृढ़ प्रतिज्ञा, बचन पालन, और अतिथि सेवा की याद आने लगी।

लगभग आधा रास्ता तय हो चुका था, तब लारी रुकी और

उसके साथ ही मस्तिष्क के विचारों को भी ब्रेक लगा। सब लोग लारी से उतर पड़े, पेशाब किया, कुछ मुक्त वायु में खड़े होकर हाथ पैर सीधे किये और फिर मोटर में सवार हुए। अब वह छायादार वृक्ष पीछे छूट गये थे। अब तो सड़क के दोनों ओर हरे भरे खेत या हरी घास के चटियल मैदान नजर आते थे। कहीं कहीं ऊबड़ खाबड़ और पथरीली जमीन थी; कहीं रेत ही नजर आता था। झुण्ड के झुण्ड हिरन इधर से उधर चौकड़ी भर रहे थे जो दूसरी लारी की आवाज से भयभीत जान पड़ते थे। कहीं कहीं झाड़ी में से निकल कर सियार झांकने लगते थे और खरगोश दौड़ लगाकर निकल भागते थे। ऊँटों पर चढ़े हुए कई व्यक्ति भी इधर से उधर रास्तों में आ जा रहे थे। जब यहाँ के सूखे हड्डियों के ढांचे पुरुष और स्त्रियों को देखा तो यह विश्वास नहीं होता था कि क्या वे उन्हीं लोगों के पूर्वज थे जिन्होंने बड़े बड़े लम्बे चौड़े पठानों और मुगलों के दाँत खट्टे कर दिये थे। और अनेक राजपूत वीराङ्गनाओं ने अपनी तलवार के जौहर दिखाये थे। क्या सचमुच आज वे गुलामी की इस चक्की में पिसकर इतने जर्जर हो गये हैं कि खून और मांसका पता ही नहीं या जिनका इतना शोषण हो चुका है कि पिंजर मात्र ही अवशेष रह गया है। यहां बहुत ही गरीबी जान पड़ती है। आधुनिक युग में साम्राज्यवादी शक्तियों ने किस प्रकार सामन्तशाही को निगल कर हज़म कर लिया है; यह उसका अनुपम उदाहरण है।

हमारी लारी बारह बजे से पहले ही देवली पहुँच गई।

देवली का इतिहास—

देवली एक छोटा सा मुसलमानी क़स्बा है; आबादी लगभग ९०० होगी। कोटा स्टेशन से यह पचास मील और नसीराबाद स्टेशनसे ६७ मील पड़ता है। इन दोनों स्थानों से ही देवली के लिए पक्की सड़क जाती हैं जिनपर यात्रियों के लिये लारियाँ चलती हैं। यह स्थान राजपुताने का हृदय कहा जाता है। इस स्थान पर कई राज्यों की सीमायें मिलती हैं, मेवाड़, बूंदी और अजमेर से यह घिरा हुआ है। राजपूताने पर अपना प्रभाव जमाये रखने के लिए कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों ने इसको चुना था आजकल भी नसीराबाद में अंग्रेजों की छावनी है जिसमें काफी फौज़ रहती है। युद्ध के लिए महत्वपूर्ण होने के कारण यह स्थान अतीत काल में कई बार रणभूमि बन चुका है। उन्नीसवीं शताब्दी में यह स्थान राजाओं की नज़रबंदी के लिए था। भरतपुर के राजा को गद्दी से उतार कर यहीं नज़रबन्द किया गया और यहाँ पर ही उनकी मृत्यु हुई थी। अभी तक उनके रहने के मकानात अपनी शान से खड़े हुए हैं, जिनमें देवली नज़रबन्द कैम्पके सुपरिन्टेन्डेंट का कार्यालय है। इस प्रकार यह स्थान काफ़ी ऐतिहासिक महत्व रखता है।

यहाँ की वायु गर्म खुश्क है, पानी में अभ्रक के ज़र्रे बहुत होते हैं यदि इस स्थान से अभ्रक एकत्र किया जाय तो बड़ी संख्या में प्राप्त हो सकता है। क्योंकि किसी भी स्थान को खोदने पर अभ्रक मिश्रित पत्थर उपलब्ध होते हैं। इसलिए यदि इस स्थान को अभ्रक भूमि भी कहेंगे तो अत्युक्ति न होगी। यहां पर ऊबड़ खाबड़, कङ्करीली और पथरीली ज़मीन है जिसके ऊपर बारीक पत्थर के टुकड़े बिखरे होते हैं। रङ्ग बिरँगे पत्थर के टुकड़ों की यहां कमी नहीं है, काफी संख्या में पाये जाते हैं जिनमें कई बार मूल्यवान पत्थर भी मिल जाता है।

सन् १९३१ में बङ्गाल आर्डीनेन्समें हजारों व्यक्ति नज़रबन्द किए गये थे। उस समय बङ्गाल सरकार ने केन्द्रीय सरकार से एक नज़ार-बन्द कैम्प खोलने की सिफारिश की। केन्द्रीय सरकार ने बङ्गाल से बहुत दूर इस सुरक्षित स्थान में नज़रबंद कैंप खोला और उसमें पांच कैंप स्थापित किए। प्रत्येक कैंप में १०० राजबन्दी रखे जाते थे। इस प्रकार लगभग पाँच सौ सुरक्षाबन्दियों के लिए एकमोडेशन था। जिनकी निगरानी के लिए लगभग ३५० फौजी सिपाही रहते थे। सन् १९३७ में यह कैंप टूट गया और सब नजरबन्दी छोड़ दिये गये।

योरुप का युद्ध आरँभ होने पर प्रांतीय सरकारों ने भारत-रक्षा विधान में अनेक व्यक्तियों को गिरफ्तार किया और फिर उनको अपने प्रांतों से दूर किसी स्थानमें सुरक्षित रखने की योजना बनाई। केन्द्रीय सरकार से लिखा पढ़ी की--पहले तो केन्द्रीय सरकार इन व्यक्तियों को अहमदाबाद किले में रखना चाहती थी, बाद में पता नहीं किस प्रकार इस कैम्प को ही पुनर्जन्म दिया गया। अक्तूबर १९४० में इस

को आरम्भ किया और इसके वही पुराने सुपरिंटेन्डेन्ट मेजर कैरेस्टर फिर याद किये गये और बंदियों की निगरानी के लिए लगभग १५० फौजी सिपाही रक्खे गये ।

यह कहना अप्रासङ्गिक न होगा पहली बार इस नजरबंद कैंप में १०–१५ व्यक्ति पागल हुए, कई ने आत्म-हत्यायें कीं और कई मर गये । इस कारण इस स्थान की जलवायु तथा दूसरे दृष्टिकोण से मन–हूस समझा जाता था । जब दूसरी बार यह कैंप खोला जाने लगा तो जनता ने इसका काफी विरोध किया । समाचारपत्रों ने भी सम्पाद-कीय लेख लिखे मगर इन सबका कोई विशेष प्रभाव न हुआ कौन सुनता है नक्कारखाने में तूती की आवाज़ ।

कैम्प से बाहर हम सबको उतारा गया उसके बाद वहाँ की सी० आई० डी० के सारे स्टाफ ने हमारी तलाशी ली । बड़ी सख्त—जिसकी हमको स्वप्न में भी आशा न थी, सी० आई० डी० की इतनी सतर्कता जेल जीवन में पहली बार ही देखने को मिली । सचमुच सर-कार ने देवली नजरबन्द कैंप का बहुत ही सतर्कता पूर्वक प्रबन्ध किया था यहाँ तक कि खाने पीने की वस्तुएँ तक भी जो हमारे साथ थीं, हमारे द्वारा अन्दर न जा सकी थीं । वह अगर गयीं भी तो अधिकारियों द्वारा । सब पुस्तकें और कापियाँ वहीं जमा करा ली गई और कहा कि यह सब सेन्सर बाद मिलेंगी ।

सबसे अधिक हमारे हृदय को ठेस उस समय पहुँची जब हमारे सिर से गाँधी कैंप को उतरवा लिया जो कि हमारी राष्ट्रीय पोशाक का एक अङ्ग थी । हमारे कपड़ों की फौजी बनावट कैंची से काटकर बिगाड़ दी गई या यह कहा गया कि आप इनको फाटक पर ही उतार कर

सादे कपड़े पहनकर कैंप में प्रवेश करें। खाकी कमीज या नेकर फाटक पर जमा करा लिये गये और सादी पौशाक पहनने का हुक्म हो गया। इस प्रकार राष्ट्रीयता के प्रत्येक चिह्न को शरीर पर से हटा लिया गया और सैनिक वेष भूषा उतरवा ली गई तब कहीं जाकर कैम्प में प्रवेश की इज़ाजत मिली।

इस कार्यवाही का हम मुकाबला करते, लेकिन यह सोचकर कि हमारे साथ युद्धबन्दियों का सा बर्ताव होने जा रहा है और प्रत्येक राष्ट्र युद्धबन्दीका राष्ट्रीय चिह्न नज़रबंद कैंपमें प्रवेश करते समय उतरवा लेता है। इसलिये खामोशी के साथ इस फौजी रिवाज को मन्जूर किया। मगर वृटिश हकूमत को खतम कर देने की आग जो हमारे हृदय में दबी पड़ी थी इस प्रचण्ड हवा के झोंके से प्रज्वलित हो उठी उस धधकती आग को लिए हुए हम कैंप की ओर बढ़े। श्री सेठ दामोदर स्वरूप को कैंप नँ० १ और शेष सबको कैंप नं० ३ में भेजा गया।

यह कैंप चारों ओर कांटेदार तारों से घेर कर बनाया गया था; जिसके ऊपर कोलतार से पुती—लगी हुई चटाइयाँ अपनी काली करतूत प्रदर्शित कर रही थीं। प्रत्येक कैंप के गेट पर पहरेदारों के रहने का कमरा था और तार की चहार दीवारी के साथ थोड़ी २ दूर पर मचान बाँधे गये थे जिनपर बन्दूकधारी फौजी सिपाही २४ घंटा बड़ी सतर्कता के साथ पहरा देते थे। यहां से सारे कैंप पर दृष्टि रह सकती थी और किसी भी भागने वाले को आसानी से गोली का निशाना बनाया जा सकता था।

उसके बाद तारों की पाँच गज लंबी लकड़ी के खंभों के सहारे दीवार बनायी गयी थी जिसमें दोहरे तार लगाये गए थे और नीचे

अंडाकार तार के घर बनाकर लगा दिये गये थे। इस प्रकार बाहर की चहार दीवारी के अन्दर क्रमशः दो दीवारें बनाई गई थीं। जिनको कोई भी व्यक्ति पार करके नहीं जा सकता था। इन कांटेदार तारोंको दीवार के सामने अस्थायी प्रबन्धके लिए ईंट पत्थरकी दीवारें बनाना महंगा सौदा था और ये दीवारें चाहे जब तोड़कर रक्खी जा सकती थीं या दूसरी जगह बदली जा सकती थीं। इस प्रकार के कैंप युद्ध बंदियों के रखने के लिये ही बनाये जाते हैं।

हम कैंपके प्रवेशद्वारपर पहुंचे जिसपर एक भारी लोहे का फाटक कांटेदार तारों से मंढकर लगाया गया था। सङ्गीनधारी फौजी सिपाहियों की एक टुकड़ी हर समय उस पर पहरा देती थी। फाटक के भीतर देवली के राजबंदी हमारे स्वागत के लिए भीड़ लगाये खड़े हुए थे। उनके चेहरों पर देवली के इस निर्जन स्थान ने एक अजीब छाप लगा दी थी। उनकी आंखों में नवआगुन्तकों से मिलने की उत्सुकता और हृदयमें प्रबल उत्कण्ठा साफ झलक रही थी। अधिकांश व्यक्ति जो इस निर्जन स्थान में बन्द थे अपने घर वालों से अभी तक एक बार भी मुलाकात न कर सके थे। क्योंकि देवली पहुंचने का भारी खर्च और रास्ते का कष्ट उनके लिए काबिले बर्दाश्त न था।

फाटक के बाहर हम लोग खड़े थे, पचास मील की रेगिस्तानी यात्रा ने रेत और धूल से हमारे शरीर को इतना ढक दिया था कि हम लोगों की शक्लें भी ठीक से नहीं पहचानी जा सकती थीं। फाटकपर फौजीहवलदारने आनेवालोंकी लिस्ट पाई बंदियोंकी तादाद गिनी और फिर क्रूर फाटकको हमारे प्रवेशके लिये खोल दिया। फाटक के खुलते ही हमने दौड़ कर अपने साथियोंसे गले लगाकर मिलना शुरू

कर दिया। उस प्रसन्नतामें यह भी न सोचा कि यह फाटक क्या कभी हमको बाहर निकालनेके लिये फिर खुलेगा ? कैंपके भीतर नये प्रकारके रहने के स्थान, नये प्रकार के भोजनालय, नये प्रकार के स्नानागार हमको दिखलाई दिये। जोकि जेलोंमें नहीं पाये जाते। कैंप का भीतरी भाग पथरीली ज़मीन पर बनाया गया था जगह जगह चट्टानों के कटे हुए चिन्ह दिखाई दे रहे थे। पृथ्वी शुष्क और नीरस थी जिसपर कोई बाग या फुलवाड़ी नहीं लग सकती थी। उस निर्जन और सूखे स्थान में कई छोटे छोटे नीम के वृक्ष खड़े हुए इस बात की साक्षी दे रहे थे कि इस मरूभूमि में कोई वृक्ष इससे अधिक नहीं पनप सकता। इन गरीब वृक्षों को भी काँटेदार तारोंसे परिवेष्टित करके नज़र बन्द कर दिया था ताकि ये, अपने सहयोगी बन्दियों को अपने ऊपर चढ़ाकर बाहरी दुनिया का दृश्य न दिखा सकें। साथियों ने खाने पीनेका प्रबन्ध पहले से ही कर रक्खा था क्योंकि जब कभी बाहर से आने वाले जत्थे का पता बन्दियों को लगाना था तो उनको अज़हद खुशी होती थी उस दिन बाहर के नये समाचार जानने की उत्सुकता उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही थी इसलिए जब हम लोग खाना खाने बैठे तो बातों की झड़ी लग गई वे हमारे से बाहर के समाचार जानने में व्यग्र थे और हम इस क्रूर स्थान की अन्दरूनी हालत। इस प्रकार दोनों अपनी अपनी उद्देश्य पूर्ति कर रहे थे और सवालोंका आदान प्रदान।

यद्यपि यह अगस्त का महीना था। हमारे सूबे में चारों ओर वर्षा होकर हरियाली छा गई थी, लेकिन इस मरूभूमि में सूर्य की प्रचण्ड किरणें बन्दियों को तप्त कर रही थीं, और गर्म हवा के

झोंके उनके शरीर को झुलस रहे थे। दिन भर कमरों में बैठने के अतिरिक्त बाहर निकलना आफ़त थी। सायंकाल के समय राजपूताने में अच्छी प्रकार गुजरता है क्योंकि रात्रि को ठंडी हवा चलने लगती है। मगर अधिकारियों ने हमको उस नैसर्गिक सुख से भी वंचित कर दिया था। सूर्य अस्त हो गया था—मगर बिजली की बत्तियों ने कदम कदम पर अपनी कृत्रिम रोशनी से रात्रि को दिन बना रखा था। यह बिजली की रोशनी बन्दियों के लिये एक महान दुखदायी वस्तु हो गई थी। क्योंकि वह रात्रि में कभी भी बुझाई नहीं जाती थी और बन्दियों को उसी रोशनी में सोना पड़ता था। रात्रि में जबरदस्त सन्नाटा था। नींद न आने पर वन्दी अपने विस्तरों में केवल करवटें बदलते रहते थे। शृगालों की आवाज़ उस सन्नाटे में कभी कभी सुनाई देती थी या हर पन्द्रह मिनट पर मचान पर खड़ा हुआ प्रहरी अपना मचान का नम्बर चिल्लाकर अंग्रेजी में कहता था सब ठीक है। जैसे नं० ७ का प्रहरी कहता था (Number seven all is well) इस आवाज़ को सुनकर के उसके बाद वाला प्रहरी भी उसी प्रकार चिल्लाता था। ये प्रहरियों का चीत्कार जो कि रात भर हर पन्द्रह मिनट पर इस निर्जन स्थान को गुञ्जाता था, बन्दियों की निद्रा में भयङ्कर बाधक होता था। बन्दी को कुछ दिन रहने के बाद उसको सुनते सुनते आदत पड़ जाती थी तब वह कहीं ठीक से सोने लगता था।

राज-बन्दियों से बात करने पर मालूम हुआ कि यहां के गोरे अधिकारी फाटक पर आते ही बन्दियों के स्वाभिमान पर जबरदस्त ठोकर लगाते हैं जिसका कि अनुभव हम लोगों ने भी अपनी राष्ट्रीय

टोपी और खाकी पोशाक को फाटक पर जमा कर ही लिया था। जिससमय पंजाबका सबसे पहला जत्था यहांपर आया था जिसमें गदर पार्टी के बूढ़े लोग जो अब कीर्ति पार्टी में सम्मिलित हो गये थे, साथ ही पञ्जाबके बब्बर अकाली दल के नेता सरदार मोतासिंह और उनके कुछ साथी तथा पंजाब के प्रमुख शहीद भगतसिंह के दो भाई भी शामिल थे। मेजर क्रेस्टर द्वारा बहुत अपमानित किये गये थे। मेजर ने इनको अपना बोझा स्वयं सिर पर उठाकर ले चलने को विवश किया था। मगर इनमें से अधिकाँश अपना सामान छोड़कर चले गये थे। और कुछ व्यक्ति अपना सामान उठाकर ले गये थे। इन व्यक्तियोंके ऐसा करने से उसका हौसला बढ़ गया था इसलिये जब यू० पी० का पहला जत्था जिसमें डा० जी० के० जैतली श्री योगेश चन्द्र चटरजी, भुसावल केस के श्री भगवानदास माहुर; कानपुर शूटिंग केस के श्री हलधर बाजपेयी कम्यूनिष्ट पार्टी के डा० महमूद और डा० अहमद भी थे। आया तो मेजर क्रेस्टर और असि० मैकरेडी ने इन लोगों पर भी वैसा ही रुआब जमाना चाहा।

उन्होंने आरम्भ में चन्द कम्यूनिष्टों की जामा तलाशी ली यहां तक कि नंगा करके। मगर जब अन्य क्रांतिकारियों को इस बात का पता लगा कि तम्बू के अधिकारी इस प्रकार की कार्यवाही कर रहे हैं तो उन्होंने इसका सख्त विरोध किया और यहाँ तक तत्पर हो गये कि चाहे मारे जावें मगर इस प्रकार तलाशी नहीं देंगे। उनके इस इरादेके सामने अधिकारी झुक गये और जिस्मानी तलाशी लेना रोक दिया।

इसके प्रतिकार स्वरूप गोरे अफसर ने अपना उभड़ा हुआ क्रोध

दूसरी प्रकार निकालना चाहा उसने हुक्म दिया कि अपना अपना सामान उठाकर कमरों तक ले चलिये। चूँकि कम्यूनिस्ट पार्टीके लोग कि जिनका बहुमत था वह कांग्रेस सोशलिस्ट डा० जी० के० जैतली तथा काकोरी केस के श्री योगेशचन्द्र चटर्जी के नेतृत्व को स्वीकार कर चुके थे उनसे अलग होने से डर रहे थे। अगर ऐसा न होता तो बहुत सम्भव था कि वे अपने सिर पर बोझा उठाकर ले जाते। डा० जी० के० जैतली तथा योगेशचन्द्र चटर्जी ने तय किया कि चाहे हमारा जो कुछ भी हो हम न तो यहां से सामान अपने सिरपर लेकर ही जाएँगे और न ऐसी अरक्षित हालत में यहां छोड़कर ही जायेंगे। इसको अन्य लोगों ने भी जान लिया और उसका साथ देने को तैयार रहे।

चुनाँचे ये सब नज़रबन्द दस बजे सुबह से लेकर शाम तक उसी तलाशी घर में पड़े रहे, भूखे प्यासे—मगर इन्होंने अपने इरादे को न बदला मेजर क्रेस्टर ने इनको बड़ी बड़ी धमकियां दीं और चारों ओर से सँगीनधारी सेना से उनका मुहासरा करा दिया। और कहा कि आपको इसी प्रकार यहां पर ही पड़ा रहना पड़ेगा अन्यथा अपना बोझा स्वयँ लेकर जाओ। बन्दी दृढ़ता के साथ हर खतरे का मुकाबला करने के लिये तैयार थे। अतः इन लोगोंकी साबित कदमी से बूढ़े मेजर को विश्वास हो गया कि ये हिन्दुस्तानके मज़बूत सिपाही हैं इन्हें हम झुका नहीं सकते। इसलिये शाम को आकर उन्होंने समझौता किया कि हम लारी से कमरे तक सामान पहुंचा देंगे वहां से आप लोग अपने अपने कमरों में रख लेना। इसपर भी डा० जी० के. जैतली तथा श्रीयोगेशचन्द्र चटरजी तैयार न थे लेकिन कम्यूनिस्टों ने बहुत आग्रह के साथ कहा कि हमारी माँग पूरी हो गई है। हमको

अब अधिक अपनी ज़िद न करनी चाहिये। कम्यूनिस्टों के इस आग्रह पर साथी लोगों ने मेजर की यह बात मान ली और तम्बू में प्रवेश किया।

इन लोगों के प्रतिरोध ने मेजर क्रेस्टर के दिमाग़ पर ऐसा प्रभाव डाला कि वह फिर बहुत ही सोच समझकर आज्ञा देने लगा क्योंकि उसको भय रहता था कभी हमको ही झुकना न पड़ जाय और इस प्रकार हमने जो अपना आतङ्क जमा रखा है कभी उसका ही दीवाला न निकल जाय। इन लोगों के बाद जो जत्थे यहां आये उन सबका सामान कैम्प अधिकारी स्व र वहीं पहुंचवा देते थे और इस प्रकार की कोई बाधा उपस्थित न करते थे।

रेगिस्तान पास होने के कारण यहां का जलवायु गर्म और शुष्क था। जो ज़रा देर में गर्म, ज़रा देर में ठण्डा और ज़रा देर में आर्द्र हो जाता था। इस कैम्प से पहाड़ियों का सिलसिला खूब दिखाई देता था। उनकी प्राकृतिक छटा बड़ी मनोहर और आकर्षक थी। उसके सौन्दर्य में तो सोने में सुहागा उस दिन हुआ जब आकाश में काले बादल घिर आये और वर्षा आरम्भ हो गई बादलों से गिरती हुई बूंदें मोतियोंकी लड़ी पिरो रही थीं। सूर्य भी चमक रहा था इसलिये काली पहाड़ियों और काले बादलों के बीच यह आदान-प्रदान बड़ा ही मन मोहक था। हम सब खड़े उस सौन्दर्य का पान कर रहे थे। इस दृश्य को कभी भी न भूलेंगे।

यहाँ पर मलेरिया का बड़ा ज़ोर था। बड़ा मोटा मच्छर होता था—ठीक छोटी मक्खी के बराबर। इसलिए जिसको यह एक बार पकड़ लेता था —क्या मजाल थी जो इसके शिकंजे से फिर छूट सके

बड़े बड़े स्वस्थ बन्दियों के इसने टखने ढीले कर दिये थे। उनका बुरा हाल था। कोनेन भी फेल हो गई थी इस दृष्टिकोण से भी यह स्थान महा भयंकर था। मुझको तो वहाँ पहुँचने के दो तीन दिन के बाद ही बड़े ज़ोर का हैजा हो गया था जो शीघ्र ही सावधानी से रहने के कारण और एसेन्शेल आइल मिक्श्चर के प्रयोग से ठीक हो गया—मगर कष्ट कम नहीं उठाना पड़ा।

यहां पर अधिकांश समाजवादी एलीमेन्ट था जो ईश्वर की सत्ता में क़तई विश्वास नहीं करते उसको धोखे की टट्टी और मज़हब को अफीम का नशा समझते हैं। दो एक जो यहाँ पर ईश्वरवादी थे उनका अस्तित्व अलग ही मालूम होता था।

तीनों कैम्पों में सब पार्टियों के प्रतिनिधियों की एक एक कैम्प कमेटी थी जो व्यवस्थित रूप से कैम्पों में अपनी हलचल करती थी और कैम्प अधिकारियों से केवल वही कमेटी बात करती थी प्रत्येक व्यक्ति को अपनी टांग अड़ाने की ज़रूरत न थी। कई बार अधिकारियों से झगड़े करने पड़े यथा स्थान उनका वर्णन किया जायगा।

देवली के भीतर

देवली कैंप में फ्रांटियर, पञ्जाब, यू०पी०, देहली, बिहार, मद्रास और बम्बई प्रांत के नजरबन्द रखे गये थे, जिनमें अधिकांश कम्यूनिस्ट थे। एक प्रकार से ऐसा जान पड़ता था कि यह कैंप कम्यूनिस्टों की सुरक्षा के लिए ही बनाया गया है। देवली में पहुँचने के पहले हिन्दुस्तान के कम्यूनिस्टों का देशमें एक अच्छा स्थान था। यह महत्ता गवर्नमेंट ने इसको गैरकानूनी करार देकर प्रदान की थी इसलिये पढ़े लिखे नवयुवकों का झुकाव इस दल की ओर बढ़ता सा दिखाई दे रहा था। किसान मजदूरों की सामूहिक क्रांति कराने के बारे में; पुराने क्रांतिकारियों को भी अधिकांश इसी झंडे के नीचे लाकर खड़ा कर दिया था।

लेकिन मेरठ षड़यंत्र केस से लेकर देवली पहुँचने तक इस दलने भारतीय राजनैतिक मञ्चपर कोई भी ऐसा महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया था जो जनता के आकर्षण का केन्द्र होता। बल्कि भारतीय आजादी की लड़ाई के दौरान में जब २ बलिदान और कष्ट सहन का समय आया तो इन बाबू राजनीतिज्ञों ने अपने आपको पीछे हटा लिया।

इसका कारण मोशिये स्टेलिन की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक पालिसी थी जो कि तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ (Third International) को रूस की आवश्यकतानुसार सञ्चालन करने लगे थे। इसलिए तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ मोशियों स्टेलिन के नेतृत्व में अन्तर्राष्ट्रीय क्रांति का केन्द्र नहीं रह गया था केवल रूसी सरकार के विदेशी विभाग का दफ्तर। बाहर के कम्यूनिस्ट जो इस दफ्तर से संचालित हो रहे थे कम्यूनिस्ट न रहकर स्टेलिनवादी हो गये थे। यह पार्टी दिन प्रति दिन भारतीय जनता में अपना प्रभाव बढ़ाने की अपेक्षा अपना प्रभाव खोती जा रही थी। क्योंकि इस पार्टी ने भारतके सबसे बड़े लोकप्रिय राजनीतिक मञ्च (कांग्रेस) को अपने पत्र और व्याख्यानों द्वारा बुरा भला कहना आरंभ कर दिया था। और उसको पूंजीवादियों के सङ्गठन के नाम से बदनाम कर रही थी। भारतीय जनता को इनकी वेष भूषा और बेसुरे रागने असमंजस में डाल दिया और वह इनके नेतृत्व को सन्देह की दृष्टि से देखने लगी। इसी मनोवृत्तिको लेकर कम्यूनिस्ट पार्टी ने देवली के कैंप में अपने सङ्गठन को मजबूत करना आरम्भ कर किया था।

सबसे पहले देवली में पन्जाब के नजरबन्द भेजे गये थे। इनमें से अधिकांश कम्यूनिस्ट, कीर्ति पार्टी और बब्बर अकाली पार्टी के सदस्य थे इन्हीं में पंजाब के बन्दी भी थे जिन्होंने थोड़े दिन पहले मांटगोमरी जेल में ६६ दिन की भूख हड़ताल की थी और सिकन्दरहयात की सरकार के खिलाफ मोर्चा लगाया था। इन्होंने यह भूखहड़ताल अपने भोजन भत्ते को बढ़ाने के लिए की थी। लेकिन इनकी इतनी बड़ी हड़ताल भी असफल रही और सिकन्दर हयातखाँ की निरंकुश

सरकार को जरा भी न झुका सकी। थोड़े दिनके बाद पंजाब सरकार ने इनको देवली भेजकर भविष्य में भूख हड़ताल रोकने का उपक्रम किया। इनको यहां पर चार आने के बजाय ६ आने दिया जाने लगा और इस प्रकार उसने अपने कर्तव्य की इतिश्री कर डाली।

इन बूढ़े सिपाहियों को देवली के गोरे अफसर अपमानित कर रहे थे। और उनकी क्रांतिकारी मनोवृत्तियों को हर प्रकारसे नष्ट कर देना चाहते थे। इनमें से अधिकाँश बी० क्लास पाये हुये और थोड़े से ए० क्लास में थे, ये वही बन्दी थे जिनको देवलीके गोरे अफसरोंने तलाशी घर से अपने कैंप के कमरों तक अपना बोझा ढोने के लिए विवश किया था। और ये पंजाब के बूढ़े क्रांतिकारी कुछ दिनों तक मेजर केस्टर के आने पर फौजी सिपाहियों द्वारा पकड़वा कर खड़े कराये जाते थे। इन बहादुर सिपाहियों के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना था क्योंकि इनमें से जो बहुत बजुर्ग थे वे गदर पार्टी के पुराने नेता या सदस्य रह चुके थे। प्रथम साम्राज्यवादी युद्ध में इन्होंने बृटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति का आयोजन किया था। जिनमें से कई एक को गोली के घाट उतरना पड़ा था — कई एक को काले पानी की सजा खानी पड़ी थी। अब इन लोगों ने गदर पार्टी का नाम त्याग कर किसान कीर्ति पार्टी के नाम पर अपना सङ्गठन बना लिया था। इनका स्वयं एक कीर्ति नामका पत्र था। इनको बाहर के रहने वाले सिक्खों से काफी सहायता मिल रही थी। फिर भी ये पञ्जाब में निष्क्रिय और बिला प्रभाव के रहते थे। इनके अन्दर गदर पार्टी के समय का न वह जोश था और न वह क्रांतिकारी मनोवृत्ति। इसका कारण पञ्जाब की कम्यूनिस्ट पार्टी थी। क्योंकि कीर्ति

पार्टी ने अपनी पार्टी के संचालन को स्वतंत्र रखते हुए भी कम्यूनिस्ट पार्टी का नेतृत्व स्वीकार कर लिया था। ये कम्यूनिस्टों को अपना नेता और राजनीतिक गुरू समझते थे। जिसका परिणाम यह हुआ था कि कर्मठ, क्रियाशील पंजाब के बहादुर क्रांतिकारी आराम तलब बाबू राजनीतिज्ञ (जो कि कमरे में बैठकर बहस या परचों के द्वारा क्रांति करते रहते हैं) बन गये थे। कम्यूनिस्टों ने बहुतों के केश कटवा दिये थे और दाढ़ी मूंछ भी मुंडवा दिये थे और इन्होंने मार्क्सवाद को एक मजहब के तौर पर मानना आरम्भ कर दिया था।

इन पंजाब के आये हुए लोगों में एक छोटा सा ग्रुप जो कि बब्बर अकाली पार्टी का था और जिसके नेता बूढ़े सजीव क्राँतिकारी सरदार सोतासिंह थे अपने विचारों में ऊंचे और क्रियाशील थे उनको सही रहनुमाई मिलने पर देश की आजादी की लड़ाई में कोई पीछे नहीं देख सकता था। वे एक आदर्श व्यक्ति थे उन्होंने इस समय तक भारत की विभिन्न जेलों में नौकरशाही से लड़ते २ बाल सफेद कर लिये थे और जीवन का बहुत बड़ा भाग इन्हीं जेलों में काटा था। बड़ी २ भूख हड़तालें की थीं। और जेल की नाना प्रकार प्रकार की अनेक यातनायें झेली थीं उनका त्याग और साहस अपना सानी नहीं रखता था। वे इस कैंप की एक विभूति थे। उनके ऊपर कैंप को गर्व था।

जिस समय कम्यूनिस्ट देहली मे पहुंचे थे उस समय रूस और जर्मनी का एक दूसरे पर हमला न करने की (अनाक्रमण) सन्धि (No Aggresive Pact) चल रही थी। इसलिए कम्यूनिस्ट फासिस्ट जर्मनी की विजय पर प्रसन्न होते थे जो इनके सिद्धांत के

सर्वथा विपरीत था । वे अपना कैंप जीवन निष्क्रिय और अपमान-जनक तौर पर ही बिता रहे थे उन्होंने आत्म-सम्मान को अपने थोड़े से 'सुख वैभव की वेदी पर बलिदान कर दिया था'। खरबूजे को देखकर खरबूजा रङ्ग पलटता है इसका प्रभाव दूसरे व्यक्तियों पर भी आत्मघाती पड़ रहा था चुनांचे गोरे अफसरों के आने पर लोग खड़े हो जाते थे और उनको सलाम इत्यादि करके बड़ी चापलूसी दिखाने लगे थे । इस प्रकार की शै पाकर खूंख्वार गोरे अफ़सर बन्दियों को दबाने और उनकी क्राँतिकारी मनोवृत्तियों को पीस देने के लिए निरन्तर प्रबल चेष्टा कर रहे थे । और उनकी सीमित सुविधाओं को उत्तरोत्तर छीनने लगे थे । एक प्रकार से यह क्राँतिकारियों के पतन की पराकाष्ठा थी । जो कई क्राँतिकारियों को कांटे की तरह खटकने लगी । इसलिए उन्होंने इसके प्रतिकार का निश्चय करने के लिए सारे कैंपकी एक मीटिङ्गकी तो इनके लीडरने इसमें घोषणा की कि हमलोग अपना समय शांतिपूर्वक केवल पढ़ने लिखने में लगाना चाहते हैं । इस कैंप में किसी प्रकार का झगड़ा मोल लेना नहीं चाहते । मगर जब उनको यह समझाया गया कि अगर इसी प्रकार जेलवालों का रवैया चलता रहेगा तो ये हमको इतना दबाते चले जायेंगे कि शान्ति-पूर्वक रहना कठिन हो जायगा और अन्त में पिछले कैंप की तरह यहाँ के दुष्परिणाम भुगतने पड़ेंगे । इससे भयभीत हो कर उन्होंने केवल इसलिए कमेटी में रहना स्वीकार कर लिया कि हम नाम मात्र के लिए रहेंगे मगर जो कुछ करना धरना होगा वह दूसरे व्यक्ति करेंगे ।

दूसरे क्रांतिकारियोंने इसको ही गनीमत समझा और किसी प्रकार

नीचे लिखी कमेटी बनाकर कैंप अधिकारियों के उस बढ़ते हुए हौसले को रोका ।

१—श्री प्रो० सरदार मोतासिंह नेता बब्बर अकाली पार्टी पंजाब ।
२—श्री डाक्टर जी० के० जैतली कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी यू० पी०
३—श्री योगेशचन्द्र चटर्जी काकोरी केस यू०पी० ।
४ श्री डाक्टर जैड अहमद कम्युनिस्ट यू०पी० ।
५—श्री महमूद ज़फ़र कम्युनिस्ट यू०पी० ।

इस कमेटी के संयोजक श्री डाक्टर जी० के० जैतली बनाए गए ।

कम्युनिस्टों की इतनी संख्या होने पर भी उनके कारनामे राजनीतिक दृष्टिकोण से अधिक भद्दे थे । उन्होंने अपनी ड्रिल और झंडा प्रार्थना–सारा संसार हमारा है इत्यादि करना आरम्भ किया । मेजर ने इनको ऐसा करने से रोका उन्होंने फौरन ही बिना किसी ननुनच के उनके इस आदेश का पालन किया और झण्डा प्रार्थना बिलकुल बंद कर दी इससे मेजर पर यह प्रभाव पड़ा कि हम कम्युनिस्टों से चाहे जो कुछ करा सकते हैं ।

कम्यूनिस्टों में एक कमी और खटकती थी वे केवल अपनी पार्टी के लोगों के ही सुख दुःख में शामिल रहते थे शेष दूसरे बंदियों के सुख दुःख से उनको कोई सरोकार ही न था । यदि किसी के साथ वे हमदर्दी दिखलाते भी थे तो इस भावनासे प्रेरित होकर–कि वह राजनैतिक विचारोंमें कमजोर है, हम उसको अपनी पार्टी में ले सकते हैं । यदि उसको यह आशा हो जाती थी कि यह हमारी पार्टी में भर्ती नहीं हो सकता तो उसको फिर दूध में से मक्खी की तरह निकाल फेंकते थे । उनके इस स्वार्थी जीवन ने देवली के दूसरे क्रांतिकारियों

को सतर्क रहने का संकेत कर दिया था। इसलिए अन्य राजबन्दी अपने को मज़बूत बनाने के लिए कांग्रेस समाजवादी दल के सङ्गठन में,जिसका कि संचालन डाक्टर जी०के० जैतली कर रहे थे,सङ्गठित हो गये। इस प्रकार देवली कैंप में तीन राजनीतिक खीमे लग गये। एक कम्यूनिस्टों का जो कि सबसे बड़ा था—लेकिन था निष्क्रिय।

दूसरा खेमा था, किसान कीर्ति पार्टी पंजाब का — जिन्होंने कम्यूनिस्टों के राजनीतिक नेतृत्व को स्वीकार कर लिया था। और जो कम्यूनिस्टों के पद-चिह्नों पर ही अनुशासन के नाते चलने पर विवश थे। तीसरा खेमा जो सबसे छोटा और सबसे अधिक क्रियाशील था। वह कांग्रेस सोशलिस्टों का सङ्गठन था। इस खेमे के साथ R.S.P., H.S.R.A. फार्वर्ड ब्लाक और अन्य स्वाभिमानी स्वतंत्र लोग चल रहे थे। यही एक खेमा है जिसने देवली में बृटिश साम्राज्य के अत्याचारों का मुकाबला बड़ी मुस्तैदी से किया और प्रत्येक राजबन्दी को सुविधा दिलाने में कष्ट सहा। इन लोगों ने हिंदुस्तान में होने वाली परिस्थितियों पर विहङ्गम दृष्टी रक्खी और आवश्यकतानुसार बृटिश साम्राज्यविरोधी मोर्चे को दिन प्रति दिन मजबूत बनाने का प्रयत्न किया। शिक्षा के लिए क्लासेज़ की आयोजना की और सामाजिक जीवन को ऊँचा उठाने के लिए भररूक प्रयत्न किया।

अधिकारियों से भिड़न्त—

कैम्प नं० १ में देहरादून के रहने वाले शत्रुघ्न कुमार एक नवयुवक राजबन्दी थे। उनको सख्त बुखार हो गया, जिससे उनको बड़े कष्ट का सामना करना पड़ा। बेहोशी की हालत में अनाप शनाप बकने लगे। साथियों को बड़ी चिंता हुई, सब दौड़ दौड़कर सेवा सुश्रुषा करने लगे। इतनी दूर, एकान्त स्थान में—सिवाय अपने इन साथियों के और कौन देख भाल करे? माता, पिता, स्त्री, बेटे सब कुटुम्बी जन हजारों मील की दूरी पर थे। केवल, यही साथी इन सबके अभाव की पूर्ति करते थे इसीलिये पारस्परिक सम्बन्ध इस आपत्ति काल में अत्यन्त गहरे हो गये थे। बुखार कम करने की दवाइयें अस्पताल से मँगा ली गई थीं और यह आशा की जा रही थी कि शाम तक बुखार अवश्य ही कम हो जायगा। मगर यह मामूली मलेरिया न था—बड़ा ही विकट था, इसलिए वह शाम तक ज़रा भी कम न हुआ बल्कि और बढ़ गया। जिसमें सब दवायें फेल हो गयीं। जब रोगी का रोग बढ़ता दिखाई दिया तो कैम्प डाक्टर को सूचना देनी आवश्यक थी। उनको बुलाया गया।

डाक्टर बैरकमें आये। सब राजबन्दी रोगीकी हमदर्दीमें उपस्थित थे। वहीं डाक्टरने आतेही हुक्म दिया कि रोगीको अस्पताल भेजा

जायगा। बन्दियोंने डाक्टरसे दरख्वास्तकी कि अस्पतालमें रोगीके साथ एक राजबन्दी बतौर तीमारदार के जायेगा। मगर इस निरंकुश डाक्टर को इस प्रकार का अपनी ओर से किया गया हस्तक्षेप बहुत ही बुरा लगा वह अकड़ कर बोला—दूसरा बन्दी कोई नहीं जा सकता। इसपर बन्दियोंने रोगी को वहाँ जानेसे रोक दिया। डाक्टर ने जो बृटिश शान को लिये हुए कैम्पमें घूमता था। इस प्रकार बन्दी का रोका जाना अपना भयङ्कर अपमान समझा वह आपे से बाहर हो गया और दौड़कर बाहर निकल गया।

और कुछ देर के बाद फिर आया इस बार वह अकेला न था। उसके साथ डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट मैकरेर्डी—स्ट्रेचर और दूसरे लोग थे। उसने क्रोधोन्मत्त होकर स्ट्रेचर वाहकों को आर्डर दिया कि रोगी को जबरदस्ती उठाकर स्ट्रेचर पर डालो और अस्पताल ले चलो। गोरे अफ़सर ने भी कैम्प अधिकारी की शान की रक्षा में—डाक्टर के इस गलत रवैये का जोरदार समर्थन किया और कहा कि हम रोगी को जबरदस्ती अवश्य ही ले जायेंगे। इस पर राजबन्दियों को बहुत ही रोष आया वे रोगी को जबरदस्ती रोककर खड़े हो गये और कड़क कर बोले—जिस समय तक रोगी के साथ हमारा कोई साथी सेवा सुश्रुषा करने के लिये नहीं आवेगा हम हरगिज रोगी को अस्पताल नहीं जाने देंगे। इसमें राजबन्दियों का कोई दुराग्रह न था बल्कि एक उचित माँग थी। क्योंकि राजबन्दियों का अनुभव था। पहिली बार श्रीयोगेशचन्द्र चटर्जी के एक नौजवान रिश्तेदार की इसी कैंप में—इन्जक्शन देने से तत्काल मृत्यु हो गई थी। काले पानी से लौटे हुए राजबँदी कह रहे थे कि काले पानी की भूख हड़ताल में,

वहां के कैंप डाक्टर ने अनुभव-हीनता के कारण फोर्स फीडिङ्ग करते समय रबड़ की नलीको पक्वाशय में न छोड़कर गलतीसे श्वासनली में छोड़ दिया था जो फेफड़े में पहुंच कर बंदियों की तत्काल मृत्यु का कारण हो गई थी। इसलिए डाक्टरों की लापरवाही के कारण राज-बंदी बहुत डरते थे। दूध का जला हुआ मट्ठे को भी फूंक मार मार कर ही पीता है।

• डाक्टरों की नातजुर्बेकारी और लापरवाही से कितने बंदियों की जानें गयीं हैं। उसका हिसाब लगाना बहुत कठिन है क्योंकि प्रत्येक कैंप और जेल में बन्दियों की आकस्मिक मृत्यु के अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं। इसी कारण से साथियों ने रोगी को डाक्टर के रहम पर छोड़ना नामुनासिब समझा और अपने एक साथी को साथ भेजने की जबर्दस्त मांग की जो सर्वथा उचित और न्याय-सङ्गत थी। मगर राज-बन्दियों के इस इसरार से गोरे अफसर मैकरेडी और देसी साहब डाक्टर, जलते तेल के बेंगन हो गये और बन्दियों की बात को साफ़ कन्नियों से उड़ा गए। बल्कि उसके प्रत्युत्तर में रोगी को जबर्दस्ती स्ट्रेचर पर लादकर अपनी निरंकुशता और स्वच्छाचारित्व की परा-काष्ठा दिखाने लगे। इस अवहेलना पर बन्दियों के स्वाभिमान को जबर्दस्त ठेस पहुँची। उनके क्रोधकी ज्वाला प्रज्वलित हो उठी उन्होंने गोरे अफसर और देसी साहब को ललकारा कि बगैर मरे या मारे आप हमारे साथी को अस्पताल नहीं ले जा सकते। उन्होंने रोगी को पकड़ लिया और फिर गोरे साहबकी ओर लपके। गोरे साहबके हाथों के तोते उड़ गये सारा शरीर पसीनेसे तर हो गया उसकी बुरी हालत थी। उसने अपनी झेंप मिटाते हुए डाक्टर जी० के० जैतली (जो

रोगी के उपचार में लगे हुये थे) से अनुरोध किया कि मैं बहुत घबड़ा गया हूँ, मेरे पीने के लिये एक सिगरेट दीजिये। और साथ ही वह सामने की चारपाई पर ऐसा घबड़ा कर बैठ गया जैसे बंदियों से प्राणों की भिक्षा मांग रहा हो। कुछ सोचने के बाद वह बोला — कि मैं रोगी को इस समय नहीं ले जाऊंगा, कल सुबह देखा जायगा। इसके बाद गोरा अफसर और डाक्टर सिर झुकाकर कैंप से बाहर निकल गये। ———रात भर रोगी की सेवा सुश्रुषा कैंप के राजबंदी डाक्टर और साथियों ने की। प्रातःकाल ८ बजेके लगभग सुपरिंटेन्डेंट मेजर क्रेस्टर, डि० सु० मैकरेडी और सङ्गीनधारी फौजियों के साथ कैंप में आ धमके। उनको देखकर बंदियों में सनसनी फैल गई। क्रांतिकारियों को लड़ाई की गंध मिल गई। वे भी भिड़ने के लिए सतर्क हो गये, क्योंकि वे जानते थे कि सैनिक टुकड़ी के आने का मतलब है — रात के अपमान का प्रतिशोध। आते ही डाक्टर ने आर्डर दिया कि मरीज को स्ट्रेचर पर उठाओ और ले चलो। रात वाले बन्दी रोगी के अगल बगल खडे हो गये। और कहा—कि रोगी बिना एक बन्दी सहायक के नहीं जायगा। इसपर सुपरिन्टेन्डेंट मेजर क्रेस्टर ने गम्भीर स्वर से आर्डर दिया कि राजबंदी जिस बैरक के हैं, उसमें चलें जायँ। और बैरक में ताला लगा दिया जाय। खतरे की घंटी भी बजाने का हुक्म दे दिया।

जेलों में जिस समय कोई ख़तरा होता है तो कई घंटे बजने लगते हैं जिससे जो भी जेल का व्यक्ति जिस दशा में जहाँ होता है वहाँ से उसी दशा में खतरे के स्थान पर दौड़कर आता है और थोड़ी ही देर में वह स्थान टिड्डीदल की तरह उनसे छा जाता है। इस

प्रतिक्रिया को जेल में पगली कहते हैं। लेकिन इस युद्धबंदी कैम्प में इस प्रकार के घंटे नहीं बजते थे यहाँ होता था फौजी बिगुल का नाद। बिगुलर ने खतरे का बिगुल बजा दिया। देवली का मैदान गूँज उठा। संगीनधारी फौजी सिपाही गोली चलाने के लिये अपनी अपनी जगह पर बिखर गये और राइफिलका घोड़ा दबाने की प्रतीक्षा करने लगे। यह देवली कैम्प की पहली पगली थी।

इधर तो सैनिक युद्ध के लिए सुसज्जित हो रहे थे। उधर राजबंदियों में से क्राँतिकारी लोग बैरक से निकल कर रोगी के पास गोली का सामना करने के लिए एकत्र होने लगे थे। कांगरेस सोशलिस्ट संगठन के साथ चलने वाले बन्दी इस निर्भीकता से फौजी टुकड़ी के भीतर से गुजर कर जा रहे थे जैसे बृटिश ताकत की अवहेलना करके इसे खुली चुनौती दे रहे हों। दूसरी तरफ कम्यूनिस्ट अपनी कमजोरी और दूरदर्शिता का जबर्दस्त परिचय दे रहे थे जबकि बैरकों में बंद होने के लिए तेजीसे भाग रहे थे और अपने साथियों के अतिरिक्त अन्य बढ़ते हुए राजबंदियों को भी समझा रहे थे कि इस हुल्लड़ में मत शामिल होइये। लड़ने वालों के आगे सरदार मोतासिंह, डा० जी० के० जैतली और श्री योगेशचन्द्र चटर्जी खड़े हुए थे। और जेल के अधिकारियों से दृढ़तापूर्वक कह रहे थे कि आप बगैर एक साथी के रोगी को अस्पताल नहीं ले जा सकते। यदि हमारी उचित माँग की अवहेलना की गई तो हममें से प्रत्येक सब प्रकार के कष्ट सहने के लिए तैयार खड़ा है।

बन्दियों की दृढ़ता और तत्परता को देखकर अधिकारी झुक गए और उन्होंने विवश होकर एक साथी को रोगी के साथ जाने की इजा-

जत दे दी। रोगी अपने साथी के साथ अस्पताल को भेजा गया। खतरा दूर का बिगुल फिर बज गया। बैरकें खुल गईं। क्रांतिकारी अपनी विजय पर गर्व करते हुए अपनी २ बैरक की ओर बढ़े और कम्यूनिस्ट शरमिंदा से सिर नीचा किये हुए इधर उधर कोनोंमें काना फूसी करने लगे और युद्ध समाप्त हुआ।

उस समय से यह अधिकार स्वीकार कर लिया गया कि प्रत्येक रोगी के साथ एक तीमारदार अवश्य जायेगा। इसका अधिक से अधिक लाभ कम्यूनिस्टों ने उठाया। क्योंकि उनके अधिक रोगी अस्पताल में जाते थे और कभी २ एक के बजाय दो दो तीमारदार साथ ले जाते थे।

अधिकारियों से दूसरा संघर्ष—

जब जेल के गोरे अधिकारियों की निरंकुशता और स्वेच्छाचारिता दिन प्रति दिन बढ़ती जाने लगी और वे राजबंदियों को अपमानित करके अपना रौब जमाने के सुख स्वप्न देखने लगे तो इस स्थिति को समाप्त करने के लिए देवली राजबंदी प्रतिनिधि कमेटी ने मीटिंग करके यह तय किया कि कोई भी बंदी किसी अधिकारी के आने पर खड़ा न हो। वह अपने कमरे या क्लास में जिस प्रकार काम कर रहा है उसी प्रकार करता रहे। मगर कम्यूनिस्टोंने इसपर एक संशोधन पेश किया कि यदि जेल का उच्चाधिकारी क्लास में आवे तो प्रोफेसर को शिष्टाचार के नाते खड़ा हो जाना चाहिए। कमेटी के इन लोगों की कमजोरियों को समझते हुए इस संशोधन को इस रूप में स्वीकार किया—यदि किसी शिक्षककी इच्छा हो तो वह खड़ा हो सकता है।

कम्यूनिस्ट जो खुले आम क्लासें चलाते थे; इस प्रस्ताव के पास होते ही क्लास चलाने लगे। यही नहीं — उन्होंने समय तक बदल दिया। वह उस समय क्लास चलाने लगे जिस समय जेल सुपरिन्टेन्डेंट के आने का समय न हो ताकि वह जेल अधिकारियों की मुठभेड़ से बच जायें। लेकिन गोरे अधिकारी जो बृटिश शासन के अनुभवी और मँजे खिलाड़ी थे कम्यूनिस्टों की इस नीति को अच्छी प्रकार समझते

थे। उनका यह विश्वास था कि हम कमजोर कम्यूनिस्टों को इस पथ से विचलित कर सकेंगे और उसके बाद दूसरे लोगों को दबा लेने में सुगमता हो जायेगी। इसलिए मेजर क्रेस्टर ने अपना आने का पहला समय बदल दिया और पूरा पता लगा कर उसी समय आना प्रारम्भ कर दिया कि जिस समय कम्यूनिस्ट अपनी क्लास चलाते थे।

मगर मेजर क्रेस्टर को पहली बार बड़ा धोखा हुआ उसको सिर मुंडाते ही ओले पड़े। वह एक ऐसी क्लास में घुसा जिसमें सोशलिस्ट नेता डा० जी० के० जैतली हैल्थ और हाईजिन की क्लास ले रहे थे। मेजर क्रेस्टर के क्लास में घुसने पर किसी ने जरा भी परवाह न की और शिक्षक महोदय अपनी कुर्सी पर बैठे उसी प्रकार पढ़ाते रहे। तब मेजर साहबने क्लासमें खड़े होकर बड़ी भद्रतासे कहा-इँगलैंड में यह कायदा है कि जब कोई अतिथि किसी स्कूल की क्लास में आता है तो शिक्षक और विद्यार्थी उसके स्वागत में खड़े हो जाते हैं। इतना कहकर मेजर साहब क्लास से बाहर चले गये और यह जानने के लिए उसी समय वापिस लौटे कि देखें बंदियों के ऊपर मेरे उपदेश का क्या प्रभाव पड़ा है? मगर मेजर साहब के घुसने पर बंदी उनके इराने को समझ गये। वह खड़ा होने के बजाय अट्टहास मारकर हँसने लगे। मेजर साहब का मुँह ज़रा सा हो गया वह असह्य अपमान की कड़वी घूँट पीकर चुपचाप बाहर निकल गये।

मेजर साहब ने समझा कि उनका पहला क़दम ग़लत उठा। क्योंकि जिस क्लास में वह पहुंचे थे उसमें कांग्रेस समाजवादी दल के वह विद्यार्थी बैठे हुए थे। जो सच्चे क्रांतिकारी थे और जिनको ऐसे

कई मेजरों की ज़रा भी परवाह न थी। मेजर साहब को इस घोर अपमान का बदला चुकाना था — वह बदला चुका भी सकते थे तो कम्यूनिस्टों से। इसलिए उस समय तो वह चले गये। दूसरे सप्ताह मौका की तलाश करते हुए वह कैंप में घुसे। कम्यूनिस्टों की एक छोटी सी क्लास, उनकी भोजनशाला में लखनऊ के मशहूर कम्यूनिस्ट नेता श्री मोहम्मद नक़वी साहब ले रहे थे। नक़वी साहब विद्यार्थियों से राय कर रहे थे कि यदि मेजर कैस्टर क्लास में तशरीफ लावेंगे तो मैं खड़ा हो जाऊंगा; आप लोग बैठे रहियेगा।

यह सदुपदेश शिक्षक का समाप्त भी न हो पाया था कि मेजर आ धमके। मेजर के साथ सूबेदार और संगीनधारी सिपाही भी थे। फौजी रुआब कम्यूनिस्टों पर ऐसा गालिब हुआ कि अपने शिक्षक के सदुपदेश को तुरन्त ही भूल गये। परिणाम यह हुआ कि विद्यार्थी और शिक्षक सभी खड़े हो गये लेकिन उन्हीं में कानपुर के रहने वाले एक पुराने क्रांतिकारी श्री हलधर वाजपेयी भी थे। कम्यूनिस्टों की कमजोरी देखकर उनको हार्दिक कष्ट हुआ। वह जूता पहनने के बहाने आधे ही खड़े हुए। मेजर आगे बढ़ गया लेकिन उसके दिमाग़ में पुनः ख़याल आया कि एक व्यक्ति उनमें से आधा ही खड़ा हुआ था वह अपनी पूर्ण विजय की कामना से फिर वापिस घूम पड़ा। और क्लास में वापिस आकर वाजपेयी जी से बोला — (you get up) (तुम खड़े हो जाओ) वाजपेयी जी जो कि पुराने क्रांतिकारी थे, लेकिन कम्यूनिस्टों के बीच जाकर अपनी धाक खो चुके थे खड़ा होने में हिचकिचाये — लेकिन मेजर के जोर देकर कहने पर — तुम खड़े

हो जाओ ! वह खड़े हो गये । मेजर अपनी पूर्ण विजय प्राप्त करने के बाद क्लास के बाहर निकल गये । कम्यूनिस्टों की इस कमजोरी का पता शायद किसी को भी न लगता, क्योंकि उनके और अधिकारियों के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति उनके साथ न था । अमर शहीद श्री सरदार भगतसिंह के भाई श्री सरदार कुलतारसिंह किसी कार्यवश मेजर के साथ में थे उन्होंने अपनी आँखों यह सब कमजोरी देखी और बाहर आकर सब साथियों से कहीं । कम्यूनिस्टों में एक शर्मिन्दगी का वातावरण छा गया और अन्य क्राँतिकारियों में खिन्नता । सबको यह अफसोस था कि इन कम्यूनिस्टों के साथ रहकर किस प्रकार स्वाभिमान की रक्षा होगी ? गैर कम्यूनिस्टों ने मेजर के इस रवैये को बहुत ही नापसँद किया और चाहते थे कि यह किसी प्रकार से रोका जावे । चुनांचे आपस में बराबर परामर्श होने लगा कि यदि अधिकारियों से; उनका रवैया ठीक करने के लिये लड़ाई भी लड़नी पड़े तो अवश्य लड़ी जायेगी । सबसे बड़ी समस्या थी, कम्यूनिस्टों को इस लड़ाई में सम्मिलित करने की जो कि बर्दाश्त करके अपने निष्क्रिय जीवन को बिताना चाहते थे ।

कम्यूनिस्टों की बदौलत फ्रेस्टर साहब का, बन्दियों के खड़ा कराने का प्रयास सफल होना दिखलाई देने लगा । फ्रेस्टर साहब प्रत्येक बैरक में घूम २ कर खड़े हो जाओ के आर्डर देने लगे । इस दौड़-धूप में, एक दिन जब वह राउण्ड पर पहुंचे तो कलकत्ते के श्री दयाराम बेरी अपनी चारपाई पर बैठकर एक पुस्तक पढ़ रहे थे । वह बेरी साहब की चारपाई घेर कर खड़े हो गये । मगर बेरी साहब ने उनकी ओर ताका भी नहीं अपना पढ़ने में लगे रहे । मेजरने हुक्म

दिया–you get up (खड़े हो जाओ) बेरी साहब ने कोई परवाह न की। तब मेजर ने उंगली से इशारा करके फिर अंग्रेजी में कहा–I see you get up बेरी साहबको इस अपमान-जनक आर्डर पर रोष आया और उन्होंने तड़क कर मेजर को उत्तर दिया कि आप मुझको एक उंगली से इशारा करके कहते हैं कि you get up (खड़े हो जाओ) मैं पांच की उँगली से कहता हूं no get up (बेरी साहब इंग्लिश कम जानते थे) मेजर का चेहरा गुस्से से सुर्ख हो गया। उनकी समझदारी ने उनकी सहायता की और उन्होंने अपने गुस्से को पी करके बंदी से पूछा––क्यों नहीं खड़े होगे ?

बेरी साहब ने बड़ी तत्परता से उत्तर दिया––मेरी कमेटी की आज्ञा है कि कोई राजबंदी जेल अधिकारियों के सामने खड़ा न होवे। इस प्रत्युत्तर से मेजर साहब के सम्मान पर काफी ठेस लगी। कमजोर कम्यूनिस्टों को खड़ा कराके जो उनका साहस बढ़ गया था–उस पर पानी पड़ गया। वह अपना सिर नीचा किये हुये, फौजी सिपाहियोंके साथ कैंप से बाहर ऐसे चले गये जैसे हारा हुआ सिपाही घर से लौट रहा हो। बेरी साहब के इस बहादुराने रवैये की खबर कैंप भर में गूंज गई और प्रत्येक साथी उनको इस दृढ़ता के लिए बधाई देने लगा।

एक तरफ तो लोग बेरी साहब की दृढ़ता पर बधाई दे रहे थे और दूसरी तरफ़ देवली की हाई कमाँड–इस बात पर गौर कर रही थी, कि यदि अधिकारियों ने बेरी साहब को अनुशासन भङ्ग करने के लिए दण्ड दिया तो उसके प्रतिकार में हम लोगों को गम्भीर लड़ाई

लड़ने की तैयारी करनी चाहिये । इस लड़ाई का उत्तरदायित्व कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संगठन पर अधिक था क्योंकि बेरी साहब उसी विंग के एक सदस्य थे । जान पड़ता था कि अधिकारियोंने अपना मोरचा बदल दिया है । क्योंकि उसके बाद उन्होंने कैंप में खड़ा करानेवाला निंदनीय रवैया रोक दिया था । और अपने इस मोर्चे को इक्के दुक्के कम्यूनिस्टों पर हमला करके पूरा करना चाहा । क्योंकि दूसरे ही दिन जेल अस्पताल में नवयुवक बैरिस्टर श्री रजनी पटेल जो इङ्गलैंड से हिंदुस्तान में आते ही—बम्बई के बन्दरगाह पर गिरफ्तार कर लिये गए थे, और जिन्होंने देवली में कम्यूनिस्टों के साथ अपना गठबंधन कर लिया था अस्पताल के अधिकारियों द्वारा अपमानित किये गए । वह अपने दांत की तकलीफ़ के लिए अस्पताल के दाँत विभाग में, चिकित्सा के लिए—दाँतवाली (Dental chair) कुर्सी पर बैठे हुए थे और दंतचिकित्सक उनके दाँतका निरीक्षण कर रहा था । इतने में एक अंग्रेज कैंप अफसर उस विभाग में आया; और अपने दांतकी चिकित्सा करानी चाही । दांत के डाक्टर ने रजनी पटेल से कहा- आप अब उस कुर्सी को खाली कर दीजिये मैं इस कैंप अफ़सर के दांत की चिकित्सा करूंगा ।

बैरिस्टर पटेल की चिकित्सा अभी आधी ही हो पाई थी । इसलिए, उन्होंने डाक्टर से अनुरोध किया— कि मेरी चिकित्सा तो पूरी हो जाने दीजिए । तब दूसरे की चिकित्सा आरम्भ कीजिए । लेकिन चिकित्सक ने उनकी एक भी न सुनी और उनको जबर्दस्ती कुर्सी से हटा दिया । नवयुवक बंदी, जो अभी इंगलैण्ड की स्वतंत्र हवा खाकर लौटा था, इस अपमान से कांप उठा । और अपने दर्द

भरे दिल को लिए हुए, कैंप में चला आया। उसने अपने बम्बई प्रान्त के कम्यूनिस्ट साथियों के सामने इस अपमान का वर्णन किया। बम्बई के कम्यूनिस्ट, जिनमें प्रमुख श्री रणदिवे, श्री डांगे और श्री मिराजकर थे। यू० पी० के कम्यूनिस्टों से अधिक लड़ाकू और क्रियाशील थे। साथ ही उनको यह भी ख़याल था कि पटेल साहब ने जो अभी पूरे कम्यूनिस्ट नहीं हुए हैं। यदि कांग्रेस समाज वादी संगठन के नेताओं के पास अपनी दुःख गाथा सुनाई तो वे इस घटना को पटेल की अवहेलना न समझकर समस्त बन्दियों की अवहेलना समझेंगे। और अधिकारियोंके इस उछृङ्खल और लज्जास्पद रवैये को दूर कराने के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने को तैयार हो जायेंगे।

बंबई के कम्यूनिस्टों ने अपनी दूर दर्शिता दिखाई उन्होंने स्वयं ही कांग्रेस समाजवादी दलके नेता से बातचीत की और कहा--कि पटेल का जो अपमान हुआ है इसका प्रतिकार अवश्य होना चाहिए। इसके लिए कम्यूनिस्ट पार्टी का प्रत्येक साथी आपके साथ इस प्रकार का कष्ट सहन करने को तैयार है। कांग्रेस समाजवादी नेता जो अधिकारियों से मोर्चा लेने के लिए गम्भीरता पूर्वक सोच रहे थे (क्योंकि वेरी साहब पर अनुशासनभंग की कार्यवाही होने का उनको अन्देशा था) कम्यूनिस्टों के स्वयं ही लड़ाई में शरीक होने के इरादे से प्रसन्न हो उठे। यह आकस्मिक सहायता उनकी इस समस्या को हल करने के लिए उपयोगी सिद्ध हुई।

सारे कैंप के समस्त राजबंदियों में यह ख़बर फैल गई कि अधिकारियों के बढ़ते हुए दुर्व्यवहारों को रोकने के लिए—एक

संयुक्त लड़ाई छेड़ी जायगी। राजबन्दी प्रतिनिधि कमेटी की बैठक फ़ौरन बुलाई गयी और मीटिंग की कार्यवाही अत्यन्त ही गुप्त रखी गयी। इस मीटिंग में सलाह के लिए, कैम्प के कुछ और भी ज़िम्मेदार व्यक्ति बुलाये गये थे जिनकी बहुमूल्य सम्मति काफ़ी सम्मान के योग्य थी। लड़ाई का कौनसा तरीक़ा अख्त्यार किया जाय ? इसपर प्रतिनिधियोंकी अलग अलग राय ली गयी। श्रीयोगेश-चन्द्र चटर्जी ने राय दी कि जेल में कोई भी लड़ाई लड़ी जाय उसका अन्तिम परिणाम भूखहड़तालही होता है। यदि हम बैरकोंमें बंद होनेसे इंकार करें तो भी अन्त में लड़ाई वहीं पहुंचेगी। इसलिए हमको लम्बी भूख हड़ताल के लिए तैयार होकर लड़ाई छेड़नी चाहिए। इस बात का अनुमोदन प्रतिनिधि कमेटी के कई मेम्बरों ने किया। परंतु कम्यू-निस्टों ने भूख हड़ताल को लड़ाई कहकर मजाक उड़ाया और कहा— यह भी कोई लड़ाई का तरीका है ? बम्बई के जिम्मेदार कम्यूनिस्टोंने पेश किया कि हमको सीधी लड़ाई लड़ने का रास्ता अपनाना चाहिये प्रश्न किया गया कि सीधी लड़ाई के लिए हथियार की आवश्यकता पड़ती है। वह कैंप में मिल नहीं सकते; और न ऐसी लड़ाई कैंप के अन्दर हो ही सकती है। प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा—जमीन खोदने, खेती बाड़ी इत्यादि करने के जो भी औज़ार प्राप्त हों वे सब लड़ाई में प्रयोग किये जा सकते हैं। और इस प्रकारसे हम हिन्दुस्तान की क्रांति देवली से ही आरंभ कर सकते हैं। प्रतिनिधि कमेटी के बहुत से मेम्बरों ने इस प्रकार की लड़ाई में शरीक होने से साफ़ इंकार किया; क्योंकि इसकी सफलता में उनको विश्वास नहीं था। एक आध तो उसमें से उठकर भी चले गये। लेकिन कांग्रेस समाजवादी पार्टी के

प्रतिनिधि डाक्टर जैतली ने कम्यूनिस्टों को जवाब दिया कि मैं हर प्रकार की लड़ाई में विश्वास करता हूं। यदि योगेश बाबू भूखहड़ताल की लड़ाई लड़ेंगे और आप लोग मँजूर करेंगे तो मैं अपने प्राणों की बाजी लगाकर उनके साथ रहूँगा और यदि कम्यूनिस्ट पार्टी सीधी लड़ाई लड़ेगी तो उसमें भी मैं पीछे नहीं हटूंगा। और जितनी भी ताक़त मेरे साथियोंकी है वह सब लड़ाईमें लगादी जावेगी। फिर प्रतिनिधि कमेटी से अनुरोध किया कि कम्यूनिस्टों की सीधी लड़ाई का प्रस्ताव मान लिया जाय जिसमें भारतीय कम्यूनिस्टों को यह कहने अवसर न मिले कि हिन्दुस्तान के क्रांतिकारी सीधी लड़ाई लड़ने से पीछे हट गये। इस पर कमेटी ने अपनी स्वीकृति दे दी और यह प्रस्ताव पास हो गया। डाक्टर जैतली को यह पूरा विश्वास था कि यह बातों की लड़ाई लड़ने वाले कमज़ोर कम्यूनिस्ट कभी भी सीधी लड़ाई में शरीक नहीं हो सकते। इस प्रस्ताव के रखने का मंशा नये कम्यूनिस्टों के दिल में अपने क्रांतिकारीपने का रुआब जमाना था। और अन्य क्रांतिकारियों के सिर पर लड़ाई से भाग जाने की बदनामी मंढनी थी।

यह मीटिंग हुई। प्रत्येक दल अपने साथियों को सीधी लड़ाई लड़ने के लिए गुप्त रूप से तैयार करने लगा। लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि इतनी गुप्त कार्यवाही रखने पर भी जेल अधिकारियों को इस सीधी लड़ाई का पता लग गया। क्योंकि थोड़ी देर में फौज़ी सूबेदार ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि जितने खोदने, काटने और बाग़बानी करने के औजार हैं वे सब हटा दिये जायँ। और कैंप खेती तथा बागबानी का सारा कार्य दूसरे आर्डर के मिलने तक क़तई

रोक दिया जाय। इधर प्रतिनिधि—लड़ाई कैसे छेड़ी जाय ? इस बात को सोचने लगे। क्योंकि लड़ाई छेड़नेका बहानाभी तो कुछ होना चाहिए था। दैवयोगसे वहभी हाथ लग गया। देवलीकैंपका ठेकेदार कई दिनसे खाने का सामान बहुत देर से ला रहा था। जिसके कारण बन्दियों को सख्त परेशानी उठानी पड़ रही थी। इसलिये लड़ाई छेड़ने के लिये यह मसाला काफी था। हर रोज की तरह फ्राम जी एन्ड को पार्सी ठेकेदार ने खाने का सामान बहुत देर में भेजा। बन्दी हाई कमाण्ड ने आर्डर दे दिया कि तुम्हारा सामान आज नहीं खरीदा जावेगा। इसके प्रोटेस्ट में बन्दी न तो खाना ही खायेंगे और न रात को बन्द ही होंगे। कैम्प में सनसनी फैल गई कि आज राशन वापिस कर दिया गया। इसलिये आज रात को गवर्मेन्ट की संगीनों का मुकाबला बन्दियों को करना पड़ेगा। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेता ने ईमानदारी के साथ अपने साथियों को बृटिश संगीनों का मुकाबला करने के लिये तैयार किया। लेकिन उनके दिल में यह खटक हमेशा बनी रही कि शायद कम्यूनिस्ट समय पर भाग न जाएं। क्योंकि इस समय तक कम्यूनिस्टों के कैम्प में गर्मागर्म बहस मुबाहसे तो बहुत चल दिये मगर लड़ाई करने की कोई तैयारी नहीं कर रहे थे।

इस तैयारी में शाम हो गई। सी० आई० डी० ने कैंपो में चक्कर लगाना आरम्भ कर दिया जो इधर उधर की गन्ध पाकर मेजर को हर मिनट की खबर पहुंचा रहे थे। रात्रि के ९ बज गये। बैरकों के बन्द होने का समय आ गया। सारे कैंपके बन्दी बैरकों से बाहर बैठ

गये। सोशलिस्ट पार्टीके साथ चलने वाले प्रत्येक साथी अपने कर्तव्य पथ पर आरूढ़ थे। और बड़ी से बड़ी तकलीफ उठाने के लिये तय कर चुके थे। सी०आई०डी०ने आकर कहा—९ बज गये, बैरकोंमें चलिये। सोशलिस्ट प्रतिनिधिने कहा—कि मेजरसे जाकर कह दीजिये कि देवली के बन्दी बैरकमें उस समय तक नहीं जायेंगे कि जब तक हमारी सब शिकायतें न सुन ली जायेंगी और फौजी ठेकेदारको उचित दण्ड न दिया जायगा। सी० आई० डी० का इन्सपेक्टर मेजर को यह खबर देने के बाद फिर आया और कहा—कि मेजर का कहना है कि आप लोग इस समय बैरक में बन्द हो जाइये, कल प्रातः आपकी सब शिकायतें सुनी जायेंगी। प्रतिनिधि कमेटी ने इन्सपेक्टर को नकारात्मक उत्तर दिया। इस समय तक भी कम्यूनिस्ट गर्मागर्म बहस में लगे हुए थे और लड़ाई की तैयारी न थी। इतने में खतरे का बिगुल बज गया। गढ़वाली पलटनों ने संगीनें चढ़ाये कैम्प को घेर लिया। हर सिपाही अपनी भरी हुई राइफल लेकर अपने नियत स्थान पर घेरा छोड़कर बैठ गया। उनकी राइफलों के बोल्ट खींचने की आवाज़ चारों ओर से आने लगीं। क्योंकि सिपाही गोली चलाने के आर्डर की प्रतीक्षा कर रहे थे। इधर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के साथ चलने वाले क्रांतिकारी इन्कलाब जिन्दाबाद और बृटिश हकूमत का नाश हो के नारों से देवली कैम्प को गुञ्जा रहे थे। और पलटन से भिड़ जाने के लिये तैयार खड़े थे। इतने में इन्सपेक्टर आया और उसने कहा—कि ५ मिनट का और समय दिया जाता है आप लोग बन्द हो जाइये अन्यथा गोली चलानी पड़ेगी। समाजवादी प्रतिनिधि ने बन्द होनेसे फिर इन्कार किया। परिस्थिति बड़ी गम्भीर अवस्था को

प्राप्त कर चुकी थी । गोली चलने की सम्भावना पूरी पूरी उत्पन्न हो गई थी । समाजवादी पीछे हटने को तैयार नहीं थे । इतने में कम्यूनिस्ट पार्टी के हार्ड कमाण्ड रणदिवे, डांगे, मिराजकर ने समाजवादी नेता से बात चीत करने का आग्रह किया । जब डाक्टर जैतली इन लोगों से मिले तो इन्होंने आग्रह किया कि आज सीधी लड़ाई का तरीका रोक दीजिए । आज हम अहिंसात्मक तरीके से लड़ाई लड़ें । कम्यूनिस्ट यह चाहते हैं कि राजबन्दी बैरकों के सामने लेट जायँ और कैंप अधिकारी उनको जबर्दस्ती उठा उठाकर अन्दर ले जायं तब हम विवश होकर बन्द हो जायँ । इसपर डाक्टर जैतली ने उनसे कहा—कि आप लोग इस प्रस्ताव को सब बन्दियों के सामने पेश कीजिए, जिसमें यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाय कि कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रतिनियों ने सुबह की मीटिंग में जो सीधी लड़ाई लड़ने का प्रस्ताव रखा था और भूख हड़ताल की लड़ाई को गान्धीयन लड़ाई कहकर अवहेलना की थी । उन्होंने उसी शाम को ब्रटिश हकूमत की संगीनें सामने तन जाने के बाद अपने प्रस्ताव को वापिस ले लिया । और अहिंसात्मक लड़ाई लड़ने की मांग पेश की । जिस समय यह परामर्श चल रहा था और कम्यूनिस्ट नेता सबको अपना प्रस्ताव बता रहे थे । सी. आई. डी. के. इंसपेक्टर ने आकर कहा कि मेजर क्रेस्टर साहब दफ्तरमें आये हुए हैं । और प्रतिनिधि कमेटीको बुला रहे हैं ।

इस समय रात के ग्यारह बज रहे थे । कैंप के फौजी सिपाहियों की चढ़ी हुई संगीनों से घिरा हुआ था खतरे का बिगुल बज चुका था । इन प्रतिनिधियों का बुलाया जाना अन्य बन्दियों में सन्देश का वातावरण पैदा कर रहा था कि शायद ये गिरफ्तार करके दूसरी

जगह भेज दिये जाएंगे। इन्कलाब जिन्दाबाद से कैंप गूञ्ज उठा। प्रतिनिधि कमेटी का स्वागत किया और उनको कुर्सियों पर बैठाया। और फिर क्रोध के आवेश में बड़े तड़ककर बोले—क्या यह मूर्खता नहीं है ? कि आप आधी रात को अपनी मांगें पेश कर रहे हैं। और अभी तक बैरकों में बन्द नहीं हुए हैं। मेम्बर मेजर साहब के इन वाक्यों को बरदाश्त न कर सके। उनमें से फौरन एक बोल उठा—कि मेजर तुम मूर्ख हो। इस स्पष्ट अवेहलना से मेजर साहब की सब गर्मी हवा हो गई और उन्होंने समझ लिया कि ये मरने मिटने के लिये तुले हुए हैं। वह फौरन ही हंस पड़े और बोले—कि मैंने जो अपने बाल सफेद किये हैं, वह बेवकूफी करने के लिये नहीं किये हैं। मैं आप लोगों से समझौता करना चाहता हूँ। आपकी क्या माँग है ?

कमेटी ने पहली माँग फौजी ठेकेदार को दण्ड देने की पेश की जो समय पर खाने की सामग्री नहीं पहुंचाता है। दूसरी मांग डाक्टर को सज़ा देनेकी की गई जिसने रजनी पटेल के साथ अवहेलना पूर्ण व्यवहार किया था। तीसरी माँग वेरी साहब के ऊपर कोई अनुशासन भंग की कार्यवाही न की जाए और साथ ही यह भी माँग पेश की गई कि आइन्दा मेजर साहब किसी राजबन्दी को खड़ा करने केलिये विवश न करें। मेजर क्रेस्टरनें सारी माँगोंको स्वीकार किया। मगर खड़ा होने के आर्डरके लिए बहस मुबाहसा किया और बोले-खड़ा होना तो एक शिष्टाचार है। आप जब हमसे मिलने आते हैं तो मैं स्वयं खड़ा होकर आपका स्वागत करता हूँ इसलिए जब मैं भी आपके यहां जाऊं तो आप लोग भी ऐसा ही करें। लेकिन प्रतिनिधि कमेटी ने मेजर साहब के इस तर्क को नहीं माना फिर मेजर साहब ने कहा

कि मैं किसी को खड़ा होने के लिए विवश नहीं करूंगा। लेकिन जो खड़ा न होगा। उसे मैं शिष्ट नहीं समझूंगा। कमेटी ने कहा—कि हमको आपसे शिष्टता का सार्टीफिकेट नहीं लेना है। यह वार्ता तो समाप्त हुई।

फौरन ही प्रतिनिधि कमेटी ने यह दूसरी मांग पेश करदी कि फौजी ठेकेदार इसी समय भोजनकी सामग्री दे ताकि सब बन्दी भोजन तैयार कराके खा सकें। और उस समय तक बैरकें खुली रहें जब तक सब भोजन न करलें। मेजर साहब ने फौरन ही इस मांग को स्वीकार किया और साथ ही आर्डर दिया कि फौजी ठेकेदार इसी समय सब सामान दे। और तब तक कैंप खुला रहेगा जब तक सब राजबंदी भोजन करके अपने कमरों में वापिस न जायं।

प्रतिनिधि कमेटी कैंप में वापिस गयी। उसने अपनी पूर्ण विजय का समाचार कैंप में सुनाया। फिर क्या था चारों ओर आनन्द की लहर दौड़ गई? अपनी अपनी मनोवृत्ति के अनुसार चारों ओर चेमे गोइयाँ होने लगीं। इस प्रकार गोरे अफसरों की बढ़ती हुई निरंकुशता को कुचला गया उसके बाद वह स्वयं ही अधिक शिष्टता से पेश आने लगा और कभी भूलकर भी किसी से खड़ा होने को आग्रह नहीं किया।

श्री जयप्रकाश का आगमन

पहली भूख हड़ताल

प्रातःकाल का सुहावना समय था। शीतल मन्द वायु अठखेलियाँ कर रहा था। उसने अनेक व्यक्तियों को अपने मीठे थपेड़े दे देकर ऐसा आलस्य की गोद में ढकेल दिया था कि वे तंद्रा से अभिभूत हो उठने का नाम ही न ले रहे थे मगर जिन्होंने आलस्य को ठोकर मारकर भगा दिया था वे राजबंदी अपनी अपनी शैया छोड़कर कैम्प में टहल रहे थे। प्रभाकर ने अपनी सुनहरी किरणों का प्रसार आरम्भ कर दिया था जिसका झुँड का झुँड दीवारों और कमरों की खिड़कियों की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था अपना अधिकार जमानेके लिए।

उसी समय कैम्प नं० १ की पहली बैरक के बरामदे में अकस्मात् एक आकर्षक मूर्ति दिखाई दी। परिचित साथी ने जिसकी कभी भावना भी न थी कि जयप्रकाशजी देवली में आवेंगे, संदिग्ध भाव से इस आने वाले राजबंदी को देखा। बरामदेमें परिचित साथी दौड़कर आगे बढ़े—यह निर्णय करने के लिए कि वह जैप्रकाश ही हैं या कोई दूसरा। नज़दीक आने पर——लम्बा शरीर जो जेल में रोग के कारण कृश हो गया था——वह जयप्रकाश नारायण ही का था। फिर क्या था? चारों ओर आनन्द बिखर गया जयप्रकाश जी मुस्कराहट के साथ साथियों के गले मिले और बतलाया कि लग भग ९ दिन से

मैं देवली कैम्प में पहुँच गया हूं। लेकिन कैंप अधिकारियों ने मुझे इस कैम्प में रखने से साफ़ इंकार कर दिया। और कहा— कि देवली कैम्प में और बंदियों के लिए स्थान नहीं है।

जयप्रकाश जी बम्बई जेल से आये हुए थे। और बम्बई के अस्पताल में उनका इलाज भी हो रहा था। गवर्नमेंट ने उनके स्वास्थ्य की ज़रा भी परवाह न की और देश के महान क्रान्तिकारी के लिए देवली जैसा अस्वास्थ्यकर स्थान ही उपयुक्त समझकर भेज दिया। जेल अधिकारियों के इंकार का तार देने पर भी केन्द्रीय सरकार ने जेल वालों की दरख्वास्त मंजूर नहीं की और जयप्रकाश जी को वहीं रखने के लिए उनको विवश किया। देवली के अन्दर गोरे अफसरों का जो दुर्व्यवहार बढ़ रहा था और काँग्रेस समाज वादी संगठन जिस दृढ़ता के साथ सरकार का मुकाबला कर रहा था जयप्रकाश जी को तुरन्त इन समाचारों से अवगत किया गया। और साथ ही कम्यूनिस्टों की दुर्बलताओं की शिकायत की गयी जो जेल अधिकारियों के बढ़ते हुए दुर्व्यवहारों का कारण बन रही थीं।

जैप्रकाशजी के आने से देवली कैम्प में एक नये जीवन का संचार हुआ। क्रान्तिकारियों को रहनुमाई करने के लिए एक कर्मठ और सक्रिय नेता मिला। बृटिश शाहन्शाहियतके नुमान्इदे जेल अधिकारी होशियार हो गये और यह समझने लगे कि देवली कैम्प अब क्रान्तिकारियों का, मजबूत नेताके आने पर, एक किला बन गया है।

जयप्रकाश जी देशके सारे कम्यूनिस्ट नेता, जो यहाँ पर उपस्थित थे, एक के बाद एक आकर मिले। और अपने रहन सहन के तरीके, तथा राजनीतिक विचारों को प्रकट किया। कम्यूनिस्टों की इन बातों

को नेता ने ध्यान पूर्वक सुना। इसके बाद डाक्टर जैतली ने देवली कैम्प में जो सोशलिस्ट संगठन चल रहा था—उसका पूरा पूरा परिचय कराया। और नये साथियों को जयप्रकाश जी से मिलाया। जयप्रकाश जी—योगेशचन्द्र चटर्जी, केदारनाथ आर्य फैजाबाद, ब्रजनन्दन ब्रह्मचारी बस्ती इत्यादि—से भी मिले। और इन सबके विचारों को सुना।

कई दिन तक नये साथी जो काँग्रेस समाजवादी दल में प्रवेश करना चाहते थे, श्री जयप्रकाश जी से बातचीत करते रहे। जिनमें से अधिकाँश के कांग्रेस समाजवादी दल के नेतृत्व में चलना स्वीकार कर लिया। अमर शहीद सरदार भगतसिंह के दो भाई जेलमें मौजूद थे, पंजाबके प्रोफेसर तिलकराज चड्ढा, मास्टर काबुलसिंह, बलवन्तसिंह दुखिया जो अभी तक कम्यूनिस्टों के सङ्गठन के साथ चल रहे थे, उन सबका झुकाव भी कांग्रेस समाजवादी पार्टी की तरफ़ हो गया। और अन्य कैंपों में भी जयप्रकाश जी के आने से कम्यूनिस्ट पार्टी की नींव खिसकने लगी। जयप्रकाश जी से मिलने वाले लोगों का तांता लगा रहता था जो कि अपने राजनीतिक प्रश्नों का शङ्का समाधान करते रहते थे। कांग्रेस समाजवादी पार्टी के साथ चलने वालों की एक बहुत बड़ी मीटिङ्ग की गयी और उस मीटिङ्ग में जयप्रकाश जी ने कांग्रेस सामाजवादी पार्टी की नीति समझाई और उस दल को मज-बूती से सङ्गठित करने के लिए स्वयं क्लास लेने की आयोजना की। जयप्रकाश जी ने खेल के मैदान में—अर्थशास्त्र पर क्लास लेना आरम्भ किया। इस क्लास में ए और बी दोनों कैंपों के राजबंदी शिक्षा के लिए उपस्थित होते थे। कांग्रेस समाजवादी दल के यू० पी० के

मशहूर नेता प० मोहनलाल गौतमने जो थोड़े ही दिन पहिले यहाँ आ गये थे । पार्टी के सङ्गठन में बहुत बड़ी सहायता पहुंचाई थी; मास्टर मोतासिंह बब्बर अकाली पार्टी के नेता जो कि फारवर्ड ब्लाक के भी सभासद थे अपने पूरे दल के साथ—कांग्रेस समाजवादी दल के नेता जयप्रकाश जी से मिले । और अपने दल की नीति को बताया; और कम्यूनिस्टों की कमजोर नीति की सख्त अलोचना की । सरदार जी आरम्भ से ही कांग्रेस समाजवादी दल के साथ चल रहे थे, जयप्रकाश जी के आ जाने से उनका उत्साह और भी बढ़ गया था ।

जबकि कांग्रेस समाजवादी दलका सङ्गठन मज़बूत बनाया जा रहा था और कम्यूनिस्ट पार्टी अपनी कमजोरियोंके कारण गिर रही थी उस समय सरकारी अफसरोंकी सख्तियां फिर बढ़नी शुरू हो गई थीं । गाज़ीपुर के एक नजरबन्द जिनका नाम बेनीमाधवराय है अस्पतालमें सख्त बीमार पड़े थे । अजमेर का एक सिविल सर्जन भी जो कि एक लेफ्टिनेन्ट कर्नल था—उनको देखने के लिए आया । उसने मरीजको अजमेर में भेजने की राय दी ।

मरीज़ अजमेर अस्पतालमें अकेला जाना पसन्द नहीं कर रहा था; इस पर कैंप का डाक्टर एक फौजी टुकड़ी साथ लेकर अस्पताल में गया और फौजी सिपाहियों को मरीज़ को जबर्दस्ती उठाने का हुक्म दिया । अस्पताल के अन्दर, फौज के द्वारा मरीज का जबर्दस्ती हटाया जाना,दूसरे बीमार राजबन्दियोंको बर्दाश्त नहीं हुआ । बीमारोंने डाक्टर और फौज के इस रवैये की मुखालफत की और रोगी के रोकनेके लिए बल प्रयोग किया । इस घटना से जेल में सनसनी फैल गई । फौज ने अपनी कार्यवाही को रोक दिया और प्रतिनिधि कमेटी को बुलाया

प्रतिनिधियों ने उस क्षुब्ध वातावरण को शांत किया; और बीमार को अजमेर अस्पताल भेजने का उचित प्रबन्ध किया और साथ ही सुपरिन्टेन्डेंट से, कैंप के डाक्टर को इस दुर्व्यवहार के लिए उचित कार्यवाही करने की मांग पेश की।

बेनी माधवराय अजमेर अस्पताल में अधिक दिन तक न रहे। क्योंकि सिविल सर्जन ने इस बात का सार्टीफिकेट दे दिया कि यह रोगी दर्द की मसनुई नकल बनाये हुए है। इसके पेटमें कोई दर्द नहीं होता। इसलिए इनको सार्टीफिकेट के साथ कैंप के अस्पताल में ही वापिस भेज दिया। जेल के मेजर कस्टर जो बंदियों को दबाने के लिये निरन्तर प्रयास कर रहे थे सिविल सर्जन का सार्टीफिकेट पाने पर वही कहावत चरितार्थ कर रहे थे –एक डाइन दूसरे हाथमें लुकारा उसने फौरन ही रोगी को १५ दिनके लिए काल कोठरीमें भेज दिया। देवली की कालकोठरी सही मानी में काल कोठरी थी ऐसी कालकोठरी जेलों में नहीं पाई जाती हैं। यह कालकोठरी जेल से ८ फर्लाङ्ग की दूरी पर एक अहाते में बनी हुई थी कि जिसके चारों ओर बंदूकधारी फौजी पहरा दिया करते थे। कालकोठरी की इमारत पक्की थी; छत बहुत नीची थी, दरवाजा एक बहुत मोटी लोहे की चादर का था, जिसमें बड़े२ सूराख खुले हुए थे। इमारत का रुख पूरब की ओर था जिसके कारण रेगिस्तान की प्रचण्ड धूप कमरे को तप्त कर देती थी। इस कोठरी में हवा की गुञ्जायश बहुत कम थी। जो बंदी इसके अन्दर रहता था वह कपड़े पहन कर नहीं रह सकता था वह केवल एक लंगोटी लगाकर ही नङ्गा रहता था।

इस प्रकार की कालकोठरी में एक ऐसे रोगी को जेल अधिका-

रियों ने लाकर बंद कर दिया। इस समाचार से कैंप में रोष और चिन्ता दोनों छा गयीं। कांग्रेस समाजवादीदल पर इतनी विशेष जिम्मेदारी थी क्योंकि बेनीमाधवराय कांग्रेस समाजवादीपार्टीके एक सभासद थे; प्रतिनिधि कमेटीकी बैठक बुलाई गई और निर्णय हुआ कि हमको बहुत जल्द सरकार के इस रवैये के विरोध में लड़ाई छेड़ देनी चाहिए। और लड़ाई का तरीका अनशन हो और हम नीचे लिखी माँगे पेश करें।

१—अस्पताल में रोगियों से दुर्व्यवहार करने वाले इस डाक्टर को देवली अस्पताल से हटाया जाय।

२—बेनी माधवराय की सज़ा रद्द की जाय और उनको हमारे बीच वापिस भेजा जावे।

कम्यूनिस्ट पार्टी लड़ाई के फैसले के साथ तो थी लेकिन वह चाहती थी कि पहले अधिकारियों से इसपर कुछ बातचीत करली जाय और इन मांगों के साथ कुछ और भी मांग जोड़ दी जायें। इन्होंने शाम तक अपना फैसला देने को कहा—लेकिन शाम तक वह किसी खास फैसले पर न पहुंच सके। तब उन्होंने फैसला करने के लिए और अधिक समय माँगा। कांग्रेस समाजवादी दल को कम्यूनिस्टों का रवैया असंतोष जनक मालूम हुआ। क्योंकि काल कोठरी में बन्द, वह भी एक रोगी कि जिसकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी, यदि फौरन नहीं हटाया जाता तो—उसके स्वास्थ्य पर बहुत बड़ा आघात पहुँचने का भय था। एक एक मिनट वर्षों के समान गुज़र रहा था।

श्री जयप्रकाश नारायणजी ने बड़ी तत्परता के साथ अपने

साथियों को लड़ाई छेड़ने के लिए रायदी और रात ही में लगभग २८ बन्दियों का एलटीमेटम गवर्नमेन्ट को भेज दिया गया। एलटी मेटम भेजते समय कम्यूनिस्ट नेताओं को सूचित कर दिया गया। लेकिन वे सब इस बात पर नाराज़ हुए कि आप आज हमारे कहने पर रुक नहीं रहे हैं। इसलिए इस लड़ाई में हमारा और आपका साथ नहीं रह सकेगा। कम्यूनिस्ट इस लड़ाई में शरीक ही नहीं हुए बल्कि उन्होंने अपने सब साथियों के हस्ताक्षर कराके जेल अधिकारियों को एक सूचना भेजदी कि कैम्प में जो भूख हड़ताल होने जा रही है हम उसमें शरीक नहीं हैं और न हमें इससे कुछ सरोकार है।

कम्यूनिस्ट समझते थे कि थोड़े से कांग्रेस सोशलिस्ट और उनके साथी हमारे बिना इस गवर्नमेन्ट को झुका न सकेंगे। इसलिए वे सरकार को यह सूचना भेजकर अप्रत्यक्ष रूपमें उसके सहायक हो रहे थे। नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा। लेकिन कांग्रेस समाज वादी दलके लोग और उनके अन्य साथी पूर्ण विश्वास करते थे कि यदि थोड़े से भी सच्चे सिपाही अपनी जान की बलि देने को तैयार हो जायँ तो इस गवर्नमेंट को झुकाने और अपनी माँग पूरी कराने में सफल हो सकते हैं।

इस ऊंचे विचार को लेकर काँग्रेस समाजवादी दल और उनके अन्य साथियों ने अनशन की यह लड़ाई छेड़ी। इस लड़ाई में नीचे लिखे व्यक्ति सम्मिलित थे।

१—श्री बा. जयप्रकाश नारायण २—श्री जी० के० जैतली
३—श्री मोहनलाल गौतम ४—श्री योगेशचंन्द्र चटर्जी

५–श्री सरदार सीतासिंह	६–श्री केदारनाथ आर्य
७–श्री प० रामदुलारे उपाध्याय	८–श्री ब्रजनन्दन ब्रह्मचारी
९–श्री कृष्णशङ्कर श्रीवास्तव	१०–श्री विश्वनाथराय
११–श्री शत्रुघ्न कुमार	१२–श्री मनमोहन गुप्ता
१३–श्री वीरेन्द्र पांडेय	१४–श्री सुरेन्द्र पांडेय
१५–श्री रूपनारायण पांडेय	१६–श्री झाड़ खण्डेराय
१७–श्री गोकुलदास शास्त्री	१८–श्री किशनलाल आजाद
१९–श्री योगेन्द्र शुक्ल	२०–श्री सूरजनारायण सिंह
२१–श्री श्यामाचरण भरथवार	२२–श्री मलयकृष्ण ब्रह्मचारी
२३–श्री सरदार कुलतारसिंह	२४–श्री दयाराम बेरी
२५–श्री पं. जागेश्वर त्रिवेदी	२६–श्री केशव शर्मा
२७–श्री बालगङ्गाधर त्रिपाठी	२८–श्री कामताप्रसाद उर्फ बच्चा बाबू

इस भूख हड़ताल के आरम्भ होते ही जेलमें सनसनी फैल गई। अधिकारी सतर्क हो गये। भूख हड़ताल करने वाले अलग एक बैरक में रख दिए गये। कम्यू-निस्टों को अलग एक बैरक में रख दिया गया। बृटिश हकूमत की सी० आई० डी० सुबह शाम सब समाचार सरकार को देने लगी। मेजर क्रेस्टर ने तार द्वारा यह सूचना केंद्रीय सरकार को भेज दी। बाहर न कोई प्रचार था और न सरकार पर दबाव देकर माँगें पूरी कराने का कोई साधन। केवल जान की बाजी लगाकर थोड़े से राज-बन्दी, देवली के निर्जन स्थान में, बृटिश शाहनशाहियत को झुकाकर अपनी माँगें पूरी कराने के लिए कटिबद्ध थे। कम्यूनिस्ट इस बातका तमाशा देखना चाहते थे कि ये राजबन्दी किस प्रकार अपनी माँगों को

पूरी कराते हैं। चार दिन तक सरकार के कानों पर जूं न रेंगी। पाँचवें दिन उसने प्रतिनिधि कमेटी को दफ्तर में बुलाया जिसमें सरदार सोतासिंह, डा. जी. के. जैतली, योगेश चटर्जी तथा गौतम जी थे पार्टी ने बा. जयप्रकाश को कैंप के भूखहड़तालियों का नेतृत्व करने के लिए छोड़ दिया। क्योंकि इनको शक था कि प्रतिनिधि कमेटी गिरफ्तार कर ली जायेगी और यहाँ पर वापिस नहीं आयेगी।

प्रतिनिधि कमेटी जब मेजर के दफ्तर मे पहुंची तो मेजर ने खड़े होकर उनका स्वागत किया और कमेटी को बैठाया। मेजर ने कहा—कि आप लोग जो भूखहड़ताल कर रहे हैं इस जेल कैंप में नहीं कर सकते। यदि आप तोड़ने के लिये तैयार नहीं हैं तो मुकदमा चलाया जायगा।

इस पर कमेटी ने उत्तर दिया, कि बगैर अपनी मांग पूरी कराये हम इस अनशनको नहीं तोड़ सकते। इस पर मेजर ने कहा—मैं स्वयँ फ़र्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट की ताक़त रखता हूँ, आप बतलाइये कि मेरे इजलास में मुक़द्मा चाहते हैं या अजमेर के कोर्ट में। कमेटी ने कहा---अजमेर के कोर्ट में, हम पर मुक़द्मा चलाया जाए ताकि हम दुनिया को बता सकें कि देवली कैंप जेल के बृटिश अधिकारी नज़रबन्दों के साथ कैसा दुर्व्यवहार कर रहे हैं। इस पर मेजर खामोश हो गया। फिर कुछ देर सोचने के बाद उसने हुक्म दिया कि आप लोग कोठरियों में जायेंगे। कमेटी खड़ी हो गई और कोठरियोंमें जाने के लिये मेकरेडी के साथ चल पड़ी। धूप बड़ी तेज थी, कोठरियां काफ़ी दूर थीं। ९ दिन के भूखे बन्दी (जिनमें ६२ वर्षके बूढ़े मास्टर मोतासिंह भी सम्मिलित थे इस कड़कती धूप में पथरीली ज़मीन पर चलकर अमानुषिक कर्त्तव्य का पालन कर रहे थे।

कमेटी के सदस्य जब कोठरियों के दरवाज़ों पर पहुँचे तो देखा— रोगी बेनीमाधवराय की कोठरीके दरवाजे पर खाना फेंका हुआ है। उसी समय लोहे की चादर के पीछे से आवाज़ आई कि मैं भी भूख हड़ताल कर रहा हूँ। साथियों ने समझाया कि आप बीमार हैं आप भूख हड़ताल न करिये। लेकिन फिर आवाज़ आई कि इस अपमानकी अपेक्षा हम मृत्यु पसन्द करते हैं। यह पारस्परिक चर्चा हो ही रही थी कि इतने में मेजर के पास से खबर आई कि कमेटी के मेम्बर कोठरियों में नहीं रखे जायेंगे बल्कि इनको दूसरी जगह रखा जायगा।

कमेटी के मेम्बर फिर वापिस गये। इनको एक नयी बैरक में रखा गया कि जहां पर संगीनधारी फौजी अफ़सरों के अतिरिक्त और कोई न था। बीच बीच में दिन भर सी. आई. डी. का अफ़सर आकर समझाता था कि आप भूख हड़ताल तोड़ दीजिए। मेजर साहब आपकी माँग पूरी कर देंगे। रात्रि में सिख सूबेदार और सेक्रेटरी भी समझाने के लिए आये कि आप लोग भूख हड़ताल तोड़ दीजिए— मेजर साहब आपका कहना मान लेंगे।

रात्रि बीती, प्रातः हुआ। साथियों का अभी तक कोई समाचार नहीं मिला था कि वहाँ पर अधिकारियों ने क्या कार्यवाही की है। दस बजे दिन को जब दफ्तर खुल गया और मेजर दफ्तर में तशरीफ़ ले आये तो उन्होंने फिर कमेटी के मेम्बरों को दफ्तर में बुलाया। और कहा—कि डाक्टर को तो हम उसके दुर्व्यवहार के कारण सज़ा देंगे और हटादेंगे लेकिन बेनीमाधव रायकी सज़ा हम रद्द नहीं कर सकते। क्योंकि जब तक सिविल सर्जन का सर्टीफिकेट रद्द नहीं किया जाता तब तक हम सज़ा रद्द नहीं कर सकते। सिविल सर्जन का सर्टीफ़िकेट अजमेर व मारवाड़ के अस्पतालों के इन्सपेक्टर जनरल

ही कर सकते हैं।

मेजरने डाक्टर जैतलीके सामने सार्टीफिकेट पेश किया और कहा—कि आप डाक्टर हैं। यदि आप इसको इन्सपैक्टर जनरलसे बदलवा देंगे तो हम बेनीमाधव राय की सज़ा रद्द कर देंगे फिर कमेटी से आग्रह किया कि आप भूख हड़ताल तोड़ दीजिए—और यहीं पर तोड़िये।

कमेटी के सदस्यों ने अविचलित भावसे कहा—आप इन्सपेक्टर जनरल को बुलवाइये। और हम लोगों को कैम्प में जाने दीजिए, हम वहीं जाकर भूख हड़ताल तोड़ेंगे। मेजर ने इस बात को स्वीकार किया और कमेटी के मेम्बर अपनी अकेली बैरक में वापिस गये। दूसरे दिन कमेटी के मेम्बरों को मेजर ने फिर बुलाया और कहा—कि केन्द्रीय सरकार का यह तार आया है, डाक्टर यहां से हटाया जायेगा और साथ ही इंस्पेक्टर जनरल भी आया हुआ है। उससे आपके प्रतिनिधि बात करेंगे और आप कैंप में जाकर अपने साथियों के साथ अनशन तोड़ेंगे।

प्रतिनिधि कमेटी कैंपमें वापिस गई। जहां पर सब अनशन करने वाले साथी कमेटी को देखकर प्रसन्न हो गये और समझ गये कि सरकार झुक गई और हमारी मांगें पूरी हो गईं। इन्सपेक्टर जनरल कैंप में मौजूद था, बन्दियों ने फल के अर्क से अपना अनशन तोड़ा और अपनी विजय पर इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाये। कम्यूनिस्ट अपनी कुकृति पर स्वयं ही बहुत शर्मिन्दा थे और अपनी झेंप मिटानेके लिए दौड़ दौड़ कर नींबू और शरबत बांट रहे थे।

डाक्टर जैतली ने इन्सपेक्टर जनरल से सिविल सर्जन के सार्टी-

फिकेट पर बातचीत आरम्भ की और थोड़ी देर में इन्सपेक्टर जनरल को कायल कर दिया कि मेडीकल सार्टीफिकेट ग़लत है। फिर क्या था इन्सपेक्टर जनरल ने सिविल सर्जन की तशखीस को ग़लत मानते हुए सार्टीफिकेटको भी गलत कर दिया। इसपर मेजर कस्टरने अपनी सजा के आर्डर को रद्द किया और बेनीमाधवराय भी कोठरी से निकाल दिये गये।

इस प्रकार कांग्रेस समाजवादी दलने अपने वीर नेता जयप्रकाश के नेतृत्व में बृटिश शाहनशाहियत को थोड़े से कर्मठ सिपाहियों के साथ झुका दिया और देवली के सब राजबन्दियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

अन्तिम भूख हड़ताल—

बङ्गाल में सन १९३१ ई० में जो व्यक्ति बङ्गाल आर्डिनेन्स में गिरफ्तार किये गये थे उनको आरम्भ में एक रुपया दस आना भोजन व्यय और बत्तीस रुपये जेब खर्च मिलता था। इनके अतिरिक्त घर वालोंके लिए भी खर्च देना पड़ता था। मगर जैसे जैसे सुरक्षा बंदियों की तादाद बढ़ती गई सरकार इस व्यय को घटाती गई यहां तक कि भोजन व्यय एक रुपया दो आना और जेब खर्च बीस रुपया कर दिया गया।

जब देवली कैंप खोला गया तो पाकेट एलाउन्स और भी घटा दिया गया जो आरम्भ में पन्द्रह रुपये और बाद में ग्यारह रुपये हो गया। यह रुपया बंदियों के कपड़े, साबुन, तेल, समाचार पत्र, पुस्तकें इत्यादि आवश्यक वस्तुओं में व्यय किया जाता था। मगर बंदी को इस रुपये को खर्च करने में पूरी स्वाधीनता थी। वह जिस प्रकार चाहता खर्च कर सकता था। कई बंदियों की आर्थिक दशा अत्यन्त खराब थी, इसलिए वह इसमें किफायत करके अपने घरको सहायता भी पहुँचाते थे-यह बात गवर्नमेंट को बहुत अखरी।

इसलिए— दूसरी बार जब यह नज़रबंद कैंप खोला गया तो यह प्रथा सर्वथा उठा दी। बल्कि और भी खर्च कम करने के लिए काफी किफायत से काम लिया। यहां पर दो क्लासें खोल दी गयीं ए क्लास और बी क्लास। ए क्लास के लिए बारह आने और बी क्लास के लिए छः आने भोजन व्यय मंजूर किया गया और इसके अतिरिक्त दूसरे खर्च की ज़िम्मेदारी सरकार ने स्वयं अपने हाथ में रखी।

आरम्भ में जो जत्थे यू० पी० से यहां आये वे सब ए क्लास में रखे गये। क्योंकि यू० पी० सरकार ने उस समय तक अपने प्रांत में श्रेणी विभाजन नहीं किया था। उसके पश्चात जब वहां श्रेणी विभाजन हो गया तो उसी के अनुसार यहाँ भी बंदी ए और बी क्लास में भेजे गये। मगर पंजाब, मद्रास, बिहार से जो व्यक्ति यहाँ भेजे गये वे अधिकाँश बी क्लास में थे। इनका श्रेणी विभाजन स्थानीय सरकार ने स्वयँ करके भेजा था। इस प्रकार यहाँ पर ए क्लास की अपेक्षा बी क्लास के सुरक्षा बंदी कहीं अधिक थे। अनुमानतः १ व २ का अनुपात था।

इसलिए सब बंदियों ने परामर्श करके केन्द्रीय सरकार को एक मेमोरेन्डम भेजा जिसमें लिखा गया कि श्रेणी-विभाजन कतई नहीं होना चाहिये। और जेब खर्च तथा गृहस्थी के खर्च के लिए रुपया मिलना चाहिए। जब उसका कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला तो गवर्नमेंट को फिर लिखा गया और साथ ही एक एल्टीमेटम भी दिया गया कि यदि सरकार हमारी उपेक्षा करेगी तो हम भूख हड़ताल करने के लिए मजबूर होंगे।

सुपरिन्टेंडेंट ने स्थिति को भांपा और किसी प्रकार उस दहकती आग को दबाने की कोशिश की। वह अजमेर जाकर चीफ़ कमिश्नरसे मिले और फिर गृह सदस्य मिस्टर मैक्सवेल से देहली मिलने गये। उनको व्यक्तिगत तौर पर यहां की सब परिस्थिति समझाई। अंत में वह सुपरिंटेंडेंट के विचारों से सहमत हो गये और उन्होंने बी क्लास को नौ आने भोजन व्यय देना स्वीकार कर लिया। और जेब खर्च, फेमिली एलाउन्स पर भविष्य में सहृदयता पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया। साथ ही साथ—एक स्थ। मिलकर खेलने और मिलनेकी सुविधाभी दी। सुविधाके लिए एक प्लेग्राउन्ड (खेल का मैदान) खोल दिया गया जो काफी लम्बा चौड़ा था। वह

प्रति दिन सुबह एक घंटा और शाम को डेढ़ घंटा खुला रहता था जिसमें तीनों कैंप के समस्त व्यक्ति एक साथ मिलते जुलते और खेलते थे।

इस आश्वासन से इस समय यह उभड़ती हुई ज्वाला कुछ शांत हुई। मगर जब बहुत दिन तक सहृदयता पूर्वक विचार करने का समय न आया तो इस दबी हुई चिनगारी को फूंक मार मार कर प्रज्वलित किया जाने लगा तीनों कैम्पों के प्रतिनिधियों की मीटिंग की गयी और फिर से अपनी मांगों के लिए सरकार को लिखा। मगर उसके बहरे कानों पर कुछ असर न हुआ। सरकार के इस रवैये से बंदी उत्तेजित हो उठे। कांग्रेस समाजवादी दलने इसको बहुत महसूस किया इसलिए इस कामका बीड़ा काग्रेस समाजवादी दलको ही उठाना पड़ा। उसने प्रत्येक दल के लोगोंके पास यह पैगाम पहुंचाया कि उचित समय के अन्दर अगर हम सरकार को किसी प्रभावशाली लड़ाई से नहीं दबा देते हैं तो राजबंदियों का जीवन बहुत ही कष्टमय हो जायगा। इस प्रभावशाली लड़ाईके लिए आमरण अनशन के अतिरिक्त और दूसरा हथियार नहीं है।

कम्यूनिस्ट जिनके साथ अधिक ऐसे नौजवान थे, जिन्होंने कभी जेल का मुँह भी नहीं देखा था मगर भारत रक्षा कानून में अपनी ज़बान दराज़ी के कारण या पुलिस के कोप भाजन बनकर देवली में नज़रबन्द होकर आ गए थे। अपनी असफलता के भयसे इस युद्ध में हाथ बटाना नहीं चाहते थे। लेकिन वह अपनी इस राजनीतिक कमज़ोरी को वाक़पटुता या अन्य तरीकों से ढाँकना चाहते थे। उनका कहना था कि हम सब एक साथ भूख हड़ताल करना चाहते हैं और एक साथ ही तोड़ना। चाहें मांगें पूरी हों या न हों। कीर्ति पार्टी के सदस्य भी, जिनमें अधिकांश बूढ़े थके हुए क्रांतिकारी

थे अपने प्राणों की बाजी नहीं लगाना चाहते थे बल्कि कम्यूनिस्टों के साथ केवल भूखहड़ताल का प्रदर्शन ही करना चाहते थे। मगर अन्य क्रांतिकारी दल सोशलिस्ट पार्टी के नेतृत्व में अपने प्राणों की बाजी लगाकर हकूमत को झुकाने के लिये कटिबद्ध थे। फिर क्या था—सारे कैम्पों में हलचल आरम्भ हो गई।

कई बार ऐसा देखनेमें आता है कि जब मनुष्य किसी काममें से बचना चाहता है वह काम उसके लिये जाने बबाल बन जाता है और आदमी किसी न किसी प्रकार मजबूर होकर उस काम को करता है। ईश्वर वादी इसको भवितव्यता और भौतिकवादी इसको सँयोग कहते हैं। ठीक यही घटना कम्यूनिस्टों के साथ घटी। वे भूख हड़ताल से बचना चाहते थे इसीलिये सदैव इसकी अवहेलना करते आये थे। मगर स्वयँ ही उसके चक्कर में फँसगये। जादू वह जो सिर पै चढ़के बोले, गैर कोई क्या पर्दा खोले।

बाहर से कम्यूनिस्टों को आदेश मिला था कि जिस समय केन्द्रीय असेम्बली की बैठक आरम्भ हो और स्कूल तथा कालिज खुल जावें आप लोग उस समय भूखहड़ताल करें ताकि आप लोगों की माँगें मनवाने में बाहर जबरदस्त प्रचार हो सके। चुनांचे जब कम्यूनिस्टों को यह पता चला कि अब केन्द्रीय असेम्बली की बैठक आरम्भ होने वाली है और स्कूल कालिज खुल गये हैं तो उन्होंने मुलाक़ात मँगाई और अपनी भूख हड़ताल करने के इरादे से उनको अवगत किया। बाहर से पूरी सहायता मिलने का उनको आश्वासन दिया गया तब हाई कमाण्ड ने अपनी पार्टी मीटिंग की और कहा कि हमको अब अविलम्ब भूख हड़ताल आरम्भ कर देनी चाहिये क्योंकि इस समय परिस्थिति हमारे अनुकूल है हम बहुत थोड़ी कुरबानी करके ही उद्देश्य प्राप्ति कर सकेंगे और इस प्रकार देवली नज़रबन्दों की मांगें पूर्ण होने का श्रेय हमारी पार्टी को मिल जावेगा। फिर

क्या था भूख हड़ताल करने की हवा सारे कम्यूनिस्ट कैम्प में व्याप्त हो गई।

इसप्रकारके षडयंत्रसे कांग्रेस समाजवादी पार्टी तथा दूसरे क्रांतिकारी दल भी सर्वथा अपरिचित न थे उनकोभी सारे मामलेका पता लग चुका था इसलिये उन्होंने इस अवसर को ग़नीमत समझा और उन्होंने अपनी मीटिङ्ग करके परिस्थिति पर गम्भीरता से विचार किया। और इस निर्णय पर पहुँचे कि भूख हड़ताल कम से कम साठ दिन जरूर चलेगी। इसलिए हमको उन्हीं लोगों को भूख हड़ताल में सम्मिलित करना चाहिए जो इस कठिन लड़ाई में सफल उतर सकते हैं। इस प्रकार बन्दियों की आयु और स्वास्थ्य का लिहाज रखते हुए जत्थे बन्दी की गई। पहला जत्था जो साठ दिन और उसके उपरांत तक चलेगा। दूसरा जत्था उससे दस दिन के पश्चात आरम्भ करेगा और तीसरा अन्तिम जत्था उससे पाँच दिन के पश्चात आरम्भ करेगा। इसके बाद भूख हड़तालियों के लिये, भूख हड़ताल के दिनों में जिन नियमों का पालन करना पड़ेगा वह भी तय किया गया।

१—कोई भी भूख हड़ताली अपनी इच्छा से फोर्स फीडिङ्ग (जबर्दस्ती भोजन कराना) नहीं करायेगा। प्रत्येक को जबर्दस्ती खाना खिलाने वाले का बल पूर्वक मुकाबला करना पड़ेगा। जब शरीर पर जबर्दस्ती वह कब्जा करले तभी विवशता हो सकती है।

२—कोई भी भूख हड़ताली सोडा, नींबूका अर्क, या नमक पानी के साथ नहीं लेगा केवल—सादा जल ले सकेगा।

३—कोई भी भूख हड़ताली बिला पार्टी के सामूहिक फैसले के—भूखहड़ताल नहीं तोड़ सकता ऐसा करनेवाला धोखेबाज कहलायेगा।

४—बीमारी की हालत में यदि कोई पसन्द करे तो दवा ले सकता है।

इसमें यह भी तय हुआ कि हम लोगों को कम्यूनिस्टों से एक दिन पहिले सरकार को भूख हड़ताल का एल्टीमेटम देना चाहिये और एक दिन पहले ही भूखहड़ताल आरम्भ कर देनी चाहिये क्योंकि यदि कम्यूनिस्ट बीच में ही भूख हड़ताल तोड़ देंगे (कि जिसकी ६६ फी सदी सम्भावना थी) तो सोशलिस्ट पार्टी अपने सहयोगियों के साथ निरन्तर भूख हड़ताल उस समय तक करती रहेगी जब तक कि उनकी समस्त माँगें पूरी नहीं कर दी जावें। निम्नलिखित सज्जनों की भूख हड़ताल कमेटी बनाई गई।

१ श्री प्रोफेसर सीतासिंह। २—श्री बा. जयप्रकाशनारायण ३—श्री योगेशचन्द्र चटर्जी। ४—श्री मास्टर काबुलसिंह। ५ श्रीविश्वनाथ राय। ६—श्री योगेन्द्र शुक्ल। ७—श्री हजारासिंह हमदम। ८—श्री श्यामाचरण भर्थवार। ९—श्री मुन्शी अहमददीन। १० श्री देवेन्द्र शर्मा। ११-श्री मणिलाल शर्मा। १२—श्री सुशील भट्टाचार्य; १३—श्री प० धनराज शर्मा।

श्री प० विश्वम्भर दयाल त्रिपाठी मन्त्री फार्वर्ड ब्लाक यू० पी० अपने भाई बालगङ्गाधर त्रिपाठी से १६ अक्टूबर को मुलाकात करने आये थे। उनको यहाँ की भूख हड़ताल के संबंध में पूरी जानकारी हो गयी। इसलिए उन्होंने यहांसे लौटते हुए नसीराबाद-से चार पत्र श्री लोकनायक अणे, श्री अखिलचन्द्र दत्त डिप्टी लीडर कांग्रेस केन्द्रीय असेम्बली, श्री कवीश्वर शार्दूलसिंह तथा, श्री महात्मा गांधी जी को लिखे। और अजमेर पहुँच कर श्री लाला शङ्करलाल जी के सभापतित्व में एक पब्लिक मीटिङ्ग की जिसमें सुरक्षा बन्दियों की मांगें तथा उनके प्रोटेस्ट में भूख हड़ताल करने पर विचार प्रगट किये और चीफ कमिश्नर के उस कार्य पर असंतोष प्रगट किया जो उन्होंने समाचार पत्रों को दिये जाने वाले तारों को रोक कर किया था।

इधर सरकार भी खामोश न थी उसने भी ठीक उसी अवसर पर १६ अक्तूबर को श्री जयप्रकाश नारायण के उस ऐतिहासिक पत्र को प्रकाशित करके जनता में हलचल पैदा की। सरकार का विश्वास था कि इस पत्र के पढ़ने के बाद जनता इन भूख हड़तालियों को उपेक्षा की दृष्टि से देखेगी और इस प्रकार भूख हड़तालियों को जनता की सहानुभूति से हाथ धोना पड़ेगा। मगर हुआ इससे उल्टा ही, नवयुवक उस पत्र से उत्साहित हुये, जनता में चेतना और जागृति हुई और देश के कई प्रमुख नेताओं ने उस पत्र पर अपने वक्तव्य प्रकाशित किये। श्री पूज्य गाँधीजी, श्री मोहनलाल सक्सेना, श्रीपुरुषोत्तमदास टीकमदास प्रधान मन्त्री कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी तथा श्री विश्वम्भर दयाल त्रिपाठीने अपने अपने वक्तव्य देकर सरकारकी आलोचना की। इस प्रकार सरकार का यह थोथा वार यों ही खाली चला गया। पाठकों की जानकारी के लिए उस पत्र का देना अनुचित न होगा इसलिए अन्यत्र दिया गया है।

यह भूख हड़ताल २२ अक्तूबर को देशके क्रांतिकारी और बृटिश साम्राज्यवाद के सच्चे शत्रु श्री जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में आरम्भ हुई। जयप्रकाश जी के नेतृत्व ने भूख हड़तालियों के हृदय में अदम्य उत्साह और अपूर्वबल उत्पन्न कर दिया था। और वे विश्वास करते थे कि बृटिश हकूमत को मांगों के सामने अवश्य झुकना पड़ेगा। कम्यूनिस्टों ने २३ अक्तूबर सन ४१ ई० को आरम्भ की। इस भूख हड़ताल में कमजोर, बीमार, तथा अनिच्छुक व्यक्ति छोड़ दिये गये जिनकी संख्या नगण्य थी। मगर कम्यूनिस्टों ने बीमार तक नहीं छोड़े क्योंकि उनको पूर्ण विश्वास था कि भूख हड़ताल २–४ दिन में ही समाप्त हो जायेगी। इसलिए इतनी सस्ती शहादतका अवसर हाथ से क्यों खोवें? मगर दूसरे व्यक्तियोंका समय अनिश्चित था प्राणों की बाजी थी इसलिये उन्होंने इसमें धींगा दस्ती नहीं की और भूख हड़-

तालियों की इच्छा पर ही सब कुछ छोड़ा। भूख हड़ताल होते ही सुपरिटेन्डेंट ने कैंप में बगावत करने का और भूख हड़तालियों पर मुकद्दमा चलाने का नोटिस दिया। मगर इस नोटिस का किसी के दिलपर जराभी प्रभाव न पड़ा और भूखहड़ताल बदस्तूर चलती रही

लगभग दस दिन के पश्चात डाक्टरों ने फोर्स फीडींग आरम्भ की जिसमें बन्दियों के हाथ पांव पकड़ने के लिए फौज से कहा गया। उसने साफ इन्कार कर दिया कि यह निर्दयता पूर्ण कार्य सिपाहियों का नहीं है। फिर जेल के खाना बनाने वाले और सफाई करने वाले सी क्लास के बन्दियों से कहा गया उन्होंने भी इस घृणित कार्य को स्वीकार नहीं किया। इस पर कैंप अधिकारियोंने मजबूर होकर, काफी दैनिक मजदूरी देकर बाहर से मजदूर नियुक्त किये। लेकिन वे भी अप्राकृतिक भोजन कराने के तरीके को देखकर काँप उठते थे और दूसरे दिन आने के लिये तैयार न होते थे। इस प्रकार कैंप अधिकारियों के सामने प्राणों की आहुति चढ़ाने वाले बंदियों का मुकाबला-एक टेढ़ी समस्या थी। ये बंदी जो तिल तिल अपने शरीर को भूख की ज्वाला में जला रहे थे ब्रिटिश साम्राज्यवाद को खुली चुनौती दे रहे थे। कैंप के अंग्रेज अधिकारियों की हिम्मत छूट गई थी। वह भूख हड़ताल के दौरान में एक दिन भी बंदियों के सामने न आ सके केवल—गढ़वाली और बलूची पलटन के सिपाही जबर्दस्ती नाक के द्वारा, रबड़ की नली से, भोजन पहुंचाने वाले विशेषज्ञ डाक्टरों (जो भारतवर्षके हर कोनेसे आये हुए थे)के जत्थे ही कैंपमें दिखाई देते थे।

लगभग सब हड़तालियों ने फोर्स फीडिंग का घोर विरोध किया फिर भी एक एक व्यक्ति को कमजोरी की हालत में जब कई कई मनुष्य जबर्दस्ती पकड़ कर फोर्स फीडिंग कराने लगे तो–विवश होकर फोर्स फीडिंग कराया ही गया मगर इस संघर्षमें डाक्टरों, कम्पाउण्डरों बंदियों तथा भाड़े पर आये हुए लोगों को बहुत चोटें आयीं।

जिस दिनसे भूख हड़ताल आरम्भ हुई, उसी दिन समाचार पत्र, मुलाकात और पत्र व्यवहार सर्वथा बंद कर दिया गया। यहाँ तक कि

कोई भी ऐसा सूत्र नहीं रहने पाया जो वहाँ की गन्ध भी बाहर निकल सके। इतनी दूर अपने प्रांतों से फेंके हुए व्यक्तियों का जीवन सराहनीय था जिन्होंने अपने अमूल्य जीवन को सिद्धांत की बलिवेदी पर उत्सर्ग करने में ही गौरव समझा था। शीतकाल का समय— कठिनाइयोंका अनुभव, भुक्तभोगी ही कर सकते हैं। इस भूखहड़ताल का प्रत्यक्षः सरकार पर कोई प्रभाव नज़र नहीं आता था। मगर भारतवर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक यह समाचार बिजली की तरह फैल गया था। जगह जगह हड़तालियों की माँगों का समर्थन करने के लिये प्रदर्शन और सभाओं का आयोजन किया गया। कई स्थानों पर पुलिस ने प्रदर्शन और सभाओं पर रोक थाम की भारत के राजनैतिक क्षितिज पर व्यक्तिगत सत्याग्रह से जो शिथिलता छा गयी थी, वह देवली की भूख हड़ताल से विनष्ट हो गयी और सारे भारतवर्ष के अन्दर अँग्रेजों के प्रति घोर घृणा और उनको यहां से निकाल देने की मनोवृत्ति जागृति हो उठी। ६ या ७ नवम्बर को श्री योगेशचन्द्र चटर्जी की हालत बहुत चिंताजनक हो गई। सुपरिटेन्डेन्टने उनके जीवनका उत्तरदायित्व लेनेसे साफ़ इन्कार कर दिया और गृह सदस्य मि० मैक्सवेल को इस गम्भीर परिस्थिति के लिये तार दिया। केन्द्रीय सरकार ने उनको छोड़ने की आज्ञा भेज दी और वह छोड़ दिये गये।

पन्द्रह दिनके पश्चात केन्द्रीय सरकार के मनोनीत सदस्य मिस्टर एन० एम० जोशी वहाँ पधारे। उन्होंने आते ही सबसे पहले कम्यूनिस्टों से अलग बात की और फिर श्री जयप्रकाश नारायण, सरदार सोतासिंह, श्री मोहनलाल गौतम, श्री जी० के० जैतलीसे सुपरिंटेन्डेट के कार्यालय में बात चीत की। और कहा कि बाहर कुछ कम्यूनिस्ट देवियाँ मेरे पास गयीं और गवर्नमेंट से बातचीत करने को कहा— जिसके फल स्वरूप मैं देवली में अपनी तरफ से आया हूँ मुझको सरकारने नहीं भेजा है। इसलिये मैं इतनाही कहता हूँ कि भूखहड़ताल तोड़ने के बाद गवर्नमेंट आपकी मांगों पर विचार करेगी। प्रतिनिधियों

ने जोशी जी के कष्ट के लिए धन्यवाद दिया। और कहा—कि आपको इतने कार्य के लिये आने की आवश्यकता न थी। हममें से तो प्रत्येक अपनी माँगों को पूरा कराये बगैर—अनशन समाप्त नहीं करेगा। इसके पश्चात वह फिर कम्यूनिस्टों से मिले और उनको भूख हड़ताल तोड़ने के लिए कहा। उनके साथ बाहर से बम्बई कम्यूनिस्ट भी आये हुए थे, उनका सन्देश भी उनको दिया कि वह भूख हड़ताल समाप्त करदें हम बाहर प्रचार जारी रखेंगे। कम्यूनिस्ट भूख हड़ताल तोड़ने का बहाना ढूंढ ही रहे थे। उनके बाबू क्रान्तिकारी इस कठिन लड़ाई को और अधिक नहीं चला सकते थे। क्योंकि भूख हड़ताल की सहस्र सुइयां चुभाने की असह्य वेदना वे नहीं सहन कर सकते थे। और न उनमें इतना प्रबल मनोबल ही था कि जो तिल तिल घुलकर अपने शरीर की आहुति दे सकते।

कम्यूनिस्ट लीडरों ने अपने साथियों की मीटिंग की और उनको यह विश्वास दिलाया कि अब हमारी मांगें पूरी हो जायेंगी, हमारा उद्देश्य पूरा हो गया है। इसलिए हमको भूख हड़ताल समाप्त कर देनी चाहिए। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कम्यूनिस्टोंने इस भूख हड़तालको इतना गम्भीर नहीं समझा था। इसलिए एक सिरे से सब भूख हड़ताल में सम्मिलित थे। यहां तक कि बीमार तथा निर्बल व्यक्ति भी मुक्त नहीं रखे गये थे। कोई किसी के साथ रिआयत न थी। अतः पन्द्रह दिनकी भूख हड़ताल में वह काफी निस्तेज और निर्बल हो गये थे। इसके अतिरिक्त उनमें ऐसे कमज़ोर हृदय के भी व्यक्ति थे जो अधिक दिन तक टिक ही नहीं सकते थे। इसलिए कम्यूनिस्ट पार्टी ने उस थोथे आश्वासन पर ही भूख हड़ताल समाप्त करने का निश्चय कर लिया। यद्यपि कम्यूनिस्टों में कुछ पंजाबी भूख हड़ताल समाप्त करने के ज़राभी पक्ष में न थे मगर अनुशासन की बलि वेदी पर उनको भी अपने विचार को बलि करना पड़ा।

देवली के नज़र बन्दों की मांगें पूरी कराने के लिए देहली में एक कमेटी स्थापित की गयी थी जिसके मंत्री श्री सरदार मंगलसिंह एम० एल० ए० थे उन्होंने बड़ा जबर्दस्त प्रचार किया और सारे

भारतवर्ष में ७ नवम्बर का दिन "देवली डे" मनाने के लिए निश्चय किया। इस दिनको असफल बनाने के लिए ही सरकार ने ६ नवम्बर एन. एम. जोशीको भूख हड़ताल तुड़वाने भेजा था। जिसके लिए उन्होंने सब जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर कहा था कि मैं सरकार की ओर से न आकर केवल व्यक्तिगत तौर पर भूख हड़ताल तुड़वाने आया हूँ। उन्हीं की भूल के कारण बन्दियों को ७ नवम्बर के देवली डे मनाने का पता चल गया था। इसलिए जब कम्यूनिस्ट ६ नवम्बर को भूख हड़ताल समाप्त करने को तैयार हो गये तो दूसरे साथियों को इसका हार्दिक दुःख हुआ। साथियोंने एक बार उनको समझाने की चेष्टा की और कहा—कि आप आज भूख हड़ताल समाप्त न करें। क्योंकि कल सारा देश "देवली डे" मनाने जा रहा है। आप लोग आज अनशन समाप्त करके सारे देश के उत्साह पर पानी फेर देना चाहते हैं। और सब बन्दियों की मांगों की लड़ाई में उतरने वालों के साथ विश्वास घात कर रहे हैं। लेकिन उन्होंने एक भी न सुनी और अनशन समाप्त कर ही दिया। अगर यहीं तक ही होता तो भी गनीमत थी उन्होंने तो सारे देश को एक प्रकार भ्रम में छोड़ दिया। उन्होंने गवर्नमेंट की मददसे तार दे डाला कि देवलीकी भूख हड़ताल समाप्त हो गई है।

इस खबर से देश में असंतोष और दुःखका वातावरण फैल गया लेकिन सही लोगों के दिल में यह नहीं बैठा कि श्री. जय प्रकाश नारायण जैसे कर्मठ और महान क्रान्तिकारी नेता के नेतृत्व में बिना माँग पूरी हुए कैसे अनशन समाप्त हो सकता है हो न हो यह कम्यूनिस्टों का दल होगा जिन्होंने लड़ाई के मैदान से भाग कर अनशन तोड़ दिया है और बात भी वास्तव में यही थी।

कम्यूनिस्टों के अनशन समाप्त करने के बाद लगभग चालीस व्यक्ति भूख हड़ताल पर थे। कैम्प में मायूसी छा गयी। और यह समझा जाने लगा कि अब यह चालीस व्यक्ति अपनी भूख हड़ताल से गवर्नमेंट को नहीं झुका सकेंगे। और न इनमें नैतिक बल ही होगा कि यह अधिक

दिन तक टिक सकेंगे। देवली के बाहर देश में इसी प्रकार का वातावरण उत्पन्न किया गया था। जिसके फल स्वरूप महात्मा गांधी का देवली का ऐतिहासिक तार श्री जयप्रकाश नारायण के नाम आया जिसमें उन्होंने कहा था कि बहुमत के भूख हड़ताल तोड़ देने के बाद यदि आपका अल्प मत भूख हड़ताल जारी रखता है तो देश इसको ठीक नहीं समझता। श्री जयप्रकाश जी ने इस तार का उत्तर इस प्रकार दिया कि पंजाब के साथी केवल छः आना प्रति दिन भोजन व्यय के लिए पाते हैं। पंजाब सरकार पर आप दबाव दें कि उनके साथ ए क्लास नजरबंदी का बर्ताव किया जाय। इसलिए हम लोग अपनी भूख हड़ताल तब तक बराबर जारी रखेंगे कि जब तक यह समस्या हल न हो जायेगी।

इसी प्रकार के तार अन्य नेताओं के पास से भी आये। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के लिए अग्नि परीक्षा उपस्थित हो गई थी। या तो श्रीजयप्रकाशनारायण रोगसे पीड़ित शरीर जिसका एक दिन भी फोर्स फीडिंग नहीं हो सका था। अपने साथियों के प्राणों की बाजी लगाकर सरकार को झुकाता या अनशन तोड़कर कम्यूनिस्टों के षडयंत्र का शिकार बनता और सदैव के लिये अपना अस्तित्व मिटा देता।

कैंप अधिकारियों ने सारे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और अन्य साथियों को प्लेग्राउन्ड में एकत्र करने का आयोजन किया उनको आशा थी कि शायद ये सब एकत्र होते ही अनशन तोड़ देंगे। पन्द्रह दिनकी भूख हड़तालके बाद चेहरेकी आकृति इतनी बिगड़ गयी थी कि एक साथी दूसरे साथीको ठीक से पहचान भी नहीं सकता था। बाबू जयप्रकाश नारायण जो ज्वर से पीड़ित थे और ठीक से चल फिर भी नहीं सकते थे—स्ट्रेचर पर उठाकर मीटिंग में लाये गये। गम्भीर परिस्थिति थी कुछ साथियों की इच्छा थी कि बहुत बड़ी संख्या के अनशन तोड़नेपर हम लोगोंको भी तोड़ देना चाहिए। लेकिन डाक्टर जी० के० जैतली ने साथियों से अपील की कि कम्यूनिस्टों का अनशन

समाप्त करना हमारे लिए कोई अनोखी बात नहीं है। यह तो हम जानते ही थे कि वे बीचमें ही धोखा देंगे। इसलिए हमने उनसे एक दिन पहले ही भूख हड़तालका नोटिस दिया था और एक दिन पहलेही भूख हड़ताल आरम्भ की थी। इसलिए यह लड़ाई तो हम लोगों ने आरम्भ की है जब तक हमारी माँगें पूरी न होंगी हम को लड़ाई जारी रखनी चाहिए। श्री जयप्रकाश नारायण (जिनका शरीर काफी दुर्बल हो चुका था मगर चेहरे पर वीरता और शौर्य प्रकट था) ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा—बृटिश साम्राज्यवाद को हमारी माँगों के सामने झुकना होगा। और हमारी लड़ाई तब तक जारी रहेगी कि जब तक हमारी सारी मांगें पूरी नहीं हो जातीं। इस जबर्दस्त क़दम के बाद बहुत से वह बूढ़े आदमी जो कि डाक्टरी के दृष्टिकोण से इस युद्ध में अलग रखे गये थे जोश में आकर शामिल हो गये, उनमें महाशय केदारनाथ आर्य और दिलीपसिंह गिल के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

कम्यूनिस्टों की कमज़ोरी के कारण रेवूल्यूशनरी सोशलिस्टपार्टी तथा हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी में दो विचार धारायें बहने लगीं। कुछ व्यक्ति इस पक्ष में थे कि भूख हड़ताल समाप्त करनी चाहिए और कुछ व्यक्ति इसको समय से पूर्व समझते थे। चुनांचे दोनों पार्टियों के कुछ व्यक्तियों ने भूख हड़ताल समाप्त करदी और कुछ बराबर करते ही रहे।

७ नवम्बर को सारे देश में बड़ी शान के साथ 'देवली डे' मनाया गया। स्थान स्थानपर पब्लिक मीटिंग और प्रदर्शन किये गये। जिनके फल स्वरूप कई स्थानों में पकड़ धकड़ हुई। जलूसों पर लाठी चार्ज किया गया। कानपुर में तो जलूस के ऊपर अश्रु गैस के बम चलाये गये। जिसमें पुलिस की मोटर से दबकर एक व्यक्ति शहीदभी हो गया। दूसरी जेलों के नज़रबंदों में भी कई ने देवली नज़र बन्दों की सहानुभूति में भूख हड़ताल आरम्भ की और अनेक प्रकार की

यातनाओं का सामना किया। आगरा सेन्ट्रल जेल में श्री मन्मथनाथ गुप्ता पर जेल की दफा ५२ के अनुसार मुकदमा चलाया गया और ६ मासकी सज़ा दी गयी। अपराध उनका केवल यही था कि उन्होंने भी सहानुभूति में भूख हड़ताल आरम्भ की थी।

जब कम्यूनिस्टोंने बीचमें ही भूखहड़ताल समाप्त करदी तो जनतामें बड़ा भारी क्षोभ फैल गया और उनका उत्साह ठंढा पड़ गया। जनता में साफ दो विचार धारायें बहने लगीं एक कम्यूनिस्टों के पक्षपाती और सरकारके पिट्ठू दूसरे देशके सच्चे क्रांतिकारी और सरकारके दुश्मन। दोनों अपने अपने पक्षका समर्थन करते थे मगर सर्वसाधारण में दूसरा पक्ष अधिक मान्य था इसलिए देवलीके नजरबंदों की मांगों का समर्थन बराबर जोर पकड़ता गया। सारेदेशमें हाहाकार मच गया इधर सरदार मंगलसिंहने रातदिन एक कर दिया, बड़ी दौड़ धूपकी। श्री आचार्य नरेन्द्रदेव, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, मोहनलाल सक्सेना इत्यादि अनेक नेताओंके तार श्री जयप्रकाश नारायणके पास पहुंचे जिनमें उनसे कहा गया था कि आप भूखहड़ताल समाप्त करें आपकी माँगोंको पूरा करानेका भरसक प्रयत्न कर रहे हैं, मगर यहाँ तो केवल एक ही उत्तर था जब तक सरकार की ओरसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूपमें हमारी माँगें पूरी करने का कोई आश्वासन नहीं मिलता भूखहड़ताल बदस्तूर चलती रहेगी।

इसी बीचमें मास्टर काबुलसिंहकी हालत बहुत चिंता जनक होगयी उनके सारे शरीरमें एक प्रकारका बिष पैदा होगया जो किसी भी समय उनकेलिये प्राणघातक सिद्ध हो सकता था। उनके सिरपर कच्चे धागे से बंधी मृत्युकी तलवार लटक रही थी। कैंप अधिकारी घबरा गये उन्होंने उसी समय केन्द्रीय सरकारको लिखा, वहाँसे पंजाब सरकारको सूचना दी गयी। मगर पंजाब सरकारने इसका पूर्ण विश्वास नहीं किया इसलिये अपनी दिल जमईकेलिये उसने जेलखानोंके इन्सपेक्टर जनरल को वहां भेजा। इन्सपेक्टर जनरलने मास्टर काबुलसिंहसे मुलाकात की और उनकी नाजुक हालतसे प्रभावित होकर उनको छोड़नेपर विवश

हुए। और वह छोड़ दिये गए। इसी बीच १३ या १४ नवम्बरको उनके बच्चे और स्त्री सेठ सुदर्शन एम०एल०ए०के साथ देवली पहुँचे वे मास्टर साहबको अपने साथ सीधा पञ्जाब ले गये।

इनके साथही सरदार मङ्गलसिंह भी देवली पहुँचे। उन्होंने पहले तो सबलोगोंका परिचय प्राप्त किया फिर उन्होंने कहा कि मैं होम मेम्बर श्री० मैक्सवेलकी तरफसे भेजा हुआ आरहा हूँ उन्होंने आपकी मांगोंपर विचार करनेका आश्वासन दिया है और कहा है कि यहांसे आप लोग अपने अपने सूबोंको वापिस भेज दिए जायेंगे वहां जानेपर आप लोगोंके साथ सहृदयतापूर्वक बर्ताव किया जायेगा। जिन सूबोंमें कोई मिनिस्ट्री नहीं है उन सूबोंके गवर्नरोंको केन्द्रीय सरकारकी ओरसे आपकी माँगें पूरीकरनेकी हिदायत देदीजायगी मगर जिन सूबोंमें मिनिस्ट्री कायम है हम उनकी जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले सकते। इसपर प्रतिनिधियों ने अनशन तोड़ने से साफ़ इंकार कर दिया और कहा कि जबतक उन सूबों की सरकार भी हमारी माँगों को नहीं मान लेगी तब तक अनशन समाप्त न होगा। आप सारी मांगों को पूरी कराके ही यहां आइयेगा, अन्यथा नहीं। उस समय पञ्जाब में पापुलर सरकार कायम थी उसके प्राइमिनिस्टर सर सिकन्दर हयात खाँ बहुत सख्त आदमी थे। उनका बर्ताव राजनैतिक बन्दियों के साथ अच्छा न था वह उनको सख्ती के साथ दबाना चाहते थे इसलिये बड़ी बड़ी भूखहड़ताल करने के बाद भी पंजाब के कामरेड उनको ज़रा भी न झुका सके थे अधिकांश राजबन्दी-सी क्लास में रखे जाते थे और सुरक्षा बन्दी बी क्लास में। इसलिए पञ्जाब के सुरक्षा बन्दियों ने सरदार मंगलसिंह का ध्यान इस ओर आकर्षित कर दिया और कहा कि इस समस्या का हल होना आवश्यक है। सरदार मंगलसिंह भी इस बात से भली प्रकार वाकिफ़ थे। मालूम ऐसा पड़ता था कि मैक्सवेल ने जान बूझकर ही पञ्जाब का पचड़ा इस प्रकार लगाकर वहां की जिम्मेदारी से अपने को मुक्त रखा था। बहुत सम्भव है कि उनको यह विश्वास रहा हो कि सर सिकन्दर

इन माँगों के लिये ज़रा भी न झुकेंगे। और उनकी मांगें पूरी न होने की । जिम्मेदारी उनके सिर पर रहेगी और इस प्रकार हमारी पोजीशन बिल्कुल साफ़ हो जायेगी। ख़ैर—कुछ भी रहा हो। सरदार मोतासिंह ने सब बन्दियों को आश्वासन दिया कि मैं पंजाबकी समस्या को सबसे पहले हल करूँगा। और तभी आप लोगोंके पास आऊँगा, अन्यथा नहीं।

सरदार मंगल सिंह सीधे महात्मा गाँधी के पास पहुंचे। और यहाँ की सब स्थितिसे अवगत किया। श्रीगाँधीजी ने जयप्रकाश नारायण जी को भूख हड़ताल तोड़ने के लिये जो तार दिया था उसका नकारात्मक उत्तर पाकर वह बहुत ही चिन्तित थे। वह शीघ्रसे शीघ्र यहाँ की समस्या को सुलझाना चाहते थे। इसलिये सरदार मंगल सिंह के वहाँ पहुंचतेही इस समस्याको हल करने में उनको सहायता मिली। उन्होंने उसी समय सर सिकन्दर हयात ख़ाँ को तार दिया कि वह मुझसे जितना जल्दी हो सके मिलें। उत्तर में सर सिकन्दर ने कहा कि मैं वर्धा के स्टेशन पर मिलूंगा क्योंकि मैं इन्हीं दिनों एक देशी राज्य में जा रहा हूँ।

महात्मागाँधीने अपने प्राइवेट सेक्रेटरी श्रीमहादेवदेसाई को वर्धा स्टेशनपर सरसिकंदर से भेंट करने भेजा। श्रीदेसाई उनसे वर्धा स्टेशन पर मिले और उनको महात्माजीका सन्देश दिया सरसिकन्दरहयातख़ां ने उनको विश्वास दिलाया कि बन्दियों के मामले पर सहृदयता पूर्वक विचार किया जायेगा। और सुरक्षाबन्दियोंको देवलीके स्टैंडर्डके मुताबिक ही सब सुविधायें दी जायेंगी। अन्त में महात्मा गाँधी के सहयोग और सरदार मङ्गल सिंह की दौड़ धूप के फल स्वरूप बन्दियों कि सब माँगें पूरी होने के आश्वासन मिले।

सरदार मंगल सिंह २२ नवम्बर को फिर देवली पहुँचे। उन्होंने महात्मा जी द्वारा सर सिकन्दर से पूर्ण आश्वासन मिलने की बात बन्दियों को बताई और कहा कि अब आप सबकी माँगें पूरी हो गई हैं अब आपको भूख हड़ताल समाप्त कर देनी चाहिए। सब भूख

हड़ताली एक स्थान पर एकत्र कर दिये गये उन सबके सामने सरदार मङ्गल सिंह का आश्वासन रखा गया। सबने एक दिल से उस आश्वासन का स्वागत किया और सब सुरक्षा बन्दियों ने नीम्बू के शरबत से भूख हड़ताल समाप्त की। इधर मास्टर मोता सिंह की अवस्था काफ़ी गिर चुकी थी। इन्होंने फोर्स फीडिंग बिल्कुल भी नहीं होने दिया था। उन्होंने इस वृद्धावस्था में भी जिस जीवन का परिचय दिया, वह अनुकरणीय है। उन्होंने केवल गन्ने के रस से अनशन समाप्त किया। चारों ओर आनन्द की लहर दौड़ गई। हर तरफ़ राष्ट्रीय गानों और नारों से कैंप गूञ्ज उठा।

स्वस्थ होने पर सब भूख हड़ताली अस्पताल से अपने अपने कैंपों में वापिस गये उनका सब बन्धुओं ने खूब स्वागत किया जैसे किसी विजयी योद्धा का स्वागत किया जाता है। खूब चहल पहल रही। पञ्जाब के कामरेड तो फूले नहीं समा रहे थे क्योंकि इन लोगों के बलिदानने उनके कंटकमय पथको बिलकुल साफ़ कर दिया था। उनकी आँखों के सामने सर सिकन्दर के दुर्व्यवहारों की जो भयानक छाया नाचा करती थी वह आज विलीन हो गई थी। वे सब भूरि भूरि प्रशंसा कर रहे थे और बधाइयां दे रहे थे। उनके हृदय में एक उथल पुथल सी मची हुई थी। इन साथियों का साथ न देने पर वे हृदय से दुखी मालूम होते थे। यद्यपि उन्होंने अपने नेताओं के आदेशानुसार पहले ही अनशन तोड़ दिया था मगर वे अन्त तक डटे रहने को ही ठीक समझते थे। इस प्रकार की उन्होंने कई बार आलोचनाएं भी कीं। उनके हृदय में अपने नेताओं की ओर से विरक्ति सी मालूम देती थी। मगर अनुशासन अपनी पार्टी के अन्ध भक्त होने के कारण वे अंदर ही अंदर कुढ़ते रहते थे। पर प्रत्यक्षरूप कुछ नहीं कर सकते थे। हमको संतोष था कि हमारा बलिदान व्यर्थ नहीं गया इसने चारों ओर जागृति की रूह फूंक दी और अपना औचित्य सिद्ध कर दिया।

इस अनशन की सफलता का श्रेय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को

की मिलना चाहिये। क्योंकि उसके कर्मठ और त्यागी नेता श्री जय-प्रकाश नारायणके नेतृत्वने कम्यूनिस्टोंके षडयंत्रको बेकार करदिया था ब्रिटिश साम्राज्यवादको धराशायी करदिया था तभी तो देशने इस लड़ाईके सफल नेतृत्वके लिए श्रीजयप्रकाशनारायणको देशलीके नायक Hero की उपाधिसे विभूषित करके अपनी श्रद्धांजली अर्पित की है।

श्रीजयप्रकाश नारायणजीका ऐतिहासिक पत्र

❀ पत्र नं० १ ❀

यहां की परिस्थितिः—नं १ यह राजनैतिक नजरबन्द कैम्प, मुख्यतः कम्यूनिस्टों के लिये बना हुआ है। इस कारण यहां पर स्वभावतः अन्य लोगों की अपेक्षा कम्यूनिस्ट अधिक संख्या में रखे गये हैं। यहां पर दो कैम्प हैं। कैम्प पहला और कैम्प दूसरा। कैम्प नं० १ में ए क्लास के राजनैतिक बन्दी हैं और कैम्प नं० २ में बी क्लास के राजबन्दी हैं। पहले कैम्प में राजबन्दियों की संख्या १०४ है जिनमें अधिकांश संयुक्त प्रांत के हैं। इनमें से छियासठ कम्यूनिस्ट पार्टी के सङ्गठन में हैं, शेष अड़तीस में से आठ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, ग्यारह रेव्यूलूशनरी सोशलिस्ट पार्टी (अनुशीलन समिति) २ हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन, १४ असम्बन्धित तथा फुटकर हैं। जैसे राइस्ट, टैगोराइट, लेबरपार्टी और फार्वर्ड ब्लाक कम्यूनिस्ट पार्टी के छयासठ सभासदोंमें से केवल पैंतीस, बाहर कम्यूनिस्ट पार्टी के सभासद थे। दूसरे बाकी बचे हुए मेरे इस कैंपमें आने से पूर्व इस सङ्गठनमें चले गये। उन लोगोंमें से जो कम्यूनिस्ट पार्टीमें सम्मिलित हुए हैं बी०पी०एल० बेदी पंजाब, प्रोफेसर तिलकराज चड्ढा पंजाब, सरदार कुलबीरसिंह, सरदार कुलतारसिंह, आखरी दोनों सज्जन श्रीभगतसिंह के भाई हैं ये चारों पहले कांग्रेस सोशलिस्टपार्टी में थे। पंजाब कामरेड के बारे में जानकारी के लिए नीचे पढ़िये। कम्यूनिस्टोंकलीडरोंमें जो यहाँ पर हैं—भारद्वाज, अजय, मिराजकर और

अहमद । दूसरे कैंपमें हैं मि० घाटे; कॉ० सो० पार्टीके लीडरोंमें यहाँ पर हैं गौतम, जैतली और मैं, आप दूसरों को नहीं जानते बिहारके सभी साथी मेरे अतिरिक्त कैंप दो में हैं।

अच्छा मसाला नहीं–R.S.P. में योगेश बाबू, केशववर्मा और दूसरे व्यक्ति हैं H:S.R.A. के बारे में कुछ अधिक नहीं कहना है- कैंप दो के बन्दियोंकी संख्या ६० से अधिक है जिनमें से लगभग ७- के कम्यूनिस्ट पार्टीके सङ्गठनमें सम्मिलित हैं और ६ या ७ गैर राजनीतिक हैं वहाँ C.S.P. के योगेन्द्रशुक्ल, सूरजनारायण और श्यामाचरण भर्थवार हैं । और बाकी दूसरे जो हैं वह या तो स्वतँत्र हैं और या दूसरे दल के व्यक्ति हैं । फार्वर्ड ब्लाक, कांग्रेस, बब्बर अकाली, इत्यादि जिस प्रकार कैंप १ में यू०पी०के अधिक व्यक्ति हैं उसी प्रकार कैंप दो में पंजाबके बन्दी अधिक हैं । अब कम्यूनिस्ट पार्टी के बारे में दो मुख्य बातें हैं जिनमें एक तो यह है कि पंजाब की कीर्ति किसान पार्टी यहां पर कम्यूनिस्ट पार्टी में ही शामिल हो गई है जितने कीर्ति के नेता हैं वे सब यहां पर हैं यह पहला ही अवसर नहीं है जबकि कीर्तिपार्टी कम्यूनिस्ट पार्टीमें सम्मिलित हुई और यह कोई विश्वास नहीं कर सकता है कि पूरे कैंपभर ये एकसाथ रहेंगे भी जो कुछ भी हो इस समय एक साथ हैं ।

दूसरी बात यह है कि हमारे पँजाबके साथी भी कम्यूनिस्टोंके साथ हो गये हैं । सागर, मंगोराम वत्स, रिछपालसिंह, डा० गोबिंदसिंह, रामकिशन और तीन दूसरे जिनको कि आप नहीं जानते वह कैंप दोमें हैं । सागरने इसमें नुमाइन्दगी की है हमारे मित्र किशोरी ने भी यह प्रचार करके कि मैं हजारी बाग जेलमें इसी लाइनपर सोच रहा था अपना हिस्सा बंटाया है । मैं यहां पर यह लिख देना चाहता हूँ कि किशोरीने भी इसमें शरकत करली है (विशेष फिर लिखूंगा) ।

यह बात बड़े दु:खकी है कि मैं कुछदिन पहले देवली कैंपमें नहीं पहुंच पाया । जो कुछ भी हो इस खाकेमें जिसको मैंने आपके सामने

खींचा है कोई दहशत और अफसोस की बात नहीं है चूंकि मैं जबसे यहां आया हूं पंजाबके साथियोंके साथ मेरा तर्क वितर्क चल रहा है उनमें से केवल ठा. गोविंदसिंह सदैवकेलिए चले गये हैं। दूसरे इस बातपर राजी हैं कि उनका फैसला अन्तिम नहीं है। यहांसे मुक्त होने के बाद अखिल भारतीय नेता और पंजाबके नेताओंसे सलाह करने के बाद वह तय करेंगे। तिलकराज, रामरिछपाल, वरस ये समस्त मुख्य सभासद कम्यूनिस्टपार्टीसे असन्तुष्ट हैं और उन्होंने इस बातका निर्णय कर लिया है कि वे जेलसे मुक्त होने के बाद ऐलान करेंगे कि उन्होंने पूर्णरूपसे कम्यूनिस्टपार्टी के साथ अपना संबंध विच्छेद कर लिया है और अपने उन साथियोंका विरोध करते हैं जो इनको कम्यूनिस्टपार्टी में मिले रहने की राय देते हैं, कुलबीर, कुलतार और कमसेकम दो अन्यसाथी कैंप दो के करीब २ इसी विचार के हैं। मैं वेदीकी अवस्था को बयान करना भूल गया वह डांगे और रणदिवेसे अधिक प्रभावित हुए हैं। जो कि मेरे आनेसे पूर्व अजमेर भेज दिये गये हैं। उन्होंने कम्यूनिस्टों से घनिष्ट मित्रता उत्पन्न करली है। राजनीतिक दृष्टिकोण से उनकी अवस्था सागरकी तरह है। लेकिन जबकि सागर एक गंभीर है तो वह छिछले हैं यह जान पड़ता है कि उनमें निष्ठाका अभाव है। सागर खुद जबकि कोई खासबचनही नहीं देना चाहते हैं तबभी उन्होंने जो कुछ किया है उस पर बहुत आरूढ़ नहीं है हर सूरत में अधिकांश पंजाब के साथी कम्यूनिष्टपार्टी छोड़ने के लिए कटिबद्ध हैं अपनी जेल की रिहाई के बाद हम लोगों ने बहस के दौरान में उनको यही समझाने की चेष्टा की कि यहां का संबंध विच्छेदही औचित्यपूर्ण है लेकिन उन्होंने मुन्शी जी के आजाने पर ही यह फैसला देने को कहा है कि जिनके आने की हम नित्य प्रति प्रतीक्षा कर रहे हैं पंजाब के वे साथी जो निश्चितरूपसे हमारेसाथ हैं वे ये नहीं चाहते हैं कि उनके दलमें दो विचार उत्पन्न होजायं क्योंकि वे सोचते हैं कि बाहर जाकर उनके कार्य में बाधाउत्पन्नहोजायेगी जो कुछभीहो हम मुन्शीजीकी प्रतीक्षाकर रहे हैं

बहुत सतर्क रहिये.—अब मैं यह नहीं चाहता हूँ कि यह समाचार

पंजाब या अन्य जगह के साथियों में फैले मैंने यह समाचार आपको इसलिए दिया है कि आप अपनी बुद्धि से निर्णय करने के बाद इसका लाभ उठावें लेकिन आप बहुत ही सतर्क रहिये किशोरी के लिए एक शब्द है उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि उनमें आत्मविश्वास का सर्वथा अभाव है।

वह पंजाब के साथियों से भी पहले कम्यूनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये हैं। उनकी पूरी सफाई में यही था कि वह शेरेको पसन्द नहीं करते हैं। उन्होंने मुझको निश्चय कराया है कि यह फैसला उनका भी अन्तिम नहीं है। मगर मैं उनका विश्वास नहीं करता, वह मुझको एक बात बतलाते हैं दूसरों का दूसरी। साथ ही वह यह भी प्रचार करते हैं कि जयप्रकाशनारायण कांग्रेस समाजवादी पार्टी पर कब्जा किये हुए – और अपने नेतृत्व के लिये उसे चलाते हैं। उन्होंने शुक्ल जी को अपने साथ लेने के बहुत प्रयत्न किये मगर शुक्ल जी अपने स्थान पर चट्टान की तरह अचल रहे। मैं उनकी दृढ़ता और वीरता पूर्ण राजनीतिक भाव का सम्मान करता हूँ। अपने बिहार के साथियों को किशोरी की धोखे बाजी का समाचार देदेना चाहिये। लेकिन यहां पर भी इसकी परवाह रखनी पड़ेगी कहीं इस संदेशे के देने से लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक न हो। इन्डियन कम्यूनिस्ट पार्टी के सम्बन्ध में इतना और कह देना चाहता हूं कि उनका बर्ताव और व्यवहार बिल्कुल विरोधी और निहायत नादानी से भरा हुआ है।

आर० एस० पी० का रवैया भी अधिक सन्तोष जनक नहीं था वह सी० एस० पी० की आलोचना करते थे। केवल डाक्टर जैतली ने दृढ़ता पूर्वक उस परिस्थिति का मुकाबला किया। नं० २ कैम्प में कोई आर० एस० पी० का नहीं है। जब से मैं यहां आया हूँ उनका रवैया बदल गया है। मैंने उनसे इस बात का प्रस्ताव किया कि हम लोगों को एक साथ चलना चाहिये। और बाहर भी एक साथ रहना चाहिए। आपको स्मरण होगा कि जब मैं बाहर था तब इसी लाइन पर पुतुल बाबू से मेरी बात चीत हुई थी। इस सम्बन्ध में मैं बहुत

उत्सुक हूँ और आपके मस्तिष्क में इस बातका प्रभाव छोड़ना चाहता हूँ कि मैं इस बात को बहुत आवश्यक समझता हूँ कि आर० एस० पी० को अपने साथ लेलूं। इसकी बहुत कुछ सम्भावना भी है। बंगाल में उसका अच्छा प्रभाव है, इस बात का पता मुझको बंगाल के साथियों से चला है जब कहता हूं कि आर० एस० पी० को अपने साथ लेलूं तो इसका मतलब है कि आर० एस० पी०, सी०एस०पी० में मिल जाय और अपने दल को तोड़दे। यह निम्न लिखित आधार पर सम्भव हो सकता है। कांग्रेस सोशलिस्ट-पार्टी इसका कानूनी नाम होना चाहिए। और यह इसकी एक शाखा होनी चाहिएं जो गुप्त रूप से गैर कानूनी नाम से काम करे। मुझको पूर्ण विश्वास हो गया है कि यदि हम कम्यूनिस्टों के मुकाबले में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमारे पास एक गैर कानूनी संस्था भी होनी चाहिए और गैर कानूनी कार्यवाहियां भी होनी चाहिए। मैं आपको सलाह देता हूं कि बंगाल में आर० एस० पी० के लोगों के साथ मित्रता और प्रेमका व्यवहार होना चाहिए। एच० एस० आर० ए० में से अच्छे लोग हमारे साथ हैं जिनमें दो तो पूर्ण रूप से हैं। जहाँ तक कैम्प जीवन से सम्बन्ध है कैम्प नं० १ व २ के स्वतन्त्र लोगों ने हमारे साथ ही चलना स्वीकार किया है। मैं खेल के मैदान में प्रातःकाल एक क्लास भी चला रहा हूँ। सी०एस०पी० और दूसरे अपने साथ चलने वाले सब व्यक्ति उसमें सम्मिलित होते हैं। यहां पर मैं यह बता देना चाहता हूं कि दोनों कैम्प के लोगों को आपस में मिलने का अधिकार नहीं था। लेकिन एक मास हुआ कि खेल के मैदान में पारस्परिक मिलन स्वीकार हो गया है। प्रातः ६ बजे से ७ बजे शाम को ६ बजे से ७॥ बजे तक खेल का मैदान खुला रहता है। पं० धनराज शर्मा कम्यूनिस्टों के सख्त विरोधी हैं और हमारी क्लास में आते हैं। वह हम लोगों के मित्र हैं लेकिन वह अवधेश्वर और अन्य मित्रों से कुछ नाराज़ हैं। जो कुछ भी हो बिहार किसान सभा में जो फूट हुई है वह इससे दुखी हैं। और इस बात से सहमत हैं कि यहां से मुक्त होने

पर हम लोग एकता कराने का प्रयत्न करें।

(२) तनातनी की परिस्थिति :-जब मैं यहाँ पर आया तो यहाँ की परिस्थिति में बड़ी तनातनी थी, भूख हड़ताल की तैयारी हो रही थी हमारे साथी तथा आर०एस०पी० के लोग भी—इस बात में एक मत थे कि कम्यूनिस्ट भूख हड़ताल को केवल पार्टी के प्रचार के लिए ही करना चाहते हैं। उनकी धारणा बन गई है कि उनको कोई ऐसा काम करना चाहिये जो वे भी जनता की दृष्टि में कुछ समझे जायें। उस कारण से हमारे साथी इस बात पर अड़े हुए थे कि वे भूख हड़ताल में कम्यूनिस्टों को अपने साथ उसी समय ले सकते हैं जबकि वह इस बात का पूर्ण आश्वासन दें कि जब तक सब मांगें पूरी न हो जायेंगी वे तब तक भूख हड़ताल चलाते रहेंगे। जहाँ तक माँगों का सम्बन्ध था हमारे साथियों ने कम्यूनिस्ट पार्टी से कह दिया था कि कमसे कम माँगों की एक सूची सर्व सम्मति से तैयार करली जाय। लेकिन कम्यूनिस्ट पार्टी के लोग केवल प्रदर्शन करना चाहते थे। केवल उन माँगों को छोड़कर जो कि पूरी भी हो चुकी है और माँग पूरी कराने के लिये उत्सुक नहीं थे। इस लिए वे किसी गम्भीर लड़ाई में एक साथ चलने के लिए अपनी रजामन्दी देनेके लिए तैयार नहीं थे। परन्तु इस बीच में कुछ घटनाओं से विवश होकर हमको भूख हड़ताल करनी पड़ी। इस भूख हड़ताल में कम्यूनिस्टों ने हमारा साथ नहीं दिया। इस प्रकार उन्होंने हम लोगोंको धोखा दिया और जानबूझ कर हमको कमजोर करनेका प्रयत्न किया। जो कुछ भी हुआ हमने पांचवें दिन अपनी भूख हड़ताल को अपनी सब मांगें पूरी होने के बाद तोड़ा।

(ख) नं० ३-पार्टी की नीति सम्बन्धी राय :—१. रूस जर्मनी का युद्ध—इस सम्बन्ध में जो राय अलग कागज पर लिखकर दी है वह बिल्कुल मेरी है। सारे मित्र, योगेश बाबू सहित इससे सहमत हैं—लेकिन मैं इसपर जोर नहीं दे रहा हूं। मुझसे आज प्रातः फिर सागर से बातचीत हुई थी, उनको यह भय है कि मैं जो लाइन सुझारहा हूँ उससे जनता के अन्दर भ्रम उत्पन्न हो जायेगा। सागर कांग्रेस सोश-

लिस्ट पार्टी पञ्जाब की लाइन पर सोचते हैं जो कि ट्रिब्यून में छपा हुआ है । इस बात में अच्छा है कि हम रूस से पूरी तरह हमदर्दी रखते हैं लेकिन हम उसमें कुछ करने के लिये विवश हैं—बृटिश हकूमत की नीति के कारण । जो कुछ भी हो मैं आप पर और कार्य-कारिणी पर यह लाइन तय करने को छोड़ता हूं । मैं सोचता हूं कि आप .कार्यकारिणी की दूसरी बैठक बुलाइये कि जिसमें वह पार्टी को संगठित रखें । इस सम्बन्ध में हम जनता के सामने खुल्लम खुल्ला एलान करें कि हमारी सहानुभूति रूस के साथ है । क्या आप सी० एस०पी० की ओरसे एक एम्बुलेंस रोगियोंकेलिये रूस नहीं भेजसकते ?

(२) पार्टी का केन्द्रीय संगठन—ऐसा जान पड़ता है कि कि जबसे आप पटना से लौटे हैं पार्टी की कोई ख़बर नहीं रखते हैं । और न उसको कुछ रुपया ही भेजते हैं । अगर यह दशा बिहार की है जोकि पार्टी की सबसे सक्रिय इकाई है जो दूसरे प्रान्तों की दौड़ धूप और भी खराब होगी । यह बहुत बुरी बात है ।

केन्द्र में बहुत अच्छी तरह से काम लेना चाहिये । और आप में ऐसा करने की क्षमता भी है । मेरी राय है कि गंगा बाबू को पार्टी का संयुक्त मन्त्री बना दिया जाय और वह बम्बई में ही रहें । इस परिवर्तित स्थिति में उनके सम्बन्ध की दूसरी स्कीम छोड़ देनी पड़ेगी । प्रान्तीय शाखाओं की आर्थिक सहायता बहुत आवश्यक है और आपको किसी भी प्रकार से इसे करना है ।

(३) पार्टी का प्रचारः—अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति और कम्यू-निस्ट पार्टी के अपने सिद्धांतोंके पतनसे हमको अधिकसे अधिक लाभ अपनी पार्टी के प्रचार में उठाना चाहिये । यह बहुत ही अच्छा अव-सर है इसको नहीं खोना चाहिये । आप सबको इस कार्य में पूरा पूरा ध्यान देना चाहिए ।

आम राजनीतिक नीतिः—आपने जो सत्याग्रह प्रतिज्ञा पत्र को वापिस लिया है उसको पढ़ा । मैंने उसे पसन्द किया लेकिन आप कुछ ऐसा करें कि सत्याग्रह का जो मजाक चल रहा है उसके मुका-

बले में अपनी पार्टी की स्वतंत्र रूप रेखा स्पष्ट दिखला दे। मैं इस बात को बहुत ही दृढ़ता पूर्वक महसूस करता हूँ कि इस समय हमको कोई आदर्श और आकर्षक कार्यक्रम रखना चाहिये। हम इस समय कोई बड़ा काम तो नहीं कर सकते हैं लेकिन हमको ऐसा कोई जबरदस्त राजनीतिक कार्य करना चाहिए कि जिसका मूल्य हमको भविष्य में मिले। यदि आप सब लोगों को इसके लिए जेल भी जाना पड़े तो परवाह नहीं करनी चाहिये। इस सम्बन्ध में मैं बिहार के बारे में सोच रहा हूँ। साथी लोग किसान सम्मेलन करनेके बजाय चुने हुए स्थानों पर किसानों की लड़ाई छेड़ें या कुछ सक्रिय (action) कार्य करें जोकि आन्दोलनसे बिल्कुल अलग होगा। बिहारके अलावा हमको अखिल भारतीय आधार पर कुछ काम ऐसा करना चाहिए जो जनता में जागृति और युवकों में उत्साह बढ़ावे। इसके लिए कार्य अवश्य सोचिये। पार्टी का गुप्त दल सङ्गठित कर दिया जाय और उस का एक अलग नाम दिया जाय। जैसे क्रांतिकारी मजदूर दल या अन्य कोई। आप जानते हैं कि पंजाब का दल अपना गैरकानूनी कार्य कम्यूनिस्टलीगके नामसे कर रहा है। उसका जो गुप्तपत्र निकलता है उसका नाम बोलशेविक है। अखिल भारतीय आधार पर नवयुवकोंको संगठित करनेकेलिए एक गुप्तपार्टीका होना अत्यन्त आवश्यक है।

(ग) टैकनिकल मैटर :—यह दुःखकी बात है कि आप लोगोंमें से किसी ने भी हम लोगों से सम्पर्क स्थापित करनेकी कोई चेष्टा नहीं की। यदि आप प्रयत्न करें तो यह जरा भी कठिन नहीं है। गङ्गा बाबू ने अपना कुछ समय यहां पर बिताया है इसलिए उनको फिर यहाँ पर ठीक प्रबंध करने के लिए भेज देना चाहिए। वह अजमेर आ जायें और यहाँ पर मित्रों के द्वारा देवली के लोगों से सम्पर्क स्थापित करने में सहायता लें। इस कार्यको संपादन करने के लिए थोड़े से रुपये और सङ्गठन की आवश्यकता है। यदि देवली गांव में कोई हमसे संपर्क बनाने के लिए तैयार हो जाता है तो हमारी समस्या बहुत कुछ हल हो जाती है। देवली से दर्जी, धोबी, मोची हफ्तेवार कैंप में आते

हैं कैंप के अस्पताल में वार्ड बाय काम करते हैं (ये सब गरीब लोग हैं और कुछ उसमें हमदर्द भी निकल सकते हैं) थोड़ा सा इसरार और रुपया काम को सफल बना सकता है। कम्यूनिस्टों के स्थाई सम्पर्क हैं, मैं नीचे अपनी राय दे रहा हूं कि कैसे आप स्थिति संपर्क कायम कर सकते हैं; मैं इस पत्र का उत्तर चाहता हूं। एक उपन्यास की पुस्तक ले लीजिये उसकी जिल्द उखाड़कर पत्र उसमें रखकर फिर जिल्द बँधवा लीजिये। इस पुस्तक को दूसरी पुस्तकों के साथ भेजिये मगर वह पुस्तकें उपन्यास न हों ताकि मैं जान सकूं कि किस पुस्तक की जिल्द उखाड़नी है। यदि संभव हुआ तो मैं तुमको उत्तर भी इसी प्रकार दूंगा। मुझको कुछ गम्भीर मशवरे देने हैं वह मैं तभी दे सकता हूं जब स्थायी सम्पर्क कायम हो जाय इसी बीच में मैं उपन्यास की पहुंच के लिए प्रतीक्षा करूंगा।

\+ + + + +

रूस पर नाजी जर्मन का आक्रमण :—रूस पर नाजी जर्मन आक्रमण ने एक जबर्दस्त पेचीदगी पैदा कर दी है। अब इङ्गलैंड और रूस दोनों मिलकर जर्मनी के खिलाफ लड़ेंगे जो कि दोनों का शत्रु है इसका मतलब यह नहीं है कि युद्ध के सम्बन्ध में हमारा रुख बदल जायगा। इस प्रश्न पर हमें गम्भीरता से सोचना चाहिए। रूस पर हमला होने से पूर्व तक यह युद्ध साम्राज्यवादी था बहुत सी बातों के होते हुए भी हम जानते हैं कि ब्रुटिश इस लिए लड़ रहा है कि वह भारत पर अपना राज्य कायम रख सके और उसका शोषण भी कर सके। इसलिए यह साफ है कि हम लोगों का यह कर्तव्य नहीं है कि किसी प्रकार युद्ध में मदद देकर अपनी गुलामी की जंजीरों को और मजबूत बनावें इसलिये हम लोग युद्ध में मदद देने के खिलाफ है। खिलाफ हैं। हम इस कोशिश में हैं कि लड़ाई से उत्पन्न परिस्थितियों से फायदा उठा कर अपने को आजाद करें। तत्कालिक जर्मन की रूस के खिलाफ कार्यवाही ने किसी भी सूरत में हमारी परिस्थिति में कोई भी परिवर्तन नहीं उत्पन्न किया

अङ्गरेजों का अब भी इस लड़ाई में लड़ने का उद्देश्य साम्राज्यवादी है। अगर रूस और बृटेन का शत्रु एक है तो इसका मतलब यह नहीं है कि दोनोंका उद्देश्यभी एक है बृटेन स्वभावतः इस युद्धमें जो रूसके साथ मदद कर रहा है वह उसी उद्देश्यके लिए नहीं कररहा है जिस उद्देश्य के लिये रूस लड़ रहा है। यह नहीं कहा जा सकता कि बृटेन अपनी स्वार्थ रक्षा के निमित्त रूस को युद्ध में कब अकेला छोड़ दे। यह बहुत सम्भव है कि रूस शेष भाग को बचाने के लिए जर्मनी से समझौता कर ले और इस प्रकार उसको तैयारी करने के लिये समय मिल जाय। जो कुछ भी हो यदि रूस नाजी जर्मनी को समाप्त करना चाहता है तो उसे अन्त में अपने ही बल और साधनोंपर पूरा भरोसा करना पड़ेगा। इसलिये हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि युद्ध में इङ्गलैंड को मदद करना–रूस को मदद करना नहीं है। युद्धमें अंग्रेज़ की सहायता करने का अर्थ है उसकी शक्ति बृद्धि ताकि वह अपने स्वार्थों की रक्षा कर सके। यथार्थमें इस प्रकार की बल-बृद्धि एक समस्या बन सकती है जिससे बृटेन जर्मनी से स्वतंत्र समझौता करले और रूस को धता बता दे इसलिये रूस पर हमला अङ्गरेजों के प्रति हमारी लड़ाई के रुख को जराभी नहीं बदलता, हमारा विरोध अवश्य जारी रहना चाहिए और इसी प्रकार बृटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ युद्ध चलता रहना चाहिये। रूस के सामने जो खतरा खड़ा हुआ है, वह एक महान प्रश्न है जिसपर प्रत्येक सोशलिस्ट का गम्भीरतापूर्वक विचार करना कर्तव्य है। अपनी समस्त भूलोंके साथ भी रूस दुनियां के समाजवाद और सर्वहारा का एक बहुत बड़ा दुर्ग है। जब इस दुर्ग पर आक्रमण हो चुका है तो हम खामोशी से नहीं बैठ सकते। हम रूस को कोई सहायता नहीं पहुँचा सकते हैं बृटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ हमले में कमजोरी नहीं दिखाना चाहिये। उसपर मजबूत हमला ही सोवियट रूस की सबसे बड़ी सहायता होगी। लेकिन प्रश्न रह ही जाता है कि क्या हम सीधे ही रूसको सहायता पहुंचा सकते हैं बगैर बृटिश हकूमतको लड़ाई में सहायता पहुँचाये ?

हुये बृटिश हकूमत ने यह घोषणा कर दी है कि उन्होंने रूसको अपने सामान्य उद्देश्य की पूर्ति के लिये हिटलरवादको नष्ट करने के लिये हर प्रकार की मदद पहुँचा दी है। यह घोषणा हमको अवसर देती है कि हम रूस को सीधे सीधे सहायता पहुँचायें। और साथ ही अङ्गरेजों की घोषणा की परीक्षा भी ले लें इसलिये हम लोगों को गवर्नमेंट के सामने यह बात रखनी चाहिये कि हम लोग रूस को जन धन और वस्त्र से मदद करना चाहते हैं। इसे संग्रह करने के लिये हमें अवसर दिया जाय अगर वह रूस को यथार्थ में सहायता पहुँचाना चाहते हैं तो हमारी मदद उनको इस कार्य के लिये एक शानदार अवसर देती है। अपनी सहायता पहुँचाने की घोषणाके साथ यह साफ कह देना चाहिए कि उनकी लड़ाई के विरोधमें हमारी कोई कमी न होगी। भारत में उनके खिलाफ़ हमारी जंग भी चलती रहेगी। हम जो आदमी भर्ती करें और जो साधन जुटावें यह आवश्यक है कि वह सीधे रूसी मोर्चे पर पहुंचाए जायँ। ताकि वह रूसके अनुशासन और इस्तेमाल में आ सकें। यदि बृटिशसत्ता इस मददको अस्वीकार करेगी तो उसके साम्राज्यवादी स्वार्थ का जो इस युद्ध में निहित है पर्दा फाश हो जावेगा। और रूसके प्रति इनकी दयानतदारी का पता चल जावेगा। इससे इंगलेण्ड, अमरीका और अन्य देशों के मजदूरों को सहायता मिलेगी। जिससे वह अंग्रेजोंके प्रति अपने रवैये को ठीक कर सकें और उसपर दबाव दें कि इंगलैंड अपनी युद्धनीति बृटेन की जनता के हित के लिये, और उन देशों के हित के लिये जो नाजीवाद से पीड़ित हैं, बनावे

\+ \+ \+ \+

ॐ पत्र नं० २ ॐ पुरुषोत्तमदास टीकमदास के लिये

मुन्शी जी आ गए हैं, उनका रवैया बहुत सुन्दर है। वह पंजाब के साथियों को कम्यूनिस्टों के संगठन से बाहर निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम कोई विश्वासनीय समाचार नहीं दे सकते हैं कि फल क्या होगा लेकिन कुछ उनमें से यहां पर ही कम्यूनिस्ट पार्टी छोड़

देंगे और दूसरे बाहर (मैंने इन समाचारों को पंजाब पहुंचाने के लिये मुन्शी जी से राय ली थी लेकिन उनका कहना है कि बाहर के (लोगों को यह समाचार नहीं देने चाहिएं इस लिये आप इन बातोंको अपने तक ही रखें। मुंशीजी को किताबें और आवश्यक वस्तुएं भेजदीजिए उनको लिखते भी रहिए। आप पञ्जाब के साथियोंमें अधिकसे अधिक सम्पर्क बढ़ाइये और उनमें विशेष दिलचस्पी लीजिये। गवर्नमेंट की विशेष आज्ञा से एम०एन० जोशी यहां की यथार्थ अवस्था जानने के लिए आए हुए थे। कैम्प की तरफ से एक लिखित वक्तव्य मेमोरण्डम के सम्बन्ध में गवर्नमेंट को दे दिया गया था। मैं आपको यह भी सूचित कर देना चाहता हूं कि गवर्नमेंट ने हमारे मेमोरण्डम का उत्तर दे दिया है और हमारी सब मांगें अस्वीकार करदी हैं उनके अतिरिक्त जो कि पहले स्वीकार हो चुकी हैं। यथार्थ खबर के लिये रिमाण्डरको देखिये। हम लोगों में से जिन्होंने भूख हड़ताल की थी उन्होंने भूख हड़ताल के सम्बन्ध में जोशी जी को एक अलग बयान दे दिया है कि जिसकी एक नकल आपको सूचित करने के लिये यहां पर दे रहा हूँ। इसका प्रचार होना चाहिए।

मुख्य : मैं एक पत्र सर्दार मोता सिंह का शार्दूल सिंह कवीश्वर के नाम और तीन पत्र मुन्शी जी के साथी मंगल दास, निसार और दूसरों के लिये हैं ये पत्र अपनी अपनी जगह पर दस्ती भेज दिये जांय। प्रोफेसर साहब ने सरदार शार्दूलसिंह को फार्वर्ड ब्लाक और सी०एस०पी० के सम्बन्ध के बारे में लिखा है। प्रोफेसर साहब राष्ट्रीय सिक्खों में एक बहुत बड़े नेता हैं। यह बाहर फार्वर्ड ब्लाक के भी मेम्बर रह चुके हैं। यहां पर वह हमारे हमदर्द हैं। उनका पत्र कवीश्वरको अवश्य मिलना चाहिए। मुन्शी जी का पत्र भी बहुत कीमती है। इस सम्बन्धमें मुझे एक राय देनी है कम्यूनिस्ट पार्टी फार्वर्डब्लाक और सी०एस०पी० दोनोंपर ही हमले करती है। इसपर भी सी०एस० पी० और फार्वर्डब्लाक एक साथ नहीं हैं। हम लोगोंने मिसेज रंगाको कम्यूनिस्टों से क्यों हाथ मिलाने दिया आप कवीश्वर, कर्मठ और

दूसरों से क्यों नहीं सम्पर्क पैदा करते जो कि हमारे प्रति अच्छा रुख रखते हैं। उनको आपस में हाथ मिलाने के लिये समझाइये। बिहार का गोल माल सारे देश में नहीं पहुँचना चाहिए। मेरी राय है कि तुम लाहौर जाओ। कवीश्वर और दूसरे लोगों से मिलो जो सहायक हो सकते हैं। सुभाष बाबू और मेरी उस बात चीत से जब कि मैं बाहर था फायदा उठाना चाहिए। अपने काम के लिए अनुशीलन और आर० एस० पी० से भी इस सम्बन्ध में सहायता लेनी चाहिए। मैं समझता हूँ कि अगर वे कायदे से सम्पर्क में लाये गये तो बड़े सहायक सिद्ध होंगे। उनका प्रभाव फार्वर्डब्लाक पर है। बिहार किसान सभा में फूट हो जाना काफी बुरी चीज है। सारे भारत में जो फूट हुई वह मेरे लिए चिन्ताकी बात है मुझे अवश्य लिखिये ? बाहर क्या स्थिति है इसका पूरा विवरण लिखकर भेज दीजिये ? मैं समझताहूँ तुम वर्धा जा चुके हो। मैं इस बातको जानने के लिये उत्सुक हूँ कि वहाँ पर क्या बातचीत हुई। साधारण राजनीतिक वातावरण से क्या आशायें हैं युद्ध के सम्बन्ध में क्या राय है। इस युद्ध का क्या नतीजा होगा। कवीश्वर जी से कह दीजिये या खबर भिजवा दीजिये कि वह प्रोफेसर साहब को उसी प्रकार से उत्तर दें जिस प्रकार मैंने तुमको राय दी है। यह पुस्तक प्राचीन सिख धर्म की होनी चाहिए।

बहुत खास :—उत्तर देने से पहले मेरे पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़िये इन बातों को नोट करिये जिनका उत्तर देना चाहते हैं। तब रिपोर्ट तैयार करिये। मैं चाहता हूं कि आप कार्य कारिणी की एक बैठक बुलावे जो कि युद्धके ऊपर एक वक्तव्य है। इसके भीतर खास उद्देश्य है, सूबा पार्टियों को वक्तव्य से सम्बन्धित कर देना क्योंकि हम सब जगह एक पालिसी नहीं रख रहे हैं। हमारा रवैया रूसके प्रति पूर्ण सहानुभूति का होना चाहिए लेकिन उसके लिए कुछ करने में असमर्थता भी प्रगट कर देनी चाहिए। साथ ही साथ हमारा अंग्रेजों की लड़ाई का विरोध, राष्ट्रीय आन्दोलन, और हमारे वर्गों का आन्दोलन चलते रहने चाहिए। मैंने कहीं पर लिखा है कि

यह बड़ा उपयुक्त समय है जब कि हम कम्यूनिस्ट पार्टी के खिलाफ सैद्धान्तिक युद्ध छेड़ें । मेरी राय है कि दो छोटी पुस्तकें और निकाली जायँ जिनके नाम कम्यूनिस्ट पार्टी और युद्ध—और कम्यूनिस्ट इन्टर नेशनल (C. I.) हों । जिसमें कम्यूनिस्ट पार्टी की कलाबाजी और रङ्गबदलाव का खूब पर्दा-फाश होना चाहिये । कम्यूनिस्ट पार्टी की जो पुस्तिका हो वह कम्यूनिस्ट पार्टी की युद्ध नीति तक सम्बन्ध रखने वाली ही न हो बल्कि उनका साधारण राजनीतिक व्यवहार हिन्दुस्तान के राजनीतिक क्षेत्रमें भी दिखाया गया हो । दोनों प्रभावशाली तरीकों पर लिखी हुई हो इस काम के लिए सारे पुराने कागजात सी० पी० आई० और सी० आई० के एकत्र कर लिए जायँ । मैं समझता हूं कि कम्यूनिस्टों का एक विशेष अङ्क निकला हुआ था जो कि सन् १६४० के चौथे संस्करणमें था जिसमें सी० आई० की युद्ध सम्बन्धी नीति को लिखा है । यह एक विशेष-अंतर्राष्ट्रीय संस्करण था । इससे कुछ लाभ उठाया जा सकता है । मालटोव और स्टालिन के वक्तव्य भी लाभ-दायक हो सकते हैं । मैं यह भी जानने के लिये उत्सुक हूँ कि आज-कल सी० पी० आई० की पालिसी क्या है ।

यह लोग इस बात की यहाँ पर चर्चा कर रहे हैं कि हमें राष्ट्रीय युद्ध में तेजी लानी चाहिये यद्यपि उसी समय इसमें भी विश्वास करते हैं कि अब युद्ध का स्वरूप फासिस्ट विरोधी हो गया है । आपके वक्तव्य से जान पड़ता है कि ग्रेट बृटेन की कम्यूनिस्ट पार्टी ने अपनी नीति को बदल दिया है और उसके साथ साथ हिन्दुस्तान की कम्यू-निस्ट पार्टी ने भी । अगर उनकी नयी युद्ध नीति को कोई नहीं पसंद करता है तो उसका भी समाचार भेजिये । यहां हमारे काम के लिये वह सहायक होगा कानपुर की हड़ताल के बारे में क्या है ? क्या हम लोगों की तरफ से था ? उसका नतीजा क्या हुआ ? क्या हमारे फायदे में हुआ था ? इसलिये हमारे पास ऐसे सब सामान पहुँचाइये जो पार्टी के काम में हमको मदद दें गैर कानूनी चीजें उस प्रकार से भेजिये जिस प्रकार से हमने राय दी है एक संस्करण 'बाम पक्ष का धोखा' का भेज दीजिये ।